सच्चे गुरु की

तलाश और प्राप्ति |

सच्चे गुरु की तलाश और प्राप्ति |

1

गुरु या रहबर की क्यों ज़रुरत है ?

प्रश्न:- मनुष्य को गुरु या रहबर की क्यों ज़रुरत है ?

उत्तर:- जिस प्रकार अन्धे को सुजाखे की ज़रुरत है, निर्धन को धनवान की ज़रुरत है, अनपढ़ को विद्वान् की ज़रुरत है, असहाय मनुष्य या जाति को एक बोधि और बलवन नेता व लीडर की ज़रुरत है, ठीक उसी प्रकार किसी सच्ची आत्मिक ज़रुरत को पूरा करने के लिए किसी सचमुच के सच्चे आध्यात्मिक-गुरु की ज़रुरत है |

प्रश्न:- क्या आप इक्कीसवीं सदी में भी गुरु की ज़रुरत का प्रचार करते हैं ?

उत्तर:- जी हां | इक्कीसवीं सदी छोड़ कर किसी अन्तिम सदी में भी, (यदि कोई सदी हो) गुरु की सदा ज़रुरत रहेगी |

प्रश्न:- क्या गुरुडम ने पहले ही भारत वर्ष का बेड़ा ग़र्क नहीं किया ?

उत्तर:- जी नहीं | 'सच्चा आध्यात्मिक-गुरु' प्रत्येक मनुष्य के लिए परमावश्यक है | बाकी इतना सच है, कि झूठे गुरुओं के पीछे जाने में मनुष्य उलटे मार्ग पर पड़ जाते हैं, और बहुत धक्के खाते और हानि उठाते हैं | परन्तु इस से सच्चे गुरु की आवश्यकता बुरी तथा ग़लत प्रमाणित नहीं होती | झूठा सिक्का मनुष्य को बेशक धोखा देता है, परन्तु यह कहना, कि चूंकि दुनियां में झूठे सिक्के चलते हैं, इसलिए सच्चे सिक्के की ज़रुरत नहीं, बड़ा भारी भ्रम है | इसी प्रकार किसी होटल में हो सकता है कि रोटी अच्छी न मिले, और उस रोटी के खाने से पेट में बदहज़मी हो जाए, परन्तु इस से यह प्रमाणित नहीं होता कि मनुष्य को रोटी की ही ज़रुरत नहीं, या किसी अच्छे होटल की ज़रुरत नहीं रहेगी | प्रकृति (Nature) ने मनुष्य के हृदय में कई ज़रूरतों का बीज डाल दिया है | यदि मनुष्य की वह ज़रूरतें पूरी न हों, तो मनुष्य का अस्तित्व ही स्थिर न रहेगा | आंखें प्रत्येक मनुष्य के लिए बहुत बड़ा उपहार हैं, परन्तु यह आंखें भी कई बार धोखा दे देती हैं | मार्ग में जाते जाते मनुष्य दूर से किसी सूखे हुए वृक्ष के तने को देख कर यह समझ लेता है, कि कोई चोर खड़ा है | और डर के मारे पसीना पसीना हो जाता है, और कई बार वहां से भाग निकलता है | अब मनुष्य की ऐसी हालत किसने बना दी ? क्या यह सत्य नहीं, कि उसकी अपनी ही आँखों ने ? इस प्रकार एक एक आंखें रखने वाला जन कई बार अपनी आँखों के कारण कई प्रकार के भ्रमों में पड़ जाता है | रस्सी को सांप समझ लेता है, और भयभीत होकर बेहोश हो जाता है | कई बार डर के मारे मौत का शिकार भी हो जाता है | अब उसकी यह बुरी हालत किस कारण से हुई ? क्या उसकी अपनी आंखें ही उसके भ्रम की जिम्मेवार नहीं ? इस भ्रान्ति-प्राप्त जन को किसने धोखा दिया ? क्या उसकी अपनी आँखों ने नहीं दिया ? एक बार की बात है कि एक गली में एक ऐसा घर था, कि जिस में कोई जन रहना नहीं चाहता था, और यह कहा जाता है, कि उस मे भूत-प्रेत रहते हैं | एक बार कई नौजवान लड़के इस घर के सामने खड़े हुए यह बातें कर रहे थे, उन मे से एक ने कहा, कि यदि कोई नौजवान रात के वक़्त इस घर के अन्दर जाकर ज़मीन में कील ठोक कर आ जावे, तो मैं उसको माई का लाल कहूंगा, और इतना (अर्थात बहुत सारा) इनाम दूंगा | एक नौजवान ऐसा करने के लिए तैयार हो गया | और नियत समय पर वह एक मोटी सी कील और हथौड़ा लेकर उस घर में प्रवेश कर गया | उसने कील ज़मीन में ठोक भी दी, लेकिन कुछ समय के बाद उसकी चीखें निकलनी शुरू हो गईं | लड़कों ने समझा कि भूतों ने उस नौजवान को पकड़ लिया है | वह वहां से डर के मारे भाग गए | कुछ ने जाकर अपने माता पिता से कहा कि अमुक नौजवान लड़का भूतों के मकान में चला गया है, और वहां से उसकी चीखें निकलती सुनी गई हैं | कई समझदार सयाने जन जत्था बना कर और लालटेन लेकर उस घर के अन्दर गए | वहां उस नौजवान को मरा हुआ पाया | उसके मुर्दा चेहरे पर भय के आसार उज्जवल रूप में नज़र् आ रहे थे | जब उसको उठाया गया तो क्या देखा, कि उसकी धोती का एक टुकड़ा कील के अन्दर आया हुआ था | अनुमान यह है कि जब उसने ज़मीन में कील गाड़ी, तब उसकी धोती कील के नीचे आ गई | और वह ज्योंहि उठा, त्योंहि उसने अपने आपको भूत के द्वारा पकड़ा हुआ अनुभव किया | असल कारण को न जानकर वह इस भ्रम में पड़ गया कि किसी भूत ने उसको पकड़ लिया है, और वह चीखें मार कर बेहोश हो गया और वहीं मर गया | अब इतना भारी धोखा उसको किसने दिया ? उस घर में

अँधेरे के कारण उसकी आँखों ने | उसके साथी नौजवानों को किस ने धोखा दिया ? उनके कानों ने | अब क्या हम इससे यह परिणाम निकालें, कि आँखों की कोई ज़रुरत नहीं, विवेक तथा संवेदनाओं की कोई ज़रूरत नहीं, कानों की कोई ज़रूरत नहीं, दिमाग की कोई ज़रूरत नहीं | जो इस प्रकार के परिणाम निकालेगा, क्या वह मनुष्य बुद्धिमान माना जा सकता है ? कदापि नहीं | दुनिया में कोई मनुष्य ऐसा नहीं कि जिसको उसकी आँखों ने कभी धोखा न दिया हो, जिसके कानों ने उसे कभी धोखा न दिया हो, जिसको उसके अपने कई बोधों ने कभी धोखा न दिया हो, परन्तु यह भी सत्य है कि यदि आंखें धोखा देती हैं, तो आंखें ही उन धोखों को दूर भी करती हैं | अगर कान धोखा देते हैं तो कान ही धोखा दूर करते हैं, अगर दिमाग धोखा देता है, तो दिमाग ही धोखा दूर करता है | इसी प्रकार **अगर झूठे गुरु धोखा देते हैं, तो कोई सच्चा गुरु ही धोखा दूर करता है** |

प्रश्न :- मैं इतना तो समझ गया हूँ, कि किसी सच्चे गुरु की कोई आवश्यकता ही न समझना महा मूर्खता की निशानी है | यह मनुष्य के लिए एक बहुत बड़ा धोखा है, कि किसी सच्चे अध्यात्मिक गुरु की ज़रूरत नहीं | भला मनुष्य की यह अवस्था क्यों है कि उस को हर सूरत में सच्चा गुरु परमावश्यक है ?

उत्तर:- यह मनुष्य की जन्म-जात आवश्यकता है, मनुष्य 'नन्हें बच्चे' के रूप में उत्पन्न होता है, और बहुत लाचारी की अवस्था में भी | उसका बच्चा होना ही यह बताता है कि वह कितनी ही आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर करता है | यदि दुनिया में माताएं न होतीं, तो कोई बच्चे नज़र न आते | अगर मूर्ख बच्चा घमण्ड में आकर या किसी और बीमारी के कारण माता-पिता से सहायता लेना छोड़ दे, तो विनष्ट हो जाएगा | वह अपनी माता से सहायता लेकर पलता है, माता से सहायता लेकर उठना बैठना सीखता है, भागना दौड़ना सीखता है, माता से सहायता लेकर ही शब्द उच्चारण करना सीखता है | माता से सहायता लेकर ही चीज़ें पहचानता है, और उन चीज़ों की ज़रूरत अनुभव करता है, माता-पिता की कृपा से ही वह शिक्षा पाना शुरू करता है, और वर्षों तक माता-पिता की सहायता पाकर ही अपना जीवन व्यतीत करता है | इसीलिए हिन्दुओं में प्रत्येक बच्चे के लिए यह कहा गया है, कि उसके प्रथम गुरु उसके माता पिता हैं | माता-पिता उसकी एक बहुत बड़ी आवश्यकता को पूरा करते हैं | उसको अबोधता की हालत से बोध की हालत में लाते हैं, और वर्षों तक उसकी पालना करके उसका ज्ञान की दुनिया में प्रवेश कराते हैं | इन्हीं अर्थों में माता-पिता बच्चे के प्रथम गुरु कहे गए हैं | स्वयं भी उसको ज्ञान देते हैं, और फिर औरों से भी ज्ञान दिलाते हैं | उसके शरीर और आत्मा दोनों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं, उसके बाद बच्चा अपनी अज्ञानता से निकलने के लिए ज्ञानी पुरुषों पर निर्भर करता है | यह ज्ञानी पुरुष 'शिक्षक-जन' कहलाते हैं, और यह गुरु-जन भी कहलाते हैं, ऐसे गुरुओं से जुड़ कर हज़ारों और लाखों बच्चे विद्वान् हो रहे हैं | जब मनुष्य अज्ञानी उत्पन्न होता है, तब इस अज्ञानता के अँधेरे से निकलने के लिए वह ज्ञानी-जनों पर आश्रित है | वही ज्ञानी-जन उसके गुरु कहलाते हैं, क्योंकि वह उसकी एक बहुत बड़ी ज़रूरत को पूरा करते हैं | हो सकता है, कि किसी बच्चे की मां गूंगी हो, बहरी हो, और इसलिए ऐसी माता अपने बच्चे की वह सेवा न कर सके कि जिसकी बच्चे को बहुत ज़रुरत है | अर्थात वह बच्चे को बोलना न सिखा सके, और इसलिए उसे अबोधता से निकाल कर बोध की दुनिया में लाने में असमर्थ हो | परन्तु इससे यह कहां प्रमाणित होता है कि क्योंकि एक माता ऐसी है, इसलिए माता की ज़रूरत नहीं | हो सकता है कि कोई शिक्षक-जन शिक्षा देने की अच्छी योग्यता न रखता हो, अपने शिष्यों का पूर्ण मार्ग-दर्शन न कर सकता हो | लेकिन इससे यह कहां सिद्ध होता है, कि शिक्षक-जनों की ज़रूरत ही नहीं ? अर्थात एक एक इंसानी बच्चे के लिए अबोधता से निकल कर बोध की दुनिया में आने के लिए माता-पिता रूपी गुरुओं की नितांत आवश्यकता है | अज्ञानता से निकल कर ज्ञान की दुनिया में आने के लिए एक एक अज्ञानी-जन को शिक्षक-जनों की बहुत आवश्यकता है | जहां झूठे गुरु संसार में भरे पड़े हैं, वहां सच्चे गुरु भी अवश्य हैं | और ऐसे सच्चे गुरुओं की कृपा से लाखों और करोड़ों इंसानी बच्चों का बहुत हित हो रहा है |

प्रश्न:- क्या यह सत्य नहीं कि प्राय माता-पिता बच्चों को बुरी आदतें भी सिखा देते हैं ? वह मांसाहारी होकर बच्चों को भी मांसाहार सिखाते हैं, ख़ुद नशों के आदि होकर बच्चों को नशा पीना सिखाते हैं, ख़ुद रिश्वतखोर होकर बच्चों को रिश्वत लेना सिखाते हैं, वह आम राय के भूखे होकर और

ख़ुद सिद्धान्त-हीनता का जीवन रखकर बच्चों को भी इसी मार्ग पर चलने वाला बना देते हैं | ख़ुद महा स्वार्थी होकर बच्चों को भी अपनत्व (स्वार्थ) के विष से भर देते हैं | इस प्रकार पाप जीवन व्यतीत करके जब माता-पिता अपने बच्चों को पाप जीवन में ढालते हैं, तो क्या वह गुरु होने के अधिकार को बुरी तरह से खो नहीं रहे होते हैं |

उत्तर:- जब कोई माता-पिता जाने या अनजाने अपने बच्चों को पाप जीवन की तरफ धक्का देते हैं, तब वह अवश्य अपने बच्चों के लिए हानिकारक बन जाते हैं | यह माता-पिता का दुर्भाग्य है | इसलिए देवसमाज में इस बात पर बहुत ज़ोर दिया जाता है कि माता-पिता बनने से पहले प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में उच्च परिवर्तन लाभ करे | भविष्य में बनने वाले प्रत्येक माता-पिता का यह कर्तव्य होता है कि वह **पाप-जीवन** से बाहर निकलें | वह स्वार्थपरता के महा भयानक रूप से बाहर निकलें, और परोपकारी बनने की कोशिश करें | परन्तु यदि कोई माता-पिता इन कमज़ोरियों में फंसे हुए हों, तो भी उनकी जो और सेवाएँ हैं, उनको हम भूल नहीं सकते | माता-पिता के कारण हमने जन्म पाया, और हम अबोधता की दुनिया से निकल कर बोध की दुनिया में आये, गूंगेपन से निकल कर बोलने की दुनिया में आये, लूले-लंगड़ेपन की हालत से निकल कर दौड़ने-भागने के योग्य बने | इसलिए संसार में माता-पिता हमारे प्रथम गुरु हैं | हमारा कर्तव्य है कि हम उनके अथाह उपकारों को सदा स्मरण रक्खें, और पाए हुए उपकारों को कभी न भूलें | बेशक वह हमारी **आत्मिक-आवश्यकता** पूरी नहीं कर सकते, कि जो आवश्यकता हमारा **सच्चा आध्यात्मिक-गुरु या सद्गुरु** ही पूरी कर सकता है | किन्तु फिर भी उन्होंने जितनी आवश्यकता पूरी कर दी, उतना ही हम पर उपकार किया है |

प्रश्न:- मैं इतना तो मानता हूँ कि कोई जन माता-पिता के उपकारों का ऋण-परिशोध नहीं कर सकता, वह फिर भी हमें प्यार करते हैं, हमारे शारीरिक-जीवन के लिए बहुत बड़े सहायक होते हैं, परन्तु स्कूलों के अध्यापक या कालेज के प्रोफ़ेसर न तो हमें प्यार करते हैं, और न हमें पाप-जीवन से बाहर निकालते हैं | वह पैसे लेकर काम करते हैं | बिना पैसे के बात नहीं करते | पैसे कमाने के लिए नाना प्रकार की चालें चलते हैं | क्या ऐसे जन गुरु के नाम को बट्टा नहीं लगाते ? ऐसे जन हमारे गुरु कैसे हो सकते हैं ?

उत्तर:- आप ठीक कह रहे हैं, कि कई बार स्कूलों के अध्यापक और कालेज के प्रोफेसरों की हालत दुखमय होती है | वह कई बातों को लेकर महा स्वार्थी होते हैं | कई सूरतों में वह इस कदर अधोगति को प्राप्त हुए होते हैं कि नियत समय को छोड़ कर किसी विद्यार्थी को किसी प्रकार की सहायता नहीं देते | उनको जितने पैसे मिलते हैं, उतना काम भी नहीं करते | अपने नियत समय के काम से भी जी चुराते हैं | मांसाहारी होकर जाने या अनजाने मांसाहार का प्रचार करते हैं | तम्बाकू पीने की महिमा गाते रहते हैं | कई सूरतों में अपने विद्यार्थी-जनों से लेकर शराब पीते हैं, ख़ुद काम-रुपी बातों में दिलचस्पी लेते हैं, और अपने शिक्षार्थी-जनों को भी इस गंदगी की दलदल में धकेल देते हैं | इसी प्रकार कई सूरतों में अपने विद्यार्थियों का चरित्र भी बिगाड़ देते हैं | ऐसे जनों से यह आशा करना कि वह अपने शिष्यों को उनके माता-पिता का सा प्यार देंगे, एक कीकर के वृक्ष से सेबों की आशा करना है | फिर भी यह सत्य है कि जहां तक ज्ञान का सम्बन्ध है, उनसे हमारा भला हो जाता है | वह विद्वान हैं, वह ज्ञानी पुरुष हैं, वह पैसों के कारण भी हमारी अज्ञानता को मिटाते हैं, हमें ज्ञानी और विद्वान् बनाते हैं, हमें विद्वानों की संगत में बैठने के योग्य बनाते हैं, ज्ञान का जो विशाल समुन्दर विश्व में बह रहा है, जो ज्ञान लाइब्रेरियों की पुस्तकों में भरा पड़ा है, उसके साथ हमारा सम्बन्ध जोड़ देते हैं | अर्थात पिछले ज़माने के लेखक-जन और इस ज़माने के लेखक-जन जो ज्ञान की धारा बहा देते हैं, उसके साथ हमारा सम्बन्ध जोड़ देते हैं | हम उनके इस ऋण को न भूलें | **वह हमारे विद्या अर्थात ज्ञान-गुरु हैं, धर्म-गुरु नहीं** | वह फिर भी हमारे गुरु हैं क्योंकि उन्होंने मानसिक दृष्टि से हमारी बहुत बड़ी सेवा और सहायता की है | क्या यह सत्य नहीं, कि उन्होंने अविद्या के ग़ार से निकाल कर हमें ज्ञान के संसार में प्रवेश करवाया है, उन्होंने हमें ज्योतिर्मान किया है तथा बुद्धिमान बनाया है | और ज्ञान की नई दुनिया हमारे सामने खोल दी है, जिस दुनिया में प्रवेश करके हम मानसिक-दृष्टि से नाना पक्षों में असीम उन्नति लाभ करने के योग्य हो गए हैं |

प्रश्न:- आप यह बताएँ कि हमारी आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जो प्रचलित धर्म या मज़हब हैं, क्या वह हमारे लिए काफी नहीं ? क्या हमारा ईश्वर हमारा सच्चा रक्षक (पथ-दर्शक) और परम गुरु नहीं ? आप देखें तो सही कि ईश्वर कितना दयालु है, कि वह समय समय पर ख़ुद आकर तथा अपने प्यारों के द्वारा इल्हाम (किसी जन पर किसी परलोकवासी आत्मा का आवेश या नियंत्रण) की शक्ल में हमें रूहानियत (आध्यात्मिकता) का संदेश देता है | क्या खुदा या ईश्वर से बड़ा भी कोई गुरु हो सकता है जो आत्मिक-जगत में हमारा पथ प्रदर्शन कर सके ?

उत्तर:- खुदा या भगवान तो एक वहम या भ्रम है, वह एक गप्प या कल्पना है | ऐसे गप्प या कल्पित अस्तित्व से इल्हाम (या आवेश) की आशा करना व्यर्थ है | बाकी जो कुछ इल्हाम की शक्ल में बताया जाता है, वह वास्तव में प्रारम्भिक समय के (अर्थात आदि काल के) मनुष्यों को बताया हुआ केवल साधारण ज्ञान है, ऐसे नाक़स (दोष-पूर्ण) ज्ञान को इल्हाम इसलिए बताया जाता है ताकि इस ज्ञान को यह मोहर लग जाये कि खुदा का ज्ञान होने के कारण इल्हाम गलतियों से पाक़ (पवित्र) है | परन्तु यह इल्हाम वास्तव में मनुष्यों की आने वाली नस्लों (पीढ़ियों) का मानसिक दुनिया में ऊंची से ऊंची उड़ान करने के मार्ग में बहुत बाधाजनक एवं खतरनाक अन्ध विश्वास है | और ऐसे खतरनाक और अपवित्र अन्ध विश्वास को पवित्रता का पहराव पहनाने का प्रयास करना एक बहुत जबरदस्त पालिसी (सोची समझी चाल) है | यदि दुनिया को यह विश्वास हो जाये कि यह कहलाने वाला इल्हामी ज्ञान (खुदा या भगवान की ओर से दिया गया ताथाकथित ज्ञान) वास्तव में शुरू ज़माने के मनुष्यों का ज्ञान है, तो इस पर बुद्धि और समझ रखने वाले लोग आलोचना करेंगे और प्रश्न उठाएंगे, और उसको स्वीकार करने से पहले तर्क की कसौटी पर जांचेंगे | इसलिए तर्क की कसौटी से बाहर रखने के लिए इल्हाम की यह गप्प फैलाई गई है | आप यह स्मरण रक्खें कि इस समय भी करोड़ों जन इस खुदा या भगवान् के वहम से बाहर निकले हुए हैं | इल्हाम के धोखे से निकले हुए हैं | वह वैज्ञानिक–ज्योति और तर्क के दिलदादा (अर्थात अनुरागी) बने हुए हैं, और वह उनके द्वारा सब धार्मिक विश्वासों को जांचना सीख गए हैं, और इस ज़माने की जो रौ जारी है, वह खुदा या भगवान् के मिथ्या विश्वास को बहा ले जायेगी | वह इल्हाम की गप्प को भी बहा ले जायेगी और मिथ्या मज़ाहब को जड़ से उखाड़ कर मनुष्य मात्र को इस महा धोखे से स्वतन्त्र कर देगी | मनुष्यों को खुदा या भगवान् रुपी गुरु की आवश्यकता नहीं है, मनुष्यों को ऐसे ठगों की आवश्यकता नहीं है, कि जो अपने आप को भगवान् कहते हैं | बाकी अगर भगवान् मान भी लिया जाए, और उनकी इल्हामी पुस्तकें भी मान ली जाएँ, तो कौनसा ऐसा पाप या गुनाह है, जो इन तथाकथित इल्हामी या धार्मिक पुस्तकों ने जायज़ या ठीक करार नहीं दिया ? पशुओं का वध करना खुदा ने जायज़ किया, मांसाहार खुदा ने सिखाया, नाना पशुओं का भक्षण इल्हामी पुस्तकों में मौजूद है, गैर मज़ाहब के लोगों को लूटना, उनके बीवी- बच्चों को गुलाम बनाना, उनकी फसलों को तबाह करना उनके मंदिरों को तोड़ना फोड़ना, यहां तक कि उन की हत्या करना खुदा और खुदा की इल्हामी पुस्तकों में जायज़ (उचित) ठहराया गया है | इसलिए यदि खुदा होता, तो भी वह धार्मिक या आध्यात्मिक गुरु बनने के योग्य नहीं माना जा सकता था | मनुष्य-मात्र जितना इस वहम या भ्रम से बाहर निकलेगा, उतना ही वह इन भयानक पापों के जाल से बाहर निकल आएगा, और इस पहलू में मानवता का बहुत बड़ा उपकार ही होगा | देवसमाज इस पहलू में मनुष्यों की अति महत्त्व-पूर्ण सेवा कर रही है | मूर्ख मनुष्य देवसमाज के सम्बन्ध में उसके कृतज्ञ होने की बजाये शत्रु बने हुए हैं | मिथ्या मज़हबों की पैदा की हुई मनुष्यों की कैसी उलटी मत ! खुदा-परस्तों को चाहिए कि वह बजाये चिढ़ने के देवसमाज के साहित्य का अध्ययन करें और इस खौफनाक भ्रम-जाल से निकल कर आध्यात्मिक-भलाई के सच्चे मार्ग पर पड़ जाएँ और सच्चे गुरु की वास्तविकता को समझकर उन्हें प्राप्त करें |

०००००००

2

सच्चे गुरु की पहचान क्या है ?

प्रश्न:- सच्चे गुरु की पहचान क्या है ?

उत्तर:- पहले आप बताएं कि आपके सामने सच्चे गुरु की क्या तस्वीर आती है ?

प्रश्न-करता:-

मैं तो उसको ही सच्चा गुरु मानता हूँ कि जो करामात (चमत्कार) करके दिखाए, पानी से शराब बना कर दिखाए, किसी वृक्ष को हिलाकर कई मन मिठाइयों के टोकरे भर कर दिखाए, सफेद घोड़े पर सवार होकर सातवें आसमान तक जाए | क़बर से शरीर सहित बाहर निकल कर आसमान तक उड़ जाए | पूर्णत: मुर्दा को ज़िंदा कर दे, उंगली पर बहुत बड़ा पर्वत उठा ले, जिसके हुक्म से सूर्य भगवान् नीचे उतर आये और दरिया फटकर दो टुकड़ों में बंट जाए, जिसमे एक रास्ता जाए, कि जिस गली में से उस पूर्ण गुरु को उसका रक्षक अपनी गोद में उठाकर दरिया पार हो जाए |

उत्तर:- यह सच्चे गुरु की तारीफ़ या परिभाषा बिलकुल नहीं है | यह सारी करामातें (अर्थात चमत्कार) प्रकृती में असम्भव बातें हैं | ऐसी बातें कभी हुई नहीं – न हो सकती हैं | इन बातों को मानकर मनुष्य की बहुत बड़ी हानि करना और उसे उलटी पट्टियां पढ़ाना आरम्भ करना है | यदि ऐसी असम्भव बातें कोई कर के दिखा भी दे, तो भी ऐसी क्रियाओं से वह रूहानी या आध्यात्मिक गुरु नहीं बनता, वह एक मदारी बन जाता है, जो तरह तरह के खेल रच कर दिखाता है | ऐसे सब चमत्कार यदि किसी के लिए सम्भव भी समझे जाएँ, तो भी इन चमत्कारों के करने वाला **आत्मिक-सत्य ज्ञान देने वाला गुरु** नहीं हो सकता |

प्रश्न:- यदि वह चमत्कार असम्भव हैं, और प्रकृति (Nature) के नियमों और घटनाओं के विरुद्ध हैं, तो लाखों और करोड़ों मनुष्य उनको सत्य क्यों मानते हैं ?

उत्तर:- वह इसलिए मानते हैं क्योंकि वह अंध-विश्वासी हैं, जिस प्रकार लाखों-करोड़ों बच्चे अलिफ़-लैला तथा तोता-मैना की कहानियों को सच मानते हैं, परों वाली स्त्रियों को परियां मानते हैं, ठीक उसी प्रकार बच्चों की सी प्रकृति रखने वाले अंध-विश्वासी जन क्या कुछ नहीं मानते | वह तो हज़ारों लाखों गप्पों को सत्य मानते हैं | लाखों करोड़ों जन आवागमन या पुनर्जन्म की गप्प को सत्य मानते हैं, महात्मा बुद्ध के जिम्मे उनके पहले पांच सौ जन्मों की जो कथाएँ लगाईं हैं, उनको लाखों और करोड़ों जन सत्य मानते हैं, लाखों करोड़ों हिन्दू यह मानते हैं कि मरने के बाद 'मनुष्य-आत्मा' पशु का शरीर बना कर पशु बन जाता है, पौदा बन जाता है, आदि | थोड़े दिन हुए कि एक घटना अखबार में छपी थी कि एक कर्नल की पत्नी को कुछ धोखेबाजों ने ठग लिया | अर्थात उसका पति गुज़र गया | पति के गुज़र जाने का उसको बहुत बड़ा सदमा लगा, वह मंदिरों में जाकर पूछती रहती थी, कि कोई बतावे कि परलोक में मेरे पति का क्या हाल है ? कुछ ठग ब्राह्मणों ने कह दिया, कि तुम्हारा पति नरक में तड़प रहा है, यदि तुम अमुक अमुक दान करो तो उसकी आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी | यह कह कर उन ठग ब्राह्मणों ने उस स्त्री से अढ़ाई हज़ार रूपये ठग लिए | बड़े बड़े पढ़े लिखे जन इस भयानक गप्प को मानते हैं, कि कोई ऐसी जगह है, जिसका नाम स्वर्ग है, और कोई ऐसी जगह है, जिसका नाम नरक है |

प्रश्न:- क्या नाना मज़हबों के बानी (संस्थापक) सच्चे आध्यात्मिक गुरु नहीं हैं ?

उत्तर:- जी नहीं |

प्रश्न:- वह क्यों ?

उत्तर:- वह इसलिए कि वह सब के सब आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान से खाली थे | जिनके सामने आत्मा की वास्तविकता (सच्चाई) खुली हुई न थी, वह आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-ज्ञान दे ही क्या सकते थे, इसलिए उन्होंने सत्य ज्ञान नहीं दिया |

प्रश्न:- आत्मा का नाम तो उनकी पुस्तकों में बहुत बार आता है ?

उत्तर:- जी हां, अवश्य आता है | उनके सामने आत्मा का नाम तो अवश्य था; परन्तु उनके सामने आत्मा का सत्य-ज्ञान न था, इसलिए आत्मा के सम्बन्ध में जो भी ज्ञान उन्होंने दिया, वह सारा मिथ्या ज्ञान था | मिथ्या ज्ञान के प्रचारक होकर वह आध्यात्मिक-गुरु नहीं हो सकते थे; इसलिए वह सच्चे आध्यात्मिक-गुरु न थे |

प्रश्न:- यदि वह सच्चे आध्यात्मिक-गुरु न थे, तो क्या थे ?

उत्तर:- वह मिथ्या मतों के प्रचारक थे | उन्होंने अपने दिलो-दिमाग पर आत्मा की मानसिक-छवियाँ बना कर उस के सम्बन्ध में किस्से-कहानियां घड़ लीं, और इन कल्पित कहानियों का मनुष्यों को अनुरागी बनाया |

प्रश्न:- कल्पित कहानियों का मनुष्य किस तरह से प्रेमक (अनुरागी) बन जाता है ?

उत्तर:- जिस प्रकार बच्चे कल्पित कहानियों के प्रेमक बन जाते हैं |

प्रश्न:- विविध मतों के अनुयायी 'बच्चे' तो नहीं, वह तो समझदार जवान व प्रौढ़ हैं |

उत्तर:- वह शरीर के विचार से अवश्य जवान या प्रौढ़ हैं, परन्तु आध्यात्मिकता के विचार से वह बच्चे ही हैं | वह कल्पना के स्तर से ऊपर नहीं उठ सके, इसलिए उनका तर्क की दुनिया में जन्म ही नहीं हुआ, तब विज्ञान की दुनिया में प्रवेश करना उनके लिए कैसे सम्भव था |

प्रश्न:- क्या कभी नौजवान आदमी भी दिमाग के विचार से बच्चे हो सकते हैं ?

उत्तर:- न केवल हो सकते हैं, किन्तु हैं | आज करोड़ों अनपढ़ जन यह मान ही नहीं सकते कि सूर्य इस पृथ्वी से सौ गुणा बड़ा है, वह यह मान ही नहीं सकते कि पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द घूम रही है, वह यह मान ही नहीं सकते कि हमारा सारा सौर्य-मंडल इस विश्व (अर्थात **NATURE**) में एक रेत के कण के बराबर है, और जो आकाश में धुआं नज़र आता है, उस धुएं के टुकड़े से भी हमारे सौर्य-मण्डल जैसे लाखों सौर्य-मण्डल उत्पन्न हो सकते हैं | अब आप ही बताएं कि इतने विशाल विश्व की वास्तविकता कितने जनों के सन्मुख आ सकती है ? करोड़ों जनों में से किसी किसी जन के सामने ही आती है | अब इस विशाल विश्व में रहकर यदि लाखों और करोड़ों जन यह मान लें, जैसा कि मानते हैं कि सारा विश्व इस पृथ्वी के लिए बनाया गया है, तो यह कैसी महा मूर्खता है ! यह पृथ्वी तो इस विश्व में किसी गिनती में नहीं है | वह रेत के कण का लाखवां या करोड़वां भाग है | जिन मिथ्या मतों के बानियों (संस्थापकों) ने अपने उपास्य की ओर से यह शिक्षा दी है, कि यह असीम विश्व छै दिन में बनाया गया, क्या वह ज्ञानी माने जा सकते हैं ? कदापि नहीं | वह किसी के **पथ-प्रदर्शक** बनने के योग्य नहीं, उनकी यह शिक्षा बच्चों की कहानियों की तरह गप्प है |

प्रश्न:- मैं समझ नहीं सकता कि लाखों करोड़ों मनुष्य ऐसे अयोग्य क्यों हैं, जो तर्क को छोड़ कर कल्पना को पसन्द करते हैं, विज्ञान को छोड़कर कल्पित कहानियों पर विश्वास करते हैं ?

उत्तर:- इसमें मुझे कोई गूढ़ राज नज़र नहीं आता | सारा भेद तो योग्यता और अयोग्यता का है | करोड़ों जन ऐसी योग्यता ही नहीं रखते कि वह तर्क के अनुयायी हो सकें | आप सारे पशु-जगत को देखें, उस जगत में कई बड़े बड़े हाथी और ऊँट पाए जाते हैं, उनका शरीर कितना बड़ा है, परन्तु बुद्धि के विचार से वह कितने हीन हैं | मनुष्य का दो साल का बच्चा जिस बुद्धि का प्रकाश करता है, उस बुद्धि का प्रकाश एक हाथी नहीं कर सकता | ठीक इसी प्रकार लम्बा चौड़ा शरीर रख कर भी और साधारण बुद्धि रख कर भी साधारण मनुष्य मंतक (अर्थात मंत्रणा) और तर्क विद्या के विचार से बहुत हीन अवस्था में हैं | तर्क विद्या के विचार से विज्ञान की दुनिया से कोसो दूर पड़े हैं | उनकी मानसिक और हार्दिक अवस्था यह है कि वह कहनियाँ सुनकर ही तसल्ली पाते हैं, और मंतक से घबरा उठते हैं | यही कारण है कि भारत वर्ष में जगह जगह कथायें होती हैं, और ऐसी कथाएं प्रतिदिन हज़ारों लाखों जगह की जाती हैं | मनुष्य की उन्नति में करोड़ों जनों के लिए यह मार्ग ही नहीं खुला कि वह तर्क और ज्ञान के अनुरागी बन सकें | मनुष्य की ऐसी अधोगति की अवस्था के अनुसार मिथ्या मज़हब पैदा हो गए, और जो मनुष्य इस निम्न अवस्था में हैं, कि कल्पना में ही खुश रहें, वह इन कल्पित मतों का ख़ूब उत्साह से प्रचार करते हैं | परन्तु ज्यों ही कोई जन तर्क की ओर आकृष्ट होता है, और परीक्षा की कसौटी पर अपने विश्वासों को परखने लगता है, त्यों ही वह जन मिथ्या मज़हबों से मुंह मोड़ कर तर्क और विज्ञान की ओर अपना कदम उठाता है | ऐसी विशेष हस्तियों को अंध-विश्वासी जन काफ़िर और नास्तिक के नाम से पुकारते हैं, और उनको अपने से ग़ैर और पराया समझ कर उन पर नान प्रकार के अत्याचार और ज़ुल्म जारी रखते हैं |

प्रश्न:- यह तो आपने अजीब बात बताई, कि मिथ्या मज़हब वहां तक ही माने जाते हैं, जहां तक कल्पना का राज्य है | ज्यों ही कोई जन कल्पना से ऊपर जाकर तर्क और विज्ञान की दुनिया में प्रवेश करता है, त्यों ही वह मिथ्या मतों को त्याग देता है | आपके कथन के अनुसार जो लाखों करोड़ों मनुष्य कल्पना के दास हैं, उनको तो मिथ्या गप्पों की ज़रुरत है, इसलिए उनको ऐसे गुरुओं की ज़रुरत है, जो उनके कल्पना-प्रिय हृदयों को खुराक पहुंचाएं ?

उत्तर:- जी हां | मनुष्य को अपने भावों की तृप्ति चाहिए, अपनी ज़रूरतों की तृप्ति चाहिए | इसलिए जिस मनुष्य में जो भाव वर्तमान होंगे, उनकी तृप्ति के सामानों की ओर वह भागा जाएगा, जिस चीज़ की उसको ज़रुरत महसूस नहीं होती, उसके लाभ करने के लिए वह कोई संग्राम नहीं करेगा | अदना मनुष्य तो अदना भावों (अर्थात नीच भावों) के प्रेमी हैं | इसलिए वह ऐसे रहबरों (गुरुओं) की तलाश में है जो उनके अदना-भावों को तृप्त करें | जिसके हृदय में कोई उच्च भाव नहीं, वह ऐसे उच्च-भावों के दाता की तलाश भी नहीं करेगा | दुनिया ऐसे पीरों फ़क़ीरों के पीछे भागी जाती है, जो यह दावा करते हों कि हम अपने अनुयाइयों को धन दे सकते हैं, उनको खुशहाल बना सकते हैं, उनकी खेतियों और फसलों को हरा भरा बना सकते हैं | हम उनको मुकद्दमों में जीत दिला सकते हैं, हम उनके दुश्मनों को तबाह कर सकते हैं, हम उनके घरों को बच्चों से आबाद कर सकते हैं, आदि आदि | प्रचलित मज़हबों के उपास्य कहलाने वाली इल्हामी-पुस्तकों में भी इस प्रकार की अदना कामनाओं को पूरा करने के आश्वासन देते हैं | मनुष्य के स्वाद-सुख-अनुराग, काम-सुख अनुराग आदि नीच भावों की तृप्ति करने के लिए उन्होंने एक 'स्वर्ग' नामक स्थान की कल्पना की है | आप सोचें, कि यदि किसी कुत्ते को कहा जाये कि तुम अपने उपास्य से अपने लिए कोई प्रर्थना करो, तो कुत्ता अपने उपास्य से क्या चाहेगा ? निस्संदेह वह यही चाहेगा, कि मुझे हड्डियों के ढेर दो, भेड़िया क्या चाहेगा, कि मुझे भेड़ों के रेवड़ दो, जिनको मैं चीड़ फाड़ कर खा जाऊं | गाय क्या चाहेगी ? यही कि मुझे हरी हरी घास दो, एक एक कामी-पुरुष क्या चाहेगा, वह यही चाहेगा, कि हे मेरे उपास्य तुम मुझे सुन्दर सुन्दर स्त्रियाँ प्रदान करो, यदि इस लोक में न दे सको, तो परलोक में स्वर्ग दो | लालची मनुष्य क्या चाहेगा ? यही कि मुझे धन-सम्पत्ति दो | काश्तकार (खेतिहर) अपने उपास्य से क्या चाहेगा ? यही कि अच्छी फसल हो जाये | दुश्मनों से घिरा हुआ जन क्या चाहेगा ? यही कि मुझे दुश्मन पर जीत दो | मौज-बहार की ज़िंदगी का प्रेमक यह चाहेगा कि मौज-बहार करने के लिए उसे बहुत से सामान प्राप्त हों | अदना-भावों (नीच भावों) के रखने वाला जन ऐसा ही उपास्य चाहेगा जो उसके अदना भावों को तृप्त करे | इसलिए जैसे पुजारी – वैसे उपास्य बन गए | जैसे चेले – वैसे गुरु बन गए | अदना चेलों ने अपनी अदना प्रकृति को तृप्त करने वाले गुरु ढूंढें | इसलिए यह कहना कुछ ग़लत न होगा, कि करोड़ों मनुष्यों को सच्चे आध्यात्मिक-गुरु की ज़रुरत ही नहीं, इसलिए नीच-जीवनधारी मनुष्यों को आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-ज्ञान देने वालों की मांग ही नहीं | इसलिए कहा जाता है कि जैसा शिष्य होगा, वैसा ही उपास्य होगा | ऐसे नीच अस्तित्वों को उनकी नीच प्रकृति का सत्य-ज्ञान देने वाले और उससे छुटकारा देने वाले किसी सत्य उपास्य की ज़रुरत नहीं | यही कारण है कि **सत्य-मोक्ष-दाता** की मांग दुनिया में नहीं है | इसलिए 'सत्य मोक्ष दाता का हितकारी रूप' नीच अस्तित्वों के सामने स्पष्ट नहीं है | जिस प्रकार एक एक 'रोग का बोधी बीमार' डाक्टर को देखकर बलिहार जाता है, उसी प्रकार 'आत्मिक-रोगों से त्रस्त एक एक रोगी जन' आत्मिक रोगों से मुक्ति दाता के शुभ संवाद को सुनकर भी उत्साह से नहीं भरता | जिन करोड़ों अस्तित्वों के सामने उच्च जीवन की महिमा नहीं, उच्च जीवन की सुन्दरता नहीं, उच्च जीवन का मनोहर रूप नहीं, उच्च जीवन की उच्चत्तम बरक़तें नहीं, वह भला उच्च-जीवन-दाता की क्यों क़दर करेंगे, उनका सन्देश सुनकर क्यों उत्साह से भरेंगे ? उनके परम हितकारी रूप को क्यों देखेंगे ? और क्यों उन पर बलिहार जायेंगे ? प्रकृति (नेचर) में आखिरकार अटल नियम काम करते हैं, क्योंकि नेचर नियम-बद्ध है, उसमे कोई बात अटकल पच्चू नहीं चलती | मनुष्य के हृदय को जिस चीज़ की ज़रुरत होगी, वह उस की तलाश करेगा, जिस चीज़ की ज़रुरत नहीं, उसकी तलाश नहीं करेगा | करोड़ों मनुष्य नीच-अनुरागों और नीच घृणाओं की तृप्ति के सामानों की ज़रुरत अनुभव करते हैं, इसलिए उनकी तलाश में लगे हुए हैं | इन भावों की तृप्ति के सामानों को देने वाला सच्चा या झूठा अस्तित्व उनको पूजनीय नज़र आयेगा | अब आप समझ गए होंगे, कि सच्चे आध्यात्मिक-गुरु की दुनिया में मांग क्यों नहीं है |

प्रश्न:- मेरे सामने यह सत्य साफ़ हो गया है कि जिस प्रकार पशुओं को स्कूलों और कालेजों की कोई ज़रुरत नहीं, लाइब्रेरियों की कोई जरूरत नहीं, यहां तक कि अस्पतालों की भी कोई ज़रुरत नहीं, और वह इसलिए कि वह सब इस दुनिया से कटे हुए हैं, जिस दुनिया की बातें स्कूलों और कालेजों में सिखाई जाती हैं | वैसे ही जो मनुष्य आध्यात्मिक-दुनिया से कटे हुए हैं, वह "सच्चे आध्यात्मिक-गुरु" की तलाश भी नहीं करते |

उत्तर:- पशु इसलिए शिक्षक-जनों की तलाश नहीं करते, क्योंकि उनकी उन्हें ज़रुरत अनुभव ही नहीं होती | वह घास और भूसा देने वालों की तलाश इसलिए करते हैं क्योंकि उनकी उनको ज़रुरत अनुभव होती है | ठीक इसी प्रकार नीच प्रकृति रखने वाले जन जो उच्च-जीवन से बिलकुल अबोधि हैं, वह सच्चे आध्यात्मिक-गुरु (अर्थात आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक) की कोई ज़रुरत अनुभव नहीं करते | ऐसे करोड़ों जनों के निकट सच्चे सतगुरु की मांग ही नहीं, और न उनके हृदय में सच्चे गुरु की तलाश है | यदि सच्चा आध्यात्मिक-गुरु उनके आगे से गुज़र भी जाए, तो भी वह उस दृष्टि से उसकी तरफ देखेंगे, जिस दृष्टि से एक पशु एक ज्ञानी-जन की तरफ देखता है | हमें इसलिए इस तत्व को बार बार स्मरण रखना चाहिए कि निज की अयोग्यता के कारण भी लाखों और करोड़ों लोग 'सच्चे गुरु' के दरबार से वंचित रहते हैं |

प्रश्न:- क्या ऐसे मनुष्य भी हैं कि जिनके भीतर 'सच्चे आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक गुरु' की मांग हो ?

उत्तर:- जी हां | ऐसे जन समय समय में उत्पन्न हुए हैं जिन्होंने व्यकुलता से भरकर ऐसे गुरु के आने की प्रार्थनाएँ की हैं, और हृदय-गत कामनाएं की हैं कि हमें कोई ऐसा "सच्चा आध्यात्मिक-गुरु" मिले, जो हमें हमारे आत्मिक-अन्धकार से निकाले, जो अपनी आध्यात्मिक-ज्योति और शक्ति देकर हमारे जीवनों की काया पलट दे, और संसार में जो नाना प्रकार के पापों और ज़ुल्मों की आग भड़क रही है, उसको बुझा दे, और मनुष्यों के हृदय में उच्च-भावों का ऐसा सुन्दर और मधुमय चमन लगावे, जिस चमन में प्रत्येक पौधा फूल और फल दोनों देता हो, जिसकी महक से इस पृथ्वी का वायु-मंडल खुशबूदार हो जाए, और जिसके रंग-रूप से इस पृथ्वी का रूप महा सुन्दर और महा पवित्र हो जाए, और सच्चे अर्थों में इस पृथ्वी पर धर्म का राज्य स्थापित हो जाए |

प्रश्न:- आप इस बारे में कुछ बताएँगे कि दुनिया में किस किस प्रकार की मांग होती है |

उत्तर:- जी हां | मैं इसके विषय में फिर किसी अवसर पर अवश्य बताऊंगा |

०००००

3

सत्य मोक्ष-दाता की ज़रुरत |

प्रश्न:- आप ने बताया है कि इस विश्व में समय समय पर कुछ योग्य जनों ने सत्य-मोक्ष दाता की ज़रुरत अनुभव की है, और इस ज़रुरत को लेखों के द्वारा प्रकट किया है | आप कृपा करके ऐसे लेखों में से कुछ उदाहरण देने का कष्ट करें ?

उत्तर:- जी हां | कलकत्ता के मशहूर एडिटर स्थूल-देह त्यागी राव बहादुर नरेंद्र नाथ सेन ने अपने रोज़ाना अखबार 'इंडियन मिरर' जो कलकत्ता से छपता था, उस मे सोलह अक्टूबर १९०१ ई० के पर्चे में यह लिखा था:-

१ आजकल का ज़माना गोया नीच हैवनी ज़िन्दगी (नीच पशु जीवन) का ज़माना है | .....और यह ज़माना लोगों की ऐसी खौफ़नाक हालत से मुक्ति के लिए एक अवतार के प्रकट होने की आकांक्षा कर रहा है |

२ हिन्दुस्तान के बंगाली विख्यात डा. रविन्द्र नाथ टेगोर ने एक स्थान पर लिखा है:-

"कौन जानता है कि एशिया के अंतिम पूर्वी-क्षितिज पर ऐसे सूर्य का प्रकाश नहीं हो चुका है, और ऐसा दिन अभी भी नहीं चढ़ चुका है (अर्थात कोई ऐसा अविर्भाव हो चुका है) ... कि जो आविर्भाव सारी दुनिया को अपनी ज्योति से ज्योतिर्मान कर देगा |"

३ मिस्टर जे. एच. मोर साहब ने अपनी पुस्तक ऐथिक्स एंड ऐजुकेशन (Ethics and Education) (आचार विज्ञान और शिक्षा) के पृष्ट 9 पर यह प्रकट किया है कि "हमें एक नए मुक्ति-दाता की जरूरत है, हां एक ऐसे मुक्ति-दाता की, जो हमें उन बेड़ियों से मुक्त करे, कि जिन मे हम बाल्य-अवस्था से ही जकड़े जाते हैं |"

४ मिस्टर फिलिप टामसन ने रिसाला पाजिटिव रिव्यू (Positivist Review) बाबत माह अगस्त १९१९ ई० में एक लेख के द्वारा यह लिखा है :-

"रौशन दिमाग मनुष्य पुराने मतों से बहुत आगे बढ़ गए हैं, ... अवलोकन और सोच विचार की शक्तियों का ठीक व्यवहार करके अब हमारे लिए उनके मिथ्या मतों पर विश्वास करना सम्भव नहीं रहा |"

५. स्थूल देह त्यागी प्रोफ़ेसर डबल्यू जेमरुस साहब ने यह लिखा है:-

"मनुष्यों को जिस चीज़ की बड़ी ज़रुरत है, वह यह है कि उनके मिथ्या विश्वासों को तोड़-फोड़ कर अच्छी तरह उनकी छानबीन की जाए और विज्ञान की उत्तरी-पश्चिमी वायु उनमे दाख़िल होकर उनकी रोगी और असभ्य अवस्था को दूर करे |"

६. डाक्टर पाल साहिब ने रिसाला पाजिटिव रिव्यू (Positivist Review) बाबत मॉस जून १९२० में यह लिखा है:-

"दुनिया को बेहतर करने का इससे बढ़कर कोई और उपाय नहीं कि ऐसा सत्य धर्म प्रगट हो कि जो विज्ञान पर स्थापित हो और जिसका उद्देश्य इस दुनिया में मनुष्य की नैतिक और सांसारिक बेहतरी करना हो |"

७. मिस्टर डबल्यू जेकल साहिब एम्. ए. ने अपनी किताब दी बाईबल अनट्रस्टवर्दी (The Bible Untrustworthy अर्थात बाइबल विश्वास के योग्य नहीं) के पृष्ट २०० पर यह लिखा है:-

"तमाम सोच विचार रखने वाले लोगों के सामने यह बात पूर्णत: साफ़ है कि हमें एक नए धर्म की ज़रुरत है |" फिर आगे चलकर उन्होंने उसके पृष्ठ २६६ पर यह लिखा है:-

"हमारी उम्मीद हिन्दुस्तान से ही पूरी होगी |" वस्तव में उनकी आशा भारतवर्ष से पूरी हुई | भारतवर्ष में ही देवात्मा का विशेष आविर्भाव हुआ है कि जिन्होंने विज्ञान पर स्थापित सत्य-धर्म का प्रकाश और प्रचार किया है, और जिन्हों ने ही अपने मुबारिक जीवन का यह उद्देश्य बताया है कि मनुष्य के नैतिक तथा आत्मिक-जीवन को उच्च से उच्च बनाना है और ऐसे परिवर्तित जनों के लिए यहां देव-राज (अर्थात सत्य और शुभ का राज्य) फैलाना है |

८. एक लेखक अखबार "वन्देमातरम" में यह लिखते हैं:-

"विज्ञान की असीम उन्नति का यह परिणाम होगा कि हमारा धार्मिक-अनुभव पुरानी प्रथाओं से अपना दामन छुड़ाकर वर्तमान काल के अनुसार नए नियमों से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा |" अब यह आशा रखना तो व्यर्थ है कि हम पुन: उन धार्मिक मिथ्या विश्वासों के विश्वासी हो जाएँ कि जिनका जादू विज्ञान ने विनष्ट कर दिया है |

प्रश्न:- आप ने बड़ी कृपा करके मुझे ऐसे बहुत से अवतरणों (उदाहरणों) का ज्ञान दिया है, इनसे ऐसी बातों का मुझे ज्ञान मिला है कि जो मेरे लिए बहुत लाभदायक हैं | अर्थात दुनिया प्रचलित मतों से तंग आई हुई है | इन मतों में जो मिथ्या संस्कारों और मिथ्या विश्वासों का राज्य फैला हुआ है, उनको रोग बताया गया है, और यह कामना की गई है कि ऐसी वैज्ञानिक सुन्दर वायु चले जो इन रोगों को दूर कर दे | और यह भी प्रगट किया गया है कि यह आशा करना कि मनुष्य दोबारा मिथ्या मतों के पीछे जायेगा, बिलकुल व्यर्थ आशा है | विज्ञान पर स्थापित धर्म की आकांक्षा की गई है, और यह व्याकुलता प्रगट की गई है कि हमें कोई ऐसा मुक्तिदाता मिले जो हमारे मिथ्या और मोह के बंधनों को तोड़ दे, हमारे नैतिक तथा आत्मिक-जीवन को बेहतर कर दे, हमें उच्च-जीवन का अभिलाषी बना दे, हमें समाज और मनुष्यों का भला चाहने वाला बना दे | मैं इस प्रकार की जाग्रति को बहुत मुबारिक समझता हूँ |

विविध जन जो इस प्रकार के भावों से भरे हुए हैं, वह अवश्य सच्चे सतगुरु के आविर्भाव की आकांक्षा करते हैं | अर्थात इस प्रकार के मनुष्य ही सच्चे शिष्य हो सकते हैं |

उत्तर:- जी हां | जब मनुष्य नीच-जीवन से तंग आ जायेगा तथा आत्मिक-अन्धकार से घबाराएगा, तब वह केवल भले मनुष्यों की आवश्यकता को ही अनुभव नहीं करेगा, किन्तु वह ऐसे वास्तिवक आध्यात्मिक-गुरु की तलाश भी करेगा, कि जो उसकी इस व्यकुलता को पूरा करे | देवसमाज में कई आये हुए जन इस प्रकार की आकांक्षा का प्रकाश करते हैं | एक एक जन ने एक एक सभा में यह प्रगट किया है कि मेरा हृदय बेचैन था, एक ओर दुनिया के सुख सुविधा के सामानों में मुझे तृप्ति मिलनी बन्द हो गई, और दूसरी ओर मैं जिस मत का अनुयायी था, उससे मुझे कोई तसल्ली नहीं मिलती थी | मैंने बड़े पापड़ बेले, भिन्न भिन्न मतों में गया, परन्तु मेरे हृदय को सच्ची तसल्ली कहीं न मिली | आखिरकार मैं एक बार देवसमाज के सतसंग में गया, वहां यह सुनकर कि देवसमाजी भगवान् को नहीं मानते, मेरे हृदय में उनके लिए अश्रद्धा तथा घृणा उत्पन्न हो गई थी, लेकिन ज्योही मैं देवसमाज के उच्च मंडल में जाकर बैठा, मेरे भीतर अजीब जादू सा हो गया | ऐसा मालूम हुआ कि मैं रुलता फिरता अन्त में सही ठिकाने पर आ गया | मुझ आध्यात्मिक-भटकाव में भटकते हुए को आखिरकार सच्चा ठिकाना मिल गया | सच्चे आध्यात्मिक-गुरु की तलाश में जो मेरा हृदय बेचैन हो रहा था, उसे सच्चा सतगुरु प्राप्त हो गया | फिर क्या था, मेरे मन और मस्तिष्क दोनों को विशेष अध्यात्मिक-उर्जा मिलने लगी | मैंने अपने जीवन का **सच्चा लक्ष्य** खुलता हुआ देखा और यह भी देखा कि यह **जीवन-लक्ष्य** कहां पूरा हो सकता है | इन दोनों बातों ने मेरे हृदय को जिस प्रकार की सच्ची शान्ति से भर दिया, वह एक ऐसा जन ही अनुभव कर सकता है, जो वर्षों से भूला भटका फिरता हो, जो घर से बेघर होकर कोई ठीकाना न रखता हो, जो कोई सिर ढकने की जगह न पाता हो | ऐसी अवस्था में उसको जीवन दायक घर और सामान मिल गए | मैंने यह भाव-प्रकाश उन थोड़े से जनों के दिए हैं कि जिनका हृदय सच्चे सतगुरु की तलाश में भटकता फिरता था | इसलिए प्रकृति (Nature) में जो लाखों योग्य जन उत्पन्न हुए हैं, उनमे से जिन सौभाग्यवान जनों को देवात्मा की देवज्योति मिलेगी, वह आत्मा तथा सत्य-धर्म का अद्वितीय ज्ञान पने के लिए देवात्मा का ही दरवाज़ा खटखटाएंगे, तथा भगवान् देवात्मा की देवज्योति पाने पर वह मिथ्या मतों के भयानक रूप को देख सकेंगे | मिथ्या-मतों के प्रवर्तकों की वास्तविक छवि उनके सामने आ जायेगी | मिथ्या-मतों के उपास्यों को वह असल रूप में देख लेंगे और कभी भी उनकी ओर मुंह नहीं करेंगे | वह सदा के लिए मिथ्या और पाप को बढ़ाने वाले मतों से अपना पीछा छुड़ा लेंगे |

प्रश्न:- आपके भावों को जानकर मुझे यह मालूम होता है कि मिथ्या-मतों में आप कोई अच्छी चीज़ नहीं देखते ?

उत्तर:- जब कोई मनुष्य तपेदिक के रोग में फंसा हुआ हो, तब क्या हमें इस बात से तसल्ली मिलेगी कि उसका नाक अच्छा है, या उसके कान अच्छे हैं, या उसके बाल सुंदर हैं, या उसका यह या वह अंग अच्छा है | हम तो इस फिकर (चिन्ता) में पड़ जायेंगे कि उस जन पर ऐसी भयानक बीमारी का हमला हुआ है कि जिससे उसका सारा अस्तित्व ही क्षय हो जाएगा | हमें इस बात से कोई तसल्ली नहीं मिलती कि अमुक मत मांसाहार छुड़वाता है, या कोई दान-पुन्य करना सिखाता है, या व्यभिचार को बुरा समझता है | हमें देखना तो यह है कि किस मार्ग पर एक एक मत मनुष्य को डाल देता है ? जब कोई डाक्टर **सत्य-प्रकृति** (True or Real Nature) को छोड़ कर इस भ्रम में पड़ जाये कि परमात्मा नामक अस्तित्व की पूजा से शारीरिक रोग दूर हो जायेंगे, तो वह डाकटर कैसा ख़तरनाक़ ! इसी प्रकार मिथ्या मतों ने विश्व में जो अन्धकार फैलाया हुआ है, वह यह है कि वह **सत्य-नेचर** (अर्थात **सत्य-प्रकृति)** को छोड़ कर मनुष्यों का सम्बन्ध एक कल्पित अस्तित्व के साथ जोड़ देते हैं, जिसका नाम ईश्वर या प्रमात्मा है | यह मिथ्या मतों की बहुत हानिकारक शिक्षा है | यह मत शुरू से ही मनुष्यों को जानबूझ कर अथवा अनजाने में गुमराह करते हैं, उनकी क्रिया इस प्रकार की है, जैसे कि उस जन की हो सकती है, जो सचमुच की खुराक से अपना सम्बन्ध तोड़ कर इस भ्रम में पड़ जाए, कि ईश्वर की पूजा से ही मेरा पेट भर जाएगा | जो मत **सत्य-प्रकृति** (True or Real Nature) से मनुष्य का सम्बन्ध तोड़ देते हैं, वह इस प्रकार की ही गलती करते हैं, अर्थात वह आत्मा की सच्ची खुराक से 'मनुष्य-आत्माओं' का सम्बन्ध तोड़

कर उनको एक खौफनाक भ्रम में डाल देते हैं | मनुष्य का जीवन और उसकी मृत्यु नेचर के सम्बन्धों में ही निहित है | उसके आत्मा की उन्नति और अवनति भी नेचर के भीतर (अर्थात नेचर के सम्बन्धों में) ही है | वह प्रकृति-मूलक सम्बन्धों में ही विकास पाता है, और प्रकृति-मूलक सम्बन्धों में ही विनष्ट होता है | यदि उसको नेक बनना है, तो वह मनुष्यों तथा अन्य अस्तित्वों की सेवा करे | वह सचमुच के अस्तित्वों की सेवा करने से ही बेहतर बनेगा | यदि वह मनुष्यों को तो घृणा तथा एक कल्पित ईश्वर को प्रेम करेगा, तो वह अवश्य पतित हो जायेगा | ईश्वर के नाम से किसी को क़त्ल करना उस व्यक्ति को क़ातिल ही बनएगा | ईश्वर के नाम पर किसी ईश्वर से मुनकर-जन (अर्थात ईश्वर को न मानने वाले जन) को क़त्ल करना उस ईश्वर के पुजारी को हत्यारा ही बनाएगा, तथा यदि कोई ईश्वर है और उसके इस आचरण को ठीक समझता है, तो वह भी हत्यारा ही समझा जाएगा | हत्या से हत्यारा बनता है, चोरी से चोर बनता है | किसी को लूटने से लूटेरा बनता है | किसी को गुलाम बनाने से मनुष्य शैतान बनता है | किसी कौम के बच्चों और स्त्रियों को गुलाम बनाकर ले जाने से मनुष्य शैतान से भी अधिक बुरा और महा खौफ़नाक शैतान बन जाता है, चाहे वह अपने आपको ईश्वर या अल्ला का प्यारा ही क्यों न समझे | मूर्ख मनुष्य यह नहीं समझता कि शराब पीने से शराबी के शरीर की हानि है, ज़हर खाने से शरीर की हानि है | और कई सूरतों में उसकी मृत्यु है | पाप-कर्म करने का आत्मा पर बहुत बुरा प्रभाव होता है | इस सत्य से अंधा बनाने वाले जितने भी मज़हब हैं, वह सब त्याग कर दिए जाने योग्य हैं | इसलिए जो जो मत 'मिथ्या-उपास्यों' की पूजा सिखाते हैं, वह मनुष्य के आत्मा में तपेदिक से भी अधिक भयानक रोग (आत्मिक-रोग) उत्पन्न करते हैं | अब जो मत इस प्रकार की खौफनाक शिक्षा देते हैं, क्या वह इस योग्य हैं कि हम उनमे एक व दूसरी खूबियाँ देखने की तलाश में लग जाएँ, और यह कहना आरम्भ कर दें कि उन्होंने चोरी को बुरा कहा है, वह बदचलनी को बुरा बताते हैं, उन्हों ने इस या उस ज़ुल्म को बुरा कहा है |

प्रश्न:- तो क्या आपकी यह मुराद है कि चाहे मिथ्या-मतों ने किसी पाप को बुरा ही कहा हो, तो भी क्योंकि वह इस मूल गलती के करने वाले हैं कि मनुष्य का सम्बन्ध सत्य-प्रकृति (True or Real Nature) से तोड़ कर मिथ्या-उपास्यों के साथ जोड़ते हैं, इसलिए वह बहुत बुरी तरह से गुमराह (अर्थात पथ-भ्रष्ट) भी हैं, और इस योग्य हैं कि दुनिया से शिघ्र मिट जाएँ ?

उत्तर:- जी हां | पहले तो यदि कोई मज़हब किसी पाप को पाप कहता भी है, तो वह पापियों को उस पाप से मुक्ति नहीं देता | जिस प्रकार एक मिथ्या मत के प्रचारक ने लिखा था कि उनकी अपनी समाज में 95 प्रतिशत मनुष्य ऐसे वर्तमान हैं कि जो बदचलन हैं, बदद्यानत हैं, ठग और रिश्वतखोर हैं, आदि आदि | और यही हाल प्रत्येक दूसरे मज़हबॉन के मानने वलों का भी है | उनके मज़हब में प्रवेश पाने की कोई कोई **नैतिक शर्त** नहीं है | मनुष्य कैसा ही नीच हो, कैसा ही बदचलन हो, कैसा ही ठग हो, कैसा ही बद्दयानत हो, मिथ्या-मतों में केवल विश्वास (वह भी उथला अर्थात दिखावे का विश्वास) रखने से ही प्रवेश पा जाता है | वह स्कूल ही क्या जिस की मैट्रिक कक्षा में ऐसे जन भी प्रवेश पा सकते हों कि जो लिखना-पढ़ना भी न जानते हों ? वह कालेज ही क्या जिसमे बिना यह विचार किये कि विद्यार्थी अनपढ़ या पढ़े हुए हैं, प्रवेश कराए जाते हैं | वह मज़हब ही क्या जिसमे पापी-जन भी बिना किसी जांच पड़ताल के आसानी से प्रवेश पा सकते हों | अर्थात नैतिक-जीवन को बेहतर बनाने का किसी मज़हब ने बीड़ा नहीं उठाया | इसके विपरीत 'मनुष्य-आत्माओं' को 'आत्म-अन्धकार' में धकेलने का बीड़ा अवश्य उठाया है | अब आप ही सोचें कि एक तरफ तो यह कुल मिथ्या-मत प्रकृति से सम्बन्ध काट कर मनुष्यों को मिथ्या-उपास्यों के साथ जोड़ते हैं, और दूसरी तरफ मनुष्यों के नैतिक-जीवन को बेहतर नहीं करते, तो ऐसे मज़हब या धर्म को रखकर दुनिया का कहां भला हो सकता है ? मैंने आरम्भ में ऐसे कई जनों के उदाहरण दिए हैं कि जो दो बातें मज़हब के लिए ज़रूरी बताते हैं | एक तो **मज़हब ऐसा होना चाहिए जिसका आधार विज्ञान पर हो, दूसरा मज़हब ऐसा होना चाहिए जो मनुष्यों को उच्च-जीवन का दान देता हो** |

प्रश्न:- क्या मिथ्या-मतों के लोग यह दावा नहीं करते कि उनका मज़हब भी विज्ञान के अनुसार है ?

उत्तर:- दावा तो अवश्य करते हैं, लेकिन उनका यह दावा व्यर्थ का दावा है | **"विज्ञान"** प्रकृति के भीतर अटल नियमों की शिक्षा देता है | जबकि मिथ्या-मत करामातों की शिक्षा देते हैं | 'विज्ञान' प्रकृति के भीतर परिवर्तन के नियम की अटलता का प्रचार करता है | मिथ्या-मत आत्मा के अमर होने की शिक्षा देते हैं | अर्थात उनका दावा है कि 'मनुष्य-आत्माओं' के जीवन में कोई परिवर्तन होता ही नहीं | विज्ञान यह बताता है कि प्रत्येक अस्तित्व जड़ तथा शक्ति संपन्न है, और मिथ्या-मत यह शिक्षा देते हैं कि उनके उपास्य निराकार हैं | विज्ञान यह बताता है कि प्रकृति की अपनी शक्तियों से जो परिवर्तन होता है, वह दो रूप ग्रहण करता है, अर्थात विकास और विनाश | जहां कई अस्तित्व बेहतर बनते हैं, वहां कई अस्तित्व बदतर भी बनते हैं | विज्ञान यह सिखाता है कि प्रत्येक परिवर्तन प्रकृति के भीतर उसकी अपनी शक्तियों से होता है | मिथ्या मत यह बताते हैं कि प्रकृति के भीतर सब परिवर्तन ईश्वर या खुदा के हुक्म से होता है | विज्ञान यह बताता है कि प्रकृति में जड़ और शक्ति अपनी मात्रा में सदा उतनी की उतनी रहती हैं | इसलिए प्रकृति अनादी है, स्वयंभू है | जब विज्ञान प्रकृति को अनादी और स्वयंभू बताता है, तब मिथ्या मतों का यह कहना कि प्रकृति का कोई बनाने वाला है, कैसी मूर्खता ! सत्य धर्म यह कहता है कि प्रकृति के भीतर जो विनाश और विकास के नियम काम कर रहे हैं, उनका कार्य आत्मा पर भी होता है | आत्मा का जीवन है, आत्मा की मृत्यु भी है | जो 'मनुष्य-आत्मा' जीवन के नियम पूरा करेंगे, वह जियेंगे, जो जन जीवन के नियमों को भंग करेंगे, वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे | आत्मा अपनी बनावट में अमर नहीं है | कौन सा मत है जो इस सत्य को स्वीकार करता है, और प्रकृति के विकास और विनाश के नियमों को मानता है ? और कौन सा मज़हब यह मानता है कि मनुष्य का शरीर और आत्मा – दोनों ही प्रकृति की अपनी शक्तियों के द्वारा प्रगट (अर्थात उत्पन्न) होते हैं, न कि किसी खुदा या ईश्वर की शक्ति से ? अब इन सच्चाइयों को सन्मुख रख कर आप भी समझ सकते हैं कि देव-धर्म को छोड़ कर अन्य कोई भी मत या मज़हब विज्ञान पर स्थापित नहीं है | यह भी सत्य है कि अन्य कोई भी मज़हब मनुष्यों के नैतिक-जीवन को बेहतर करने में लगा हुआ नहीं है | यह सत्य है कि किसी अन्य मत या मज़हब ने यह लक्ष्य नहीं बनाया हुआ कि अपने अनुयाइयों के जीवन में नैतिकता तथा सत्विक-भावों को पैदा करना है | इसलिए यह दोनों आवश्यकताएं देव-धर्म को छोड़ कर अन्य कोई मत पूरी नहीं करता |

प्रश्न:- मैं समझ गया हूँ कि देव-धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई मत विज्ञान पर स्थापित नहीं है, और न ही 'नैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन' को उच्च बनाने में और न सात्विक या उच्च भावों को उत्पन्न करने में लगा हुआ है |

उत्तर:- मुझे बहुत ख़ुशी हुई है कि आपने मेरे दृष्टिकोण को अच्छी तरह समझ लिया है |

०००००००

4

सच्चा आध्यात्मिक गुरु या पथ-प्रदर्शक कौन है ?

प्रश्न:- आपने यह बात मेरे मानसिक-कोष में अंकित कर दी है कि वास्तविक आध्यात्मिक -गुरु वही हो सकता है जो विज्ञान पर स्थापित सत्य-धर्म की शिक्षा का प्रचार करता हो, और अधिकारी-आत्माओं (Deserving Souls) में नैतिक और आत्मिक उच्च-बोधों को उत्पन्न करने क्षमता रखता हो | क्या दुनिया में कोई ऐसा मत भी है कि जो विज्ञान पर स्थापित हो ?

उत्तर:- जी हां, है, और अवश्य है |

प्रश्न:- आप तो अपने मत को ही विज्ञान-मूलक मत बताएंगे | इस प्रकार की तरफदारी या पक्षपात प्रत्येक मत के अनुयायी में होती है |

उत्तर:- मैं एक-मात्र देव-धर्म को ही विज्ञान-मूलक धर्म समझता हूँ | वह इसलिए नहीं कि वह मेरा धर्म है, किन्तु इसलिए कि देव-धर्म प्रकृति की सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों पर स्थापित है, और जिसको तुम वैज्ञानिक कसौटी पर जांच सकते हो | पक्षपात के शब्द को सुन कर मैं डरना नहीं चाहता | सत्य और शुभ को लेकर किसी का पक्ष लेना मनुष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है | मैं देवधर्म का इसलिए पक्ष लेता हूँ, क्योंकि यह उन सत्यों पर स्थापित है जो विश्व-व्यापी हैं, और यह उस लक्ष्य को

पूरा कर रहा है जो प्रकृति-मूलक है | और जो मनुष्य को सर्वोच्च अवस्था तक ले जाता है | मैं फिर दोहराता हूँ कि देवधर्म ही एक ऐसा धर्म है जो विज्ञान-मूलक है |

प्रश्न:- बाकी मत विज्ञान-मूलक क्यों नहीं हैं ?

उत्तर:- वह इसलिए विज्ञान-मूलक नहीं हैं क्योंकि वह आरम्भ से ही प्रकृति की सत्यता से अन्धे हैं | वह धर्म को प्रकृति से ऊपर की वस्तु समझते हैं | केवल वही शिक्षा विज्ञान-मूलक है कि जो प्रकृति को **सत्य और सार** समझे | जो उसकी सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों पर स्थापित हो | ईश्वर-परस्त मिथ्या मत तो ईश्वर के अस्तित्व को सत्य समझ कर उसके विश्वास पर खड़े किये गए हैं | वह कुल मत 'कल्पित-ईश्वर' के मिथ्या विश्वास पर स्थापित तो हैं, परन्तु विज्ञान-मूलक नहीं हैं |

प्रश्न:- यदि कोई मत ईश्वर के विश्वास पर स्थापित किया गया है, तो क्या वह विज्ञान-मूलक धर्म से ऊंचे दर्जे का नहीं है ? क्या ईश्वर या परमात्मा प्रकृति से ऊपर नहीं ?

उत्तर:- यह आपकी बहुत बड़ी भूल है कि आप किसी कल्पित या किसी सत्य अस्तित्व को प्रकृति से ऊपर दर्जा देते हैं | प्रकृति का तो क्या कहना है, ईश्वर तो एक चींटी की तुलना में भी कोई हैसियत नहीं रखता, क्योंकि चींटी अस्तित्व रखती है, और ईश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं है | अंग्रेज़ी का एक मशहूर मुहावरा है कि 'A living dog is better than a dead lion' अर्थात एक जीवित कुत्ता किसी मरे हुए शेर से कहीं बेहतर है | जिस अस्तित्व की कोई हस्ती ही नहीं, वह सचमुच के छोटे से छोटे अस्तित्व की तुलना में भी कोई वास्तविकता नहीं रखता | बाकी आपको अधिकार है कि आप यह मान लें कि कोई ईश्वर या ख़ुदा है और वह सब अस्तित्वों से ऊंची हस्ती रखता है, और उसकी तुलना में प्रकृति (Nature) कोई हस्ती नहीं रखती, और ऐसे अस्तित्व पर स्थापित जो मत या धर्म खड़ा किया गया है, वह बहुत ऊंचा धर्म है | बेशक वह ऊंचा रहे, परन्तु आप इस से तो इनकार नहीं कर सकते कि वह विज्ञान-मूलक धर्म नहीं है, और नहीं हो सकता |

प्रश्न:- हाथी के पांव में सबके पांव हैं | क्या इससे यह मुराद है कि ईश्वर या खुदा पर स्थापित मत में विज्ञान-मूलक धर्म भी आ जाता है ?

उत्तर:- ऐसा समझना बहुत बड़ी गलती है | प्रत्येक 'विज्ञान' प्रकृति (Nature) को सत्य मानता है और वह प्रकृति की ही सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों पर स्थापित होता है | ईश्वर के विश्वास पर स्थापित धर्म प्रकृति की सत्य घटनाओं और अटल नियमों पर स्थापित नहीं है | ईश्वर पर स्थापित मत या मज़हब कभी भी और किसी सूरत में भी विज्ञान-मूलक नहीं हो सकते |

प्रश्न:- यदि वह विज्ञान-मूलक नहीं हैं तो, इससे क्या हानि है ?

उत्तर:- उनसे इतनी अधिक हानि है कि वह उसको कभी पूरा न कर सकेंगे, और ईश्वर के भ्रम पर स्थापित मत मिथ्या भी हैं और प्रकृति के अटल नियमों और सत्य घटनाओं पर सभी के विरुद्ध भी हैं | इसलिए महा हानिकारक हैं |

प्रश्न:- भला वह किस तरह ?

उत्तर:- वह इस तरह कि जो कुछ है, वह प्रकृति में ही है, और जो भी अस्तित्व प्रकृति में वर्तमान है, वह और केवल वह ही सत्य है | प्रकृति में जो नियम काम कर रहे हैं, वह और वही सत्य तथा विश्वव्यापी हैं | इसलिए वह सब के सब मत झूठे हैं कि जो प्रकृति की सत्यता से इनकार करते हैं | इसी प्रकार वह सारे का सारा तथाकथित ज्ञान भी मिथ्या है कि जो प्रकृति की सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों के विरुद्ध है | प्रकृति की सत्य घटनाएं यह हैं – कि 'प्रत्येक जीवित तथा अजीवित अस्तित्व' जड़ तथा शक्ति सम्पन्न हैं | अब जो जन यह मानते हैं कि उनका ईश्वर केवल शक्ति है और कुल 'मनुष्य-आत्मा' भी शक्ति हैं, वह सब मिथ्या को मानते हैं | इसी तरह जो जन प्रकृति के नियमों की अटलता के विरुद्ध जानबूझ कर अथवा अनजाने में शिक्षा देते हैं, वह सब के सब मिथ्या मत हैं | अब दुनिया के मत तो चमत्कारों को मानते हैं, चमत्कार यह दिखाते हैं कि किसी मत का बानी (संस्थापक) प्रकृति के अटल नियमों के विरुद्ध घटनाएं पैदा कर सकता है | इसलिए जो जो मत प्रकृति की सत्यता को नहीं मानते और प्रकृति की सत्य घटनाओं और अटल नियमों के विरुद्ध शिक्षा देते हैं, तथा चमत्कारों को मानते हैं, वह सब के सब मिथ्या मत हैं, और भयानक तौर पर पथ-भ्रष्ट तथा विपथ-गामी हैं |

प्रश्न:- आपने तो प्रचलित मतों को सत्यता के आधार पर किसी काम का नहीं रहने दिया और प्रकृति को ही बहुत बड़ी उच्च पदवी दे दी है |

उत्तर:- प्रकृति को मैंने तो उच्च पदवी नहीं दी, वह तो स्वयं उच्च हस्ती रखती है | यह तो भूली भटकी मानवता प्रकृति की सत्यता से अन्धी है; इसलिए प्रकृति को छोड़ कर कल्पना के पीछे भाग रही है और वहमों के पीछे भाग कर मनुष्यों ने इतनी हानि और दुःख उठाया है कि जिस का अनुमान नहीं हो सकता | विपथ-गामी मनुष्यों ने गलतियों से रहित एक सर्व-ज्ञानी अस्तित्व को अपनी कल्पना से घड़ लिया है, और उसको घड़ कर उसकी तरफ से नबियों या रसूलों या पैगम्बरों आदि का भेजे जाना मान लिया है | उसकी तरफ से विशेष पुस्तकों का भेजा जाना मान लिया है | और इसलिए आरम्भ काल की शिक्षा जो ऐसी इल्हामी पुस्तकों में वर्तमान है, उसको खुदा या ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान मान कर और फैला कर मनुष्य-मात्र के दिमागों और दिलों को ऐसी अँधेरी कोठरी (Small Dark Room) में बुरी तरह से बन्द कर दिया है कि अभी तक करोड़ों मनुष्य इस 21वीं सदी में भी उस प्रारम्भिक-काल के मिथ्या तथा कल्पित ज्ञान को परे नहीं फैंक सके | बड़े बड़े विद्वान् जन अब भी यह मानते हैं कि सारी प्रकृति का कोई पैदा करने वाला है, जिस के "कुन" नामक शब्द कहने से लाखों और करोड़ों अस्तित्व पैदा हो गए | कई विद्वान् जन यह भी मानते हैं कि खुदा या ईश्वर ने सूर्य तथा सितारे आदि इस पृथ्वी को ज्योतिर्मान करने के लिए जगमगाते दिए बनाए हैं | अर्थात सारी प्रकृति इस तुच्छ पृथ्वी की सेवा करने के लिए बनाई गई है | ओह ! कितनी अज्ञानता और कितनी अन्धता !!

लाखों और करोड़ों मनुष्य ऐसी पुस्तक के पुजारी बने हुए हैं कि जिसमे यह बताया गया है कि आसमान की भी कोई हस्ती है | वह एक प्रकार की छत है, जिसके खम्बे (Pillers) कोई नहीं, जो छत बिना खम्बों के खड़ी है | और जितने पहाड़ हैं, वह बड़ी बड़ी मेखें (अर्थात कीलें) हैं, जो ख़ुदा ने इस पृथ्वी को एक स्थान पर स्थिर रखने के लिए ठोक दी हैं | जो यह मानते हैं कि यह पृथ्वी एक स्थान पर खड़ी है और सूर्य उसके चारों ओर घूम रहा है | लाखों और करोड़ों मनुष्य इस मिथ्या और पाप-मूलक शिक्षा के विश्वासी बने हुए हैं कि सारा 'पशु-जगत' मनुष्य की सेवा के लिए बनाया गया है, और मनुष्य का यह जन्म-जात अधिकार है कि वह कई पशुओं को बेशक काट कर खा जाए, और वह एक विशेष अवसर पर लाखों और करोड़ों पशुओं को वध कर दे | ओह ! कैसी भयानक शिक्षा !!

लाखों और करोड़ों जन यह मानते हैं कि खुदा ने आरम्भ से ही स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में दूसरे दर्ज़े की (Inferior) उत्पन्न किया है | यह आरम्भ-काल का जंगली (पाशविक) ख्याल उन सब ज़ुल्मों के लिए जिम्मेवार है, जो स्त्री जाति पर सदियों से किये गए हैं | अब इस और अन्य नाना प्रकार की मिथ्याओं और पाप-मूलक शिक्षाओं को इतनी लम्बी आयु क्यों मिली ? इसलिए कि वह सारी की सारी शिक्षाएं एक गलतियों से रहित सर्वज्ञानी और सर्व-शक्तिमान अस्तित्व की तरफ से बताई गई हैं, और अंध-विश्वासी जन इस कल्पित अस्तित्व को सत्य मान कर उसके विरुद्ध सोचने को ही पाप समझते हैं | इस खौफनाक अंध-विश्वास ने लाखों और करोड़ों दिमागों को ताले लगा दिए हैं | मनुष्य की सोचने और समझने की शक्तियों को ग़ारत कर दिया है | इसलिए आप बेशक खुदा या ईश्वर के विश्वास पर स्थापित मज़हबों या मतों को ऊंचे समझें, दरअसल आपके उच्च समझने से वह उच्च हो नहीं जायेंगे | वह मिथ्या-मूलक ही रहेंगे, पाप-मूलक ही रहेंगे | जिस प्रकार इन मिथ्या-मतों ने करोड़ों मनुष्यों को गुमराह तथा पथ-भ्रष्ट किया है, वह आगे के लिए भी जब तक उनका अधिकार मनुष्यों के हृदयों पर रहेगा, उन की हानियाँ करते तथा उनको गुमराह ही करते रहेंगे |

प्रश्न:- मैं आपके दृष्टिकोण को समझ गया हूँ, कि किसी अस्तित्व के साथ कल्पित गुणों को लगा देना उसको गुणवान नहीं बना देता | यदि खुदा या ईश्वर को गलतियों से रहित बताया गया है, तो सत्य की ज्योति के सन्मुख यह दावा एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकेगा, क्योंकि कहलाने वाली इल्हामी-पुस्तकों में मिथ्या-शिक्षा वर्तमान है, ईश्वर को सर्वज्ञ बताने से वह सर्व-ज्ञानी नहीं बन जाता, क्योकि कहलाने वाली इल्हामी-पुस्तकों में जो शिक्षा वर्तमान है, वह सत्य-ज्ञान के पूर्णत: विरुद्ध है | ऐसी बताई हुई शिक्षा के विचार से ऐसा उपास्य मनुष्यों की तुलना में भी अल्प-ज्ञानी प्रमाणित होता है | मैंने समझने के लिए यह प्रश्न किये थे | मैं यह मानता हूँ कि प्रकृति सत्य है, प्रकृति की घटनाएँ ही वास्तविकता की वस्तु हैं, और प्रकृति के नियम पूर्णत: अटल हैं | वही ज्ञान सच्चा है कि जो प्रकृति की

सत्यता सिखाता है | वही ज्ञान सच्चा है जो प्रकृति के सत्य अस्तित्वों और घटनाओं सत्यता से अवगत करवाता हो | वह सारे का सारा ज्ञान मिथ्या है, जो प्रकृति के नियमों और उसकी सत्य घटनाओं के विरुद्ध हो | विद्वान् की पदवी उस जन को ही मिल सकती है, जिसकी शिक्षा प्रकृति की घटनाओं और अटल नियमों पर ही स्थापित हो | मिथ्या-मत विज्ञान पर स्थापित नहीं, वह तो सरासर गप्प हैं | एक-मात्र वही मत विज्ञान-मूलक हो सकता है और सत्यता की पदवी पा सकता है कि जो प्रकृति की घटनाओं और अटल नियमों पर स्थापित हो | इसलिए आपका मत ही विज्ञान-मूलक है | अब कृपा करके आप यह बताएं कि इस विज्ञान-मूलक मत का दाता कौन है ?

उत्तर:- इस विज्ञान-मूलक सत्य शिक्षा के प्रगट करने वाले भगवान् देवात्मा हैं |

प्रश्न:- उन्होंने यह शिक्षा कहां से पाई है ?

उत्तर:- उन्होंने यह सारी शिक्षा अपनी देव-शक्तियों के विकास से उत्पन्न तथा विकसित देव-ज्योति में देखी और प्रकाशित की है |

प्रश्न:- देव-ज्योति से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:- प्रकृती के लाखों और करोड़ों वर्षों के विकास-क्रम में भगवान् देवात्मा अद्वितीय देव शक्तियां (अर्थात सत्य और शुभ से पूर्णाग प्रेम तथा मिथ्या और अशुभ से पूर्णाग घृणा) लेकर इस पृथ्वी पर अवतरित हुए | उन में अपनी इन देव-शक्तियों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अद्वितीय देव-ज्योति तथा देव-तेज उत्पन्न तथा विकसित हुए | यह देव-ज्योति तथा देव-तेज विज्ञान-मूलक सत्य धर्म के खोजने के लिए अति आवश्यक थे | देवात्मा को छोड़कर यह दोनों किसी और मनुष्यात्मा में उत्पन्न नहीं हुए, क्योंकि सब 'मनुष्यात्माएं' अपनी अपनी आत्मिक-गठन में अधूरी थीं और हैं | अतः यह देव-शक्तियां तथा देव-ज्योति एवं देव-तेज उनमे उत्पन्न हो ही नहीं सकते थे | साधारण मनुष्य तो एक ओर, बड़े बड़े विद्वानों, प्रचलित मतों के संस्थापकों और सारे मतों के उपास्यों में भी यह देव-ज्योति उत्पन्न नहीं हुई |

प्रश्न:- आपका यह दावा तो बहुत बड़ा दावा है, क्या इतने बड़े बड़े महा-पुरुषों में यह देव-ज्योति उत्पन्न ही नहीं हुई ?

उत्तर:- जी नहीं | यह कहा जाता है कि एक बार एक ऊँट जो पानी का प्यासा था, ऐसी जगह पहुंचा कि जहां एक पानी का भरा हुआ मटका धरती के अन्दर गाड़ कर मुसाफ़िरों के लिए रक्खा गया था, उसके ऊपर एक ढक्कन था | इस ढक्कन के ऊपर एक मट्टी का प्याला भी रक्खा हुआ था | यह ऊँट उस मटके और प्याले को देखकर भी प्यास बुझाने के लिए अपनी कोई सहायता नहीं कर सका | इस कहानी में यह बताया गया था कि उसी स्थान पर एक पांच वर्ष का बच्चा लाया गया था, जो उसके मालिक का बेटा था | कहानी लिखने वाले ने यह लिखा है कि यह ऊँट और छोटा बच्चा बातें कर रहे थे | ऊँट उस बच्चे को कह रहा था कि मेरे शरीर में ऐसी शक्ति है कि मैं तुम्हें अपने पांवों के नीचे दबा कर तुम्हारे प्राण निकाल सकता हूँ | उस बच्चे ने उसे उत्तर दिया, कि ऐ मेरे मित्र ! तुम मुझसे बहुत लम्बे और ऊंचे हो, और शक्तिशाली हो, परन्तु फिर भी मेरी सहायता के मोहताज़ हो, मैं एक ऐसी ज्योति का स्वामी हूँ, जो तुम्हारे भीतर नहीं है, न केवल तुम्हारे भीतर किन्तु सारे पशु-जगत के भीतर नहीं है | बड़े बड़े हाथियों में नहीं, बड़े बड़े मगर-मच्छों में नहीं | ऊँट ने कहा, कि मुझे वह ज्योति दिखाओ | बच्चे ने उत्तर दिया, कि मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ | इस बात को हृदय में रख कर यह बच्चा ऊँट पर सवार होकर ऐसे स्थान पर पहुंचा जहां ऊँट पानी के लिए तड़पने लगा | उस बच्चे को पता था कि पानी कहां है, उसने ऊँट को उसी स्थान पर ले जाकर कहा, कि यहां पानी है, तुम ढूंढ सकते हो तो ढूंढ लो | यदि ऊँट के पास बुद्धि की ज्योति होती तो वह उस मटके को देख लेता, घड़ा तो उसके सामने ही था, केवल उसका मुंह ही धरती से बाहर था | घड़े के मुंह पर एक ढक्कन रक्खा हुआ था | ऊँट ने इधर-उधर बहुत देखा, लेकिन उसे कहीं पानी न मिला | तब उस बच्चे ने जाकर घड़े का ढक्कन उतारा और ऊँट से कहा कि लो पानी पी लो | पानी घड़े के कुछ नीचे था, और ऊँट का मुंह उसके अन्दर न जा सकता था | ऊँट के मुंह में उसने एक कटोरा लगाया, लेकिन वह कटोरे को क्या करता | आखिरकार बच्चे ने उस कटोरे से पानी निकाल कर ऊँट को पिलाना शुरू किया और बताया, कि तुम जिस ज्योति से विहीन हो, उस अन्धता के कारण तुम कटोरे को सामने देखकर भी अपने काम नहीं ला सके | फिर वह बच्चा उसे कुँए पर ले गया और वहां

जाकर बताया कि यह कुआं मेरे पिता ने खुदवाया है | सारा पशु-जगत एक कुआं तक नहीं खोद सकता, चाहे शरीर के विचार से वह कितना ही बलवान क्यों न हो, क्योंकि उस मे मानसिक-ज्योति नहीं है | अब इस कहानी के अनुसार सारा पशु-जगत मानसिक-ज्योति से खाली होने के कारण न केवल अन्धा है, किन्तु असमर्थ भी है | इसी तरह सारा मनुष्य-मात्र देव-ज्योति से खाली है, तब उस में वही लक्ष्ण उत्पन्न हो सकते थे, जो देव-ज्योति से विहीन अस्तित्वों में हो सकते हैं | सारा मनुष्य-मात्र देव-ज्योति से विहीन होकर घोर आत्मिक-अन्धकार में ग्रस्त था, इसलिए वह अपना आत्मिक-हित करने में भी असमर्थ हो गया | अब इस सच्चाई को सामने रखकर कोई जन इस गुमराह करने वाले विचार में नहीं पड़ सकता कि देखो मनुष्यों में ऐसे ऐसे महान लोग उत्पन्न हुए, फिर भी आप कहते हैं कि यह सब के सब देव-ज्योति से विहीन थे | निस्संदेह वह देव-ज्योति से इसलिए विहीन थे, क्योंकि वह देव-शक्तियों से शून्य थे | जिस प्रकार पशु-जगत मानसिक-ज्योति से इसलिए वंचित था और वंचित है क्योंकि वह उन्नतशील मानसिक-शक्तियों से विहीन है | देव-ज्योति से विहीन होकर किसी भी कहलाने वाली (तथा-कथित) बड़ी हस्ती ने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-धर्म की शिक्षा नहीं दी और न 'मनुष्य-आत्माओं' को सत्य-मोक्ष दी और न उनके उच्च विकास का बीड़ा ही उठाया |

प्रश्न:- यह देव-शक्तियां किस में उत्पन्न हुईं ?

उत्तर:- जैसा कि ऊपर वर्णित किया जा चुका है, केवल देवात्मा में |

प्रश्न:- क्या फिर देवात्मा ही एकमात्र सत्य-धर्म के शिक्षक हैं ?

उत्तर:- जी हां | क्योंकि उन्होंने ही अपने आत्मा में देव-ज्योति उत्पन्न और विकसित की, कि जिससे उनके सन्मुख सारी आत्मिक-दुनिया खुल गई |

प्रश्न:- तो क्या वही एकमात्र आत्मिक सत्य-ज्ञान के तथा वही देव-ज्योति दाता हैं ?

उत्तर:- जी हां | सत्य-धर्म के एकमात्र शिक्षक होने के कारण केवल वह ही सच्चे आध्यात्मिक-गुरु तथा जीवन पथ-प्रदर्शक हैं |

०००००००

5
मनुष्य की परम आवश्यकता के पूरा करने वाले सच्चे आध्यात्मिक-नेता |

प्रश्न:- आपने देव-ज्योति दाता भगवान् देवात्मा को ही एकमात्र सत्य-देव अर्थात सच्चे उपास्य-देव और परम गुरु के रूप में प्रकाशित किया है, और वह इस बात को लेकर, कि देव-ज्योति दाता वह और केवल वही हैं, क्योंकि बिना देव-ज्योति के किसी के सन्मुख आत्मिक-जगत खुलता नहीं; इसलिए आत्मिक-जगत में प्रवेश की आकांक्षा रखने वाले प्रत्येक अधिकारी मनुष्य के लिए यह परम आवश्यक है कि वह भगवान् देवात्मा की शरण को प्राप्त करे | क्या यही एक ज़रुरत है कि जिसके पूरा करने के लिए हमें सच्चे गुरु की आवश्यकता है ?

उत्तर:- आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-ज्ञान पाने के लिए भगवान् देवात्मा का दरबार एक ही दरबार है, जो इस दरबार से निकलेगा, वह आत्म-अन्धकार के हवाले हो जायेगा | भगवान् देवात्मा न केवल आत्म-अन्धकार हर्ता है, बल्कि आत्म-मोक्ष दाता और आत्म-विकासकर्ता भी हैं |

प्रश्न:- वह किस प्रकार ?

उत्तर:- इसके बारे में आपको गंभीरता से कुछ सत्यों का दर्शन करना चाहिए, जो यह हैं:-

१. पहला सत्य यह है कि मनुष्य-आत्मा अपने भीतर जिस जिस प्रकार के भाव रखता है, उन्हीं के अनुसार वह अपनी सारी चिंताएं और अन्य कार्य करता है, और जो जो भाव उसके भीतर नहीं हैं, उनके साथ सम्बन्ध रखने वाली चिंताएं और क्रियाएं भी नहीं कर करता और नहीं कर सकता |

२. सारा मनुष्य मात्र सुखार्थी प्रकृति रखने के कारण नीच रागों और नीच घृणाओं में बुरी तरह फंसा हुआ है और इन नीच-शक्तियों के अधीन होकर वह नाना प्रकार की नीच गतियाँ ग्रहण करता है, जिन नीच गतियों के कारण वह अपनी और अपने साथ सम्बन्ध रखने वाले सब अस्तित्वों की महा

हानियाँ करता है, और वह हानिकारक बन जाता है | करोड़ों जन अपनी इस प्रकृति के कारण हिंसक-जीव बने हुए हैं |

३. इन नीच रागों और नीच घृणाओं के दासत्व के कारण मनुष्य असंख्य प्रकार के पाप करता है, ऐसा कोई पाप नहीं, जो मनुष्य अपनी सुखार्थी प्रकृति के कारण नहीं करता, इस लिए पापों का जो बाज़ार गर्म है, उनके मूल कारण मनुष्यों की नीच-भाव शक्तियां हैं, जिनको हम नीच अनुराग और नीच घृणायें कहते हैं |

४. मनुष्य अपने ऐसे ही नीच भावों के कारण असत्य और अशुभ को ग्रहण करता है | झूठ और बुराइयों का पक्षपाती हो जाता है | अपनी और औरों की झूठी महिमा गाता है, झूठी कथाएं रचता है, झूठे मुकद्दमें लड़ता और लड़ाता है, झूठे दस्तावेज़ (प्रमाण पत्र) बनाता है, औरों पर झूठे दोष और आरोप लगाता है, अपने किसी सच्चे दोष से बचने के लिए झूठे गवाह खड़े कर लेता है, अपनी ईर्ष्या को तृप्त करने के लिए किसी की सच्ची प्रशंसा भी नहीं सुन सकता, और इसलिए उसकी झूठी निन्दा करता है | दुनिया में असंख्य प्रकार की मिथ्याओं का राज और झूठ चारों ओर फैला हुआ है, इन सबका मूल कारण भी मनुष्य के यही नीच-भाव हैं |

५. इन नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के कारण जिस स्वतंत्रता का मनुष्य अनुरागी बना हुआ है, उस स्वतंत्रता को भी करोड़ों जन खो बैठते हैं | यदि उन्हें यह कहा जाये कि आत्म-स्वतंत्रता मनुष्य को मिल ही नहीं सकती, तो यह असत्य न होगा | मनुष्य तो जिस अस्तित्व से सुख पाता है, उसका दास हो जाता है | घर के सामानों और पदार्थों के साथ बंध जाता है, घर के एक एक कमरे के साथ बंध जाता है, अपने गांव या शहर के साथ बंध जाता है, अपनी स्त्री और बच्चों के साथ बंध जाता है, अपने मिथ्या से मिथ्या विश्वास के साथ बंध जाता है, अपने दोस्तों व मित्रों के साथ बंध जाता है, अपनी समाज और सोसाईटी के साथ बंध जाता है, अपने भाई-बहनों के साथ बंध जाता है | इन्हीं सब बन्धनों के साथ बंध कर वह अपनी स्वतंत्रता को खो देता है | उनके सम्बन्ध में खौफ़नाक़ पक्षपात के अत्यन्त भयानक भूत को अपने दिल का स्वामी बना लेता है | जहां एक ओर उनकी जुदाई से आघात पाकर कई बार वह मृत्यु के हवाले हो जाता है, और अनुचित दु:खों का शिकार हो जाता है, वहां दूसरी ओर वह इस भयानक पक्षपात के कारण नाना सम्बन्धों में भयानक हानि तक कर लेता है |

६. मनुष्य अपने नीच-भावों के वशीभूत होकर सच्चाई और भलाई का भी शत्रु बन जाता है, इसीलिए **आत्मि-सत्य-ज्ञान** का आकांक्षी नहीं बनता, और **आत्म-अज्ञानता** और **अन्धता** में ही संतुष्ट रहता है, और इस अन्धता से उत्पन्न हुई कई प्रकार की हानियों का शिकार हो जाता है | ऐसे करोड़ों मनुष्य डरते हैं तो सच्चाई से, और तृप्ति पाते हैं, तो झूठ और अन्धता में | अब यदि आत्म-अज्ञानता का भयानक रूप किसी के सन्मुख आ जाए तो वह उस से डरेगा, परन्तु यह अभागे और **नीच-भावों के दास जन** सत्य-ज्ञान से डरते हैं |

७ इन्हीं नीच-भावों के कारण करोड़ों मनुष्य उलटा-दृष्टा बने हुए हैं | वह झूठ को सच, और सच को झूठ मानते हैं, और नेकी को बदी (बुराई) और बदी को नेकी समझते हैं, इसलिए वह खौफनाक रूप में **आत्म-रोगी** बन जाते हैं | इन नीच भावों के वशीभूत होकर मनुष्य जो सबसे बड़ी हानि उठाता है, वह यह है कि वह सत्य और हित को ग्रहण करने की सामर्थ्य को (यदि उसमे कुछ ऐसी सामर्थ्य वर्तमान हो) खोता रहता है, और असत्य और अहित का सामना करने की योग्यता तथा बल को भी खो देता है | इसलिए वह **आत्म-कल्याण** का या यह कहो कि जीवन के कल्याण का सारा मार्ग स्वयं ही बन्द कर लेता है | अब यदि आप इन सच्चाइयों पर विचार करें, तो आप समझ सकेंगे कि हम मनुष्यों को आत्मा के सम्बन्ध में अज्ञानी, अन्धे, रोगी और दुर्बल क्यों कहते हैं ?

प्रश्न:- अब यदि मनुष्य की यही प्रकृति है, तो क्या ऐसा मनुष्य कोई हितकर गति भी कर सकता है ?

उत्तर:- केवल इस प्रकार की प्रकृति रखकर मनुष्य साधारणत: कोई **आत्मिक-उच्च-गति** ग्रहण नहीं कर सकता | इस प्रकार की प्रकृति रखने वाले इन नीच-अस्तित्वों में से कोई कोई अस्तित्व नाम या झूठे संस्कार के वश में होकर जो जो दान पुण्य करते हैं, उससे भलाई तो अवश्य आती है, परन्तु वह कुल भलाई ऐसा दान देने वाले मनुष्य अपने दया भाव से नहीं करते | इतना सत्य है कि करोड़ों नीच प्रकृति

रखने वाले जनों में से कुछ ऐसे जन भी पाए जाते हैं कि जो कोई न कोई उच्च या सात्विक-भाव रखते हैं | ऐसे मनुष्य अपने सात्विक-भावों से परिचालित होकर कुछ न कुछ हित-उत्पादक गतियाँ अवश्य ग्रहण कर लेते हैं | परन्तु जो करोड़ों मनुष्य इन उच्च भावों से ही विहीन हैं, वह तो हानिकारक गतियों में ही रात दिन अपनी जीवन-यात्रा पूरी करते हैं |

प्रश्न:- क्या इन करोड़ों मनुष्यों में पण्डित, पैगम्बर, योगी, मौलवी, काज़ी, पादरी और फुन्गी आदि कहलाने वाले वह करोड़ों मनुष्य भी शामिल हैं, जो विद्वान् कहलाते हैं ?

उत्तर:- जी हां | जिस प्रकार बड़े से बड़ा पशु भी छोटे पशुओं की भान्ति पशु-प्रकृति (अर्थात पशु-स्वभाव) का ही प्रकाश करते हैं, ठीक उसी प्रकार नीच भाव रखने वाले बड़े बड़े विद्वान् या धर्म-प्रचारक भी साधारण मनुष्यों की भान्ति अपनी प्रकृति से हानिकारक फल उत्पन्न करने से नहीं रुक सकते | वह भी सभी के सभी बुरी तरह आत्म-अन्धकार तथा आत्म-अज्ञानता में ग्रस्त हैं |

प्रश्न:- क्या यह विद्वान् और प्रचारक मनुष्य **आत्मिक-ज्योति** की अभिलाषा नहीं रखते ?

उत्तर:- उनके सन्मुख जब **देव-ज्योति** का तत्व ही नहीं खुला, तब वह उसकी अभिलाषा कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न:- भला यह **देव-ज्योति** मनुष्यों के हृदय में पहुँच कर क्या कार्य करती है ?

उत्तर:- यह महान और सर्वोच्च देव-ज्योति अधिकारी मनुष्यों के हृदयों में प्रवेश करके उन्हें उनकी नीच-गतियों को हानिकारक और घृणित रूप में दिखाती है | यह देव-ज्योति ऐसी हानिकारक और घृणित गति से निकलने के लिए उनके हृदय में उच्च् प्रेरणा उत्पन्न करती है, यह अति महान और उच्च देव-ज्योति एक एक अधिकारी हृदय को उच्च-भाव का सौन्दर्य दिखाती है, यह महा दुर्लभ देव-ज्योति उच्च-भाव का सुन्दर रूप दिखाकर उस मनुष्य को इस भाव के पाने के लिए इच्छुक बना देती है | यह इच्छा या अभिलाषा एक बहुत ही असाधारण प्रेरणा है | इस आकांक्षा से परिचालित होकर एक एक अधिकारी मनुष्य उस देव-तेज को पाता है, जिस से उसकी यह आकांक्षा पूर्ण होती है, वह एक ओर अपनी नीच-प्रकृति से सच्ची मोक्ष लाभ करता है, और दूसरी ओर उच्च-भावों में उन्नति पाता है |

प्रश्न:- यह देव-ज्योति और देव-तेज तो महा अमूल्य रत्न हैं ?

उत्तर:- जी हां | यह तो मनुष्य के लिए परम आवश्यक लाभ हैं |

प्रश्न:- इन्हीं देव-ज्योति और देव-तेज सम्पन्न किरणों को आप किसी और नाम से भी स्मरण करते हैं ?

उत्तर:- जी हां | हम इनको देव-प्रभाव कहते हैं |

प्रश्न:- देव-प्रभावों से आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर:- देव-प्रभाव वह असर हैं कि जो देवात्मा की देव-प्रकृति से उसी प्रकार निकलते हैं, जिस प्रकार नीच प्रभाव नीच-प्रकृति रखने वालों से निकलते हैं |

प्रश्न:- क्या आपका यह तात्पर्य है कि प्रत्येक मनुष्य में से प्रभाव निकलते हैं ?

उत्तर:- जी हां, जहां कहीं शक्ति है, वहां ही उसका कार्य भी वर्तमान है | 'मनुष्य-आत्मा' 'शक्तिमय' अस्तित्व है, इसलिए हर समय उस में हलचल जारी रहती है | और यह हलचल उस अस्तित्व से प्रति पल असर निकालती रहती है | इन असरों को हम प्रभाव कहते हैं | जैसी मनुष्य की प्रकृति अर्थात स्वभाव, वैसे ही उसके प्रभाव | नीच भाव रखने वाले मनुष्यों में से हर क्षण नीच प्रभाव निकलते रहते हैं, और उच्च-भाव धारियों में से उच्च प्रभाव | इसी प्रकार देवात्मा में से **देव-प्रभाव** निकलते रहते हैं |

प्रश्न:- क्या यह प्रभाव कर औरों के अस्तित्वों को भी प्रभावित करते हैं ?

उत्तर:- जी हां | जिस प्रकार एक एक फूलदार वृक्ष की महक दूर दूर तक पहुंचती है, और घ्राण-शक्ती रखने वाले मनुष्यों को सुगन्धित कर देती है, और एक एक गन्दगी के टोकरे में से निकलती हुई बदबू दूर दूर तक फ़ैल कर नाक रखने वाले मनुष्यों के लिए एक मुसीबत की वस्तु प्रमाणित होती है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य के नीच और उच्च प्रभाव दूर दूर तक फैल कर अपनी सीमाओं के अन्दर आये हुए अस्तित्वों पर अपने अच्छे या बुरे प्रभाव डालते रहते हैं |

प्रश्न:- यदि यह सत्य है, जैसा कि सत्य नज़र आता है, तब तो एक एक बुरे मनुष्य के साथ रहना, उसके कमरे में निवास करना, उसी कमरे में उसके पास सो जाना या किसी बाज़ार या दफतरों आदि में कई ऐसे नीच अस्तित्वों के सम्पर्क में आना और उनके प्रभावों में सांस लेना बहुत ही हानिकारक है ?

उत्तर:- जी हां, **सारी दुनिया की शारीरिक बीमारियाँ इतनी ख़तरनाक नहीं, जितने 'नीच जीवन धारियों' के नीच-प्रभाव खतरनाक हैं**, और इस प्रकार के प्रभावों के महा-हानिकारक 'प्रभाव-क्षेत्र' दुनिया में स्थान स्थान पर बने हुए हैं, जिस में वास करके और सांस लेकर लाखों और करोड़ों मनुष्य आत्मिक-बेहोशी की अवस्था में पहुंचते रहते हैं और हानिकारक प्रकृति ग्रहण कर लेते हैं |

प्रश्न:- तब क्या उच्च संगत की मनुष्य को नितांत आवश्यकता है ?

उत्तर:- जी हां, जिस प्रकार शरीर के लिए ज्योति, खुली और ताज़ा वायु, साफ और निर्मल जल, और अच्छा और पौष्टिक-भोजन तथा हवा और ज्योति-दार खुले मकानों की अत्यंत आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार आत्मिक-जीवन (अर्थात आध्यात्मिक-जीवन) के लिए उच्च प्रभाद दायक मण्डल की भी अत्यंत आवश्यकता है |

प्रश्न:- क्या उच्च-प्रभाव और देव-प्रभाव एक ही बात है ?

उत्तर:- नहीं, उच्च-प्रभाव तो एक एक सात्विक-शक्ति रखने वाले जन से भी निकल सकते हैं, परन्तु देव-प्रभाव केवल देवात्मा से ही निकलते हैं | देव-प्रभाव तो देव-शक्तियों से ही निकल सकते हैं, और देव-शक्तियों का प्रकाश केवल देवात्मा में ही हुआ है |

प्रश्न:- तब क्या देव-प्रभाव दायक मण्डल में किसी मनुष्य का प्रवेश करना और रहना उसके लिए बहुत बड़ा सौभाग्य है ?

उत्तर:- जी हां, देव-प्रभाव दायक मण्डल में रहकर ही मनुष्य को देव-ज्योति और देव-तेज लाभ हो सकता है | देव-प्रभाव दायक मण्डल में रहकर ही मनुष्य के जीवन में उच्च परिवर्तन आना आरम्भ होता है | उसके पाप-कर्म झड़ने आरम्भ हो जाते हैं, उसके मिथ्या-विश्वास उससे दूर भागना आरम्भ कर देते हैं | उसकी आँखों के सामने नाना सम्बन्धियों का उपकारी रूप आने लगता है | पहली सारी उम्र के भूले हुए माता-पिता (अर्थात उनका उपकरी रूप) उसके सामने नए रूप में प्रकट होने लगता है | वह (माता-पिता) अब उसे श्रद्धा के भाजन प्रतीत होने लगते हैं | पहले की उनके सम्बन्ध में की हुई हानियाँ उसे दुःख देने लगती हैं | इसी तरह और नाना सम्बन्धों में भी उसे अपनी हीनताएं और नीचताएं नज़र आने लगती हैं | देव-प्रभाव ऐसे अधिकारी हृदय को अपनी नीचताओं तथा हीनताओं के लिए दुःख से भर देते हैं, और उसको हानी-परिशोध की हालत में ले जाते हैं | देव-प्रभाव दायक मण्डल में निवास करके एक एक अधिकारी आत्मा नीच लक्ष्यों के पीछे अपने जीवन की अमूल्य "**आत्मिक-पूँजी**" लुटी हुई देखकर अपना बहुत बड़ा नुकसान अनुभव करता है और यह पुकार उठता है, कि हाय ! मैंने अपना "**जीवन-धन**" लुटाया, नीच लक्ष्यों के पीछे मैं नीच बन गया, अदना (तुच्छ) लालसाओं के पीछे मैं अदना बन गया और नाना प्रकार की नीच चिंताएं और क्रियाएं करके मैंने अपना आत्मिक-रूप घटिया बना लिया | अब ऐसा मनुष्य धनी होकर धन में चैन नहीं पाता, पद-धारी होकर पद में तसल्ली नहीं पाता, अपनी नीच बिरादरी का मुखिया होकर उस मे तृप्ति नहीं पाता, वह तो भगवान् देवात्मा के दरबार में तुच्छ से तुच्छ सेवा का अधिकार पाकर भी फूला नहीं समाता | देवसमाज के मंदिर में झाड़ू देकर जीवन-रस पाता है, साधन की तैय्यारी करके गदगद हो जाता है | आये हुए सत्संगियों की सेवा करके ख़ुशी से भर जाता है | भगवान् देवात्मा के कार्य के लिए धन देकर अपने आपको धनी समझता है | अपनी अमूल्य शक्तियों (अर्थात योग्यताओं) को भगवान् देवात्मा के कार्य में भेंट करके अपने आपको सौभाग्यवान महसूस करता है, भगवान् देवात्मा के कार्य में अपना सब कुछ देकर भी संतुष्ट नहीं होता, और बार बार यही प्रकाश करता है कि कुछ और हो तो मैं वह भी भेंट कर दूं | मैं ऐसे सतगुरु की क्या सेवा कर सकता हूँ ? मैं ऐसे सतगुरु का क्या ऋण-परिशोध आर सकता हूँ ? कुछ भी नहीं कर सकता |

प्रश्न:- क्या प्रत्येक देव-धर्मी ऐसा हो जाता है ?

उत्तर:- जी नहीं |

प्रश्न:- वह क्यों नहीं ?

उत्तर:- वह इसलिए क्योंकि प्रत्येक जन सब प्रकार की योग्यता नहीं रखता | अभिलाषा के साथ योग्यता की भी अत्यंत आवश्यकता होती है |

०००००

6

नीच-प्रभाव, उच्च-प्रभाव और देव-प्रभाव |

प्रश्न:- पिछले लेख में आपने तीन प्रकार के प्रभावों का उल्लेख किया था | अर्थात नीच-प्रभाव, उच्च-प्रभाव तथा देव-प्रभाव | इन प्रभावों के जुदा जुदा फल क्या हैं ?

उत्तर:- नीच-प्रभाव क्योंकि नीच-प्रकृति से उत्पन्न होते हैं, इसलिए जिस जिस हृदय में वह प्रवेश करते हैं, उस उस हृदय को वह नीच और पतित बनाते हैं | अर्थात ऐसे हृदयों को "**पाप- जीवन**" का प्रेमक बनाते हैं | मिथ्या और पाप का प्रेमक बना देते हैं | आत्मा के हित के सम्बन्ध में बिलकुल बेसुध कर देते हैं | इसके भिन्न वह आत्मा की निर्माणकारी शक्ति को दिनों-दिन शिथिल करते जाते हैं, जिसके कारण एक एक अभागा जन एक ओर बुराई तथा मिथ्या का सामना नहीं कर सकता, और दूसरी ओर किसी भलाई और सच्चाई के ग्रहण करने की सामर्थ्य नहीं रखता | जो 'भाव' उच्च कहे जाते हैं, वह एक एक अधिकारी जन को एक या दूसरे प्रकार के पाप से छुटकारा तो देते हैं, और किसी अच्छे या भले काम के करने की सामर्थ्य भी उत्पन्न करते हैं | एक जन ने जो हिन्दू था, एक मुस्लमान सूफी को अपना गुरु बनाया | मैंने उससे मालूम किया कि तुम ने उसको किस बात के लिए गुरु बनाया है ? उसने कहा कि मेरे गुरु ने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं काम-वासना के अधिकार से बाहर निकल आऊँ | मैं इस योग्य हो गया हूँ कि सारी आयु ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत कर सकूं | इसके भिन्न मेरे गुरु ने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं दुनिया के सब काम-काज से मुक्त होकर उनकी भक्ति में लग जाऊं और कुछ न कुछ औरों की सेवा करूं | जहां तक उस नौजवान को इस सूफी ने स्त्रियों के सम्बन्ध में पवित्र बनाया, वहां तक उसके हृदय में बेहतर परिवर्तन आया, और जहां तक उस सूफी ने उसको किसी सांसारिक-लक्ष्य से उदासीन बनाया और कुछ न कुछ सेवा के काम के लिए उसके अन्दर आकांक्षा उत्पन्न कर दी, वहां तक उसका अवश्य भला हुआ है | उस सूफी के यह प्रभाव उस हिन्दू शिष्य के लिए कुछ न कुछ बेहतरी की तरफ ले जाने वाले प्रमाणित हुए | जो प्रभाव मनुष्य की प्रकृति को जहां तक कुछ न कुछ 'उच्च और सेवाकारी' बनाते हैं, वहां तक वह शुभ-जनक प्रभाव कहे जा सकते हैं | परन्तु इस प्रकार के सारे उच्च-प्रभाव मनुष्य को **आत्म-अज्ञानता** से बाहर नहीं निकाल सकते | इस प्रकार के उच्च-प्रभाव मनुष्य को आत्मा और उसकी गतियों और उन गतियों के फलों और आत्मिक-जीवन की रक्षा और उसके विकास आदि के साधनों के विषय में जो सत्य-ज्ञान है, उसके देखने या उपलब्ध करने के योग्य नहीं बनाते | यह भाव आत्मिक-रोगों को देखने के योग्य भी नहीं बनाते, न उनका घृणित-रूप ही दिखाते हैं, और न मृत्यु-दायक रूप दिखाते हैं, और न उनसे मोक्ष पाने के लिए प्रेरणा या आकांक्षा ही उत्पन्न कर सकते हैं | इस प्रकार के उच्च-भाव नाना प्रकार के उच्च-गति-दायक अथवा विकासकारी सात्विक-भावों का दर्शन नहीं करा सकते, न उनके सुन्दर रूप को देखने या उपलब्ध करने के योग्य बनाते हैं | न उनको लाभ करने की प्रेरणा व आकांक्षा उत्पन्न करते हैं | इस प्रकार के सात्विक-भाव मनुष्य को शरीफ अवश्य बनाते हैं, परन्तु **आत्म-ज्ञानी और आत्म-बोधी** नहीं बनाते और न आत्मा की **सत्य-मोक्ष** का अभिलाषी बनाते हैं और न **आत्मिक-उच्च-विकास** की आवश्यकता और सुन्दरता को दिखाते ही हैं | मानो सारा आत्मिक-जगत इन उच्च-भावों की परिधि से ही बाहर है |

प्रश्न:- यह तो मैं समझ गया हूँ कि नीच-प्रभाव आत्म-विनाशक हैं, परन्तु मैंने आपसे ही यह भी सुना है कि उच्च-प्रभाव या सतसंग भी मनुष्य को आत्मिक-जगत में प्रवेश करने के योग्य नहीं बनाते | इससे आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:- उच्च-प्रभाव 'उच्च-मण्डल' उत्पन्न करते हैं, परन्तु वह 'देव-मण्डल' उत्पन्न नहीं कर सकते, जो आत्मा की रक्षा, सत्य मोक्ष तथा विकास के लिए परमावश्यक है |

प्रश्न:- हो सकता है कि यह आपकी बात सत्य हो, परन्तु मैं इसके सम्बन्ध में अधिक ज्ञान लाभ करना चाहता हूँ |

उत्तर:- उच्च-प्रभाव तो सात्विक-जीवनधारी मनुष्यों से निकल सकते हैं, या एक व दूसरे प्रकार के पाप से मुक्त जनों से निकलते हैं | यह हो सकता है कि कोई मनुष्य सात्विक-भाव रखता हो, परन्तु सात्विक-भाव रखने वाला जन आत्मिक-सत्य-ज्ञान से खाली हो सकता है और प्राय होता है | एक एक मनुष्य एक या दूसरे प्रकार की पाप की गति से मुक्त हो सकता है, परन्तु फिर भी नाना प्रकार के नीच अनुरागों और नीच- घृणाओं में ग्रस्त होता है | इसी प्रकार एक व दूसरी प्रकार का अच्छा भाव रखने वाला जन भी नाना नीच-अनुरागों और नीच-घृणाओं में ग्रस्त हो सकता है | जिस सूफी का मैंने ऊपर उल्लेख किया है, वह वैरागी थे, स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में पवित्र थे, दयावान थे | परन्तु पक्के मांसाहारी थे, शराब के नशे में साधारणत: मस्त रहते थे, तथा बोतलों की बोतलें शराब पी जाते थे, और उनके सम्बन्ध में यह कहा जाता था कि वह शराब पीकर खुदा की भक्ति में मग्न हो जाते हैं | अब यह सूफी एक भला पुरुष था, उसने एक वैश्या को भी उसके घृणित पेशे से निकाल कर पवित्र जीवन रखने वाली बना दिया | फिर भी न केवल आप आत्मा के सम्बन्ध में अज्ञानी रहा, किन्तु उसके जितने भी शिष्य रहे, वह सब के सब भी आत्मिक-ज्ञान के विचार से अन्धे ही रहे | इसलिए भला मनुष्य बनने से कोई जन **आत्म-ज्ञानी और आत्म-बोधी** नहीं बन जाता | न आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-सिद्धांतों को देखने के योग्य ही होता है | न आत्मा के जीवन तथा मरण के भेदों को देखने के योग्य बनता है | न ऐसा जन सत्य-उपास्य देव और मिथ्या उपास्य देव में कोई अन्तर अनुभव करता है | अर्थात वह आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-ज्ञान से शून्य रहता है | वह आत्मिक-जगत से मानो कटा रहता है | जिस सूफी का मैंने ऊपर उल्लेख किया है, वह खुदा को मानता था, या यह कहो कि ब्रह्म को मानता था | अर्थात वह जन **मिथ्या-विश्वासी** था | अब आप समझ गए होंगे कि भला पुरुष बनने पर भी मनुष्य 'आत्मा' के सम्बन्ध में सत्य-ज्ञान, सत्य-मोक्ष और उच्च विकास से मीलों दूर पड़ा रहता है |

प्रश्न:- देव-प्रभावों से मनुष्य को क्या कुछ प्राप्त होता है ?

उत्तर:- जीवन-प्रद या उच्च परिवर्तनकारी देव-प्रभावों को पाकर और उनको ग्रहण करने के योग्य होकर एक एक अधिकारी जन अपने आत्मा और उसकी गतियों और उनके फलों और अपने 'आत्मिक-जीवन' की रक्षा और उसके विकास के साधनों आदि के विषय में सत्य-ज्ञान को लाभ करने की आवश्यकता और उसकी महिमा को देख या उपलब्ध और उसके लाभ करने के लिए प्रेरणा या आकांक्षा लाभ कर सकता है | इसके भिन्न ऐसा अधिकारी जन इन जीवन-प्रद 'देव-प्रभावों' को पाकर अपने आत्मा में अपने किसी नीच गति दायक और महा हानिकारक या विनाशकारी भाव और विकारों को देख या उपलब्ध कर सकता है और उनसे मोक्ष पाने के लिए प्रेरणा या आकांक्षा या इस नीच-गति से आंशिक या पूर्ण, कुछ काल या सारी वयस के लिए मोक्ष लाभ कर सकता है | इन्हीं जीवन-प्रद देव-प्रभावों को पाकर एक एक अधिकारी जन अपने आत्मा में किसी उच्च-गति दायक या विकासकारी भाव के लाभ करने की आवश्यकता को देख या उपलब्ध कर सकता है, और उसको लाभ करने के लिए अपने हृदय में प्रेरणा या आकांक्षा जाग्रत हुई अनुभव कर सकता है और उसे आंशिक या पूर्ण रूप से, कुछ काल या सारी वयस के लिए उत्पन्न या उन्नत कर सकता है | और इसी प्रकार इन परम कल्याणकारी देव-प्रभावों को पाकर और ग्रहण करके ऐसा अधिकारी जन अपने अस्तित्व का परम हित लाभ कर सकता है |

प्रश्न:- मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ कि आपने देव-प्रभावों के कार्य के बारे में विस्तार से बताया है | अब तो मैं यह अनुभव करता हूँ कि ऐसे जीवन-प्रद देव-प्रभावों के लाभ से बढ़ कर और कोई लाभ या और कोई सौभाग्य नहीं |

उत्तर:- जी हां | यह सत्य है कि आत्मा रखकर यदि मुझे आत्मा का ही ज्ञान न हो, आत्मा के रूप और उसके जीवन का ही ज्ञान न हो, आत्मा के रोगों और पतन का ही ज्ञान न हो, आत्मा के सत्य-मोक्ष का ही ज्ञान न हो, आत्मा के उच्च विकास की सत्य विधि का ही ज्ञान न हो – और बाकी चाहे सारी दुनिया का ज्ञान हो, तो क्या मैं ज्ञानी कहलाने के योग्य हूँ ? यदि मैं सारी दुनिया को जान भी लूं और अपने आप से भूला रहूं, तो क्या मैं ज्ञानी कहलाने का अधिकारी माना जा सकता हूँ ? इसके भिन्न यदि मुझे सारी दुनिया का धन भी प्राप्त हो जाए, परन्तु मेरा आत्मा '**आत्मिक-रोगों**' में बुरी तरह ग्रस्त रहे, तो मुझे धनाड्य होने से क्या लाभ ? यदि आत्मिक-रोगों के कारण मेरी आत्मिक-पूंजी (अर्थात उच्च आत्मिक-गुण, यदि कुछ हों) क्षय हो जाए, और आत्मिक-पूँजी को खो कर यदि मैं सारी दुनिया का

बादशाह भी हो जाऊं, तो भी मुझे क्या लाभ ? मेरी सारी हस्ती 'आत्मा' को लेकर ही है, यदि मैं उसको ही खो दूं, तो बाकी सब सामान और सम्बन्धी मेरे किस काम के ? अब मुझे आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञानी या बोधी बनाने वाले, आत्मिक-रोगों से सत्य मोक्ष देने वाले, सात्विक-भावों से मेरे हृदय को ज्योतिर्मान और बलवान करने वाले यदि कोई प्रभाव हैं, तो वह देव-प्रभाव हैं | इसलिए यदि मेरे लिए कोई लाभ करने (प्राप्त करने) की वस्तु है, तो वह 'देव-प्रभाव' हैं | और यदि मेरे लिए कोई दुर्भाग्य का विषय है, तो वह यह है कि मैं इन देव-प्रभावों से विमुख रहूँ | इसलिए यह वचन सत्य हैं कि "**देव-प्रभावों के लाभ से बढ़कर और कोई लाभ या और कोई सौभाग्य नहीं | और देव-प्रभावों से वंचित होने से बढ़कर और कोई हानि या और कोई दुर्भाग्य नहीं** |"

प्रश्न:- यह जीवन-प्रद 'देव-प्रभाव' कहां से लाभ हो सकते हैं ?

उत्तर:- यह 'देव-प्रभाव' उस जीवन-दायक स्रोत अर्थात झरने से प्राप्त हो सकते हैं, जिसमे यह उत्पन्न होते हैं |

प्रश्न:- यह देव-प्रभाव कहां उत्पन्न होते हैं ?

उत्तर:- यह देव-प्रभाव 'देव-शक्तियों' से विशिष्ट 'देव-आत्मा के देव हृदय' में उत्पन्न होते हैं, जो गूढ़ सत्य मैं इससे पहले आपको कई बार बता चुका हूँ |

प्रश्न:- यह 'देव-प्रभाव' किस प्रकार लाभ हो सकते हैं ?

उत्तर:- यह 'देव-प्रभाव' भगवान् देवात्मा के साथ **जीवन्त सम्बन्ध** स्थापन करके उनकी पूजा विषयक साधनों के द्वारा प्राप्त हो सकते हैं |

प्रश्न:- भगवान् देवात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापन करने के लिए किन किन विशेष शक्तियों (अर्थात भावों) की आवश्यकता है ?

उत्तर:- उनके साथ जीवन्त-सम्बन्ध स्थान करने के लिए अटल कृतज्ञता, अटल श्रद्धा, अटल विश्वास तथा देव-प्रभावों के लिए अटल आकर्षण विषयक भावों की आवश्यकता है |

प्रश्न:- इन भावों में से देव-पूजा के लिए सबसे अधिक किस भाव की आवश्यकता है ?

उत्तर:- किसी सच्चे उपास्य-देव की सच्ची **आत्मिक-पूजा** के लिए पूजा विषयक जिन सात्विक-भावों की आवश्यकता है, उन भावों में से श्रद्धा विषयक सात्विक-भाव एक अति आवश्यक सूत्र है |

प्रश्न:- यह सात्विक श्रद्धा क्या होती है ?

उत्तर:- यह सात्विक श्रद्धा किसी जन के **परोपकार सम्बन्धी काम** के सौन्दर्य को दिखाने की आंतरिक आँख है जो उसका साक्षात-ज्ञान देती है | उस परोपकारी के ऊपर मोहित कर देती है, और बिना किसी स्वार्थ, लालच, भय या डर के उस परोपकारी जन के परोपकार की महिमा को प्रगट करने के लिए तैयार करती है, और उसकी महिमा के प्रचार में लगा देती है, और इस शुभ काम को करने के लिए आवश्यक त्याग करने के निमित्त तैयार कर देती है | यह श्रद्धा सात्विक-भावों पर मोहित करती है, क्योंकि यह भाव परोपकारी के आंतरिक-रूप के सौन्दर्य को दिखाता है | इसलिए यह भाव स्वाभाविक तौर पर ऐसे जन की सेवा में लगा देता है, जिसके प्रति यह भाव उत्पन्न होता है |

प्रश्न:- क्या आपका यह तात्पर्य है कि जिस जन के भीतर सात्विक श्रद्धा नहीं, वह सात्विक-पूजा नहीं कर सकता ?

उत्तर:- जी हां, आपने ठीक समझा है | सात्विक-श्रद्धा के बिना किसी का सात्विक-रूप नज़र ही नहीं आता, इसलिए पूजा तो कहीं रही |

प्रश्न:- यदि कोई जन बहुत विद्वान हो, तो क्या उसके भीतर सात्विक-श्रद्धा वर्तमान नहीं हो सकती ?

उत्तर:- विद्वान होना सात्विक-श्रद्धा की शर्त नहीं है, क्योंकि यह दोनों अलग अलग क्षेत्र हैं | मेरे मित्र, यह भी सत्य है कि अधिकतर लोग तो सात्विक-श्रद्धा से शून्य दिखाई देते हैं, तथा कहीं कहीं किसी जन के भीतर इस श्रद्धा का थोड़ा सा लक्ष्ण कठिनता से मिलता है | आप किसी ऐसी सभा में चले जावें कि जहां किसी बुजुर्ग जन की महिमा का वर्णन होता हो, तो आप यह देख कर हैरान रह जायेंगे कि जहां उसकी कई प्रकार की महिमा का उल्लेख होता है, वहां उसके किसी सात्विक-भाव का इतना अधूरा

या त्रुटी-पूर्ण उल्लेख होता है कि हैरानी होती है | अधिकतर मामलों में बड़े बड़े पढ़े-लिखे जन भी किसी के सात्विक-गुणों को देखने के प्राय अयोग्य पाए जाते हैं | यदि सच पूछो तो सात्विक-श्रद्धा बहुत ही दुर्लभ वस्तु है |

प्रश्न:- क्या बात है कि फिर भी एक एक गुरु के सैंकड़ों हज़ारों नहीं बल्कि लाखों और करोड़ों शिष्य वर्तमान होते हैं ? वह किस बात को लेकर उन्हें अपना गुरु या उपास्य समझते हैं |

उत्तर:- साधारणत: वह इस बात को लेकर उनकी पूजा करते हैं कि ऐसा गुरु या उपास्य इस लोक या परलोक में उनको सुख के सामान पहुँचाने की सामर्थ्य रखता है, और दुखों से बचाता है | मुस्लमानों का वहिश्त (स्वर्ग) भी वासना-मूलक वहिश्त है | औरों के वहिश्त या स्वर्ग भी क्या देते हैं ? केवल इतना ही बताते हैं कि हमारे गुरु की यह सामर्थ्य है कि मरने के बाद वह अपने शिष्यों को 'सत पुरुष' या परमात्मा के दर्शन कराएग, और वह इसी बात को लेकर उनके सम्बन्ध में महिमा के गीत गाने में लग जाते हैं | कईयों का यह विश्वास है कि हमारा ख़ुदा आवागमन के चक्कर से निकाल देता है | किसी के सामने यह है ही नहीं कि गुरु का सबसे प्रथम कर्तव्य यह है कि वह **आत्मा के सम्बन्ध में सत्य-ज्योति दे और आत्मिक-पतनकारी शक्तियों तथा नीच-गतियों से सत्य-मोक्ष प्रदान करे और उच्च अर्थात सात्विक-भावों को उत्पन्न और उन्नत करे** | लोग यदि गुरु की महिमा गाते हैं, तो उनके सम्बन्ध में चमत्कारों का वर्णन करते हैं | सात्विक-भावों की दृष्टि से तो ऐसा मालूम होता है कि सारी दुनिया रूठी हुई है | किसी गुरु के सच्चे सात्विक भावों का वर्णन इल्हामी पुस्तकों में ढूँढने पर भी बड़ी कठिनता से कहीं कहीं थोड़ा सा अंश देखने को मिलता है | एक एक उपास्य-देव यह डींग तो मार देता है कि ऐ मेरे चेलो ! अमुक जंग में मैंने तुम्हें सहायता की | तुम्हारे अमुक शत्रुओं पर जंग में मैंने ईंट, रोड़े और आग के गोले बरसाए | मैंने तुम्हे इस प्रकार की या उस प्रकार की बादशाहत दी | लेकिन कहीं भी कोई गुरु या उपास्य-देव यह नहीं बताता कि **मैंने तुम्हें पाप-जीवन से छुटकारा दिया, मैंने तुम्हारे भीतर उच्च-भाव उत्पन्न किये**, और लालच के भावों का तो वर्णन आता है, परन्तु किसी सात्विक-परिवर्तन का वर्णन नहीं आता |

प्रश्न:- ऐसा क्यों है ?

उत्तर:- यह इसलिए है कि साधारण मनुष्य का तो क्या कहना, बड़े बड़े मज़हबों के संस्थापक भी सुख की दुनिया से बाहर नहीं हैं | उनका हित की दुनिया में प्रवेश ही नहीं हुआ, किसी किसी जन में कोई थोड़ा सा अच्छा भाव अवश्य उत्पन्न हुआ, परन्तु उस पर आत्मिक-जगत (अर्थात आध्यात्मिक-जगत) न खुल सका | अब जिस मनुष्य-मात्र में आत्मिक-जगत का ही अकाल पडा हुआ है, वह भला आत्मिक-जगत में वास करने के स्वपन कब देख सकते थे | मनुष्यों ने गुरु ढूंढा तो वासनाओं को तृप्त करने के लिए, किसी ने ढूंढा तो कल्पित आनन्द पाने के लिए, किसी ने ढूंढा तो दुःख से छुटकारा पाने के लिए, मनुष्यों में उरु की दुखों से बाहर निकलने के लिए तो तलाश हुई तथा सुखों को पाने के लिए भी तलाश हुई, परन्तु सच्चाई और भलाई को जानने और पाने के लिए कोई तलाश न हुई | इसलिए आज भी किसी मज़हब या धर्म के अनुयाई से पूछो कि तुम्हारा पूजनीय देवता तुम्हें क्या देता है ? उसका यही कहना होगा कि वह अमुक दुखों से हमें छुटकारा देता है, और अमुक सुखों को हम तक पहुंचाता है | जिस को **सुख-दुःख के भावों के आधार पर गुरु की तलाश है, उसको सत्य और हित की तलाश नहीं** | इसलिए सत्य और हित प्रदान करने वाले गुरु की भी तलाश नहीं |

प्रश्न:- फिर भी, क्या यह सत्य नहीं कि किसी न किसी मनुष्य ने पाप और मिथ्या के बंधनों से मुक्त करने वाले आविर्भाव की आकांक्षा और मांग भी की है ?

उत्तर:- जी हां | विश्व में पाप और मिथ्या के द्वारा जो नरक फैला हुआ है, उस की अग्नि को देख कर किसी किसी अच्छी प्रकृति रखने वाले विचारशील जन ने यह प्रार्थना की है कि कोई ऐसा अवतार आविर्भूत हो कि जो पाप और मिथ्या की बेड़ियों को काट दे, ताकि नाना सम्बन्धों से नरक की अग्नि बुझ सके | उन्होंने सतगुरु की आकांक्षा की है, परन्तु उनके सामने किसी सच्चे सतगुरु की कोई वास्तविक तस्वीर नहीं बन सकी | अपनी 'सुख-मूलक सीमा बद्ध' प्रकृति के कारण वह ऐसी तस्वीर बना भी नहीं सकते थे |

प्रश्न:- फिर देवात्मा का अविर्भाव किस प्रकार और क्योंकर हुआ ? क्या मनुष्य श्रेणी की आकांक्षा से हुआ, या किसी और नियम के द्वारा हुआ ?

उत्तर:- इसका उत्तर आगामी अध्याय में मिलेगा |

०००००००००

7

भगवान् देवात्मा का अविर्भाव किस प्रकार हुआ ?

प्रश्न:- आप कृपा करके थोड़े से शब्दों मे भगवान् देवात्मा के महिमा का वर्णन करें ?

उत्तर:- मैंने आपको बताया है कि भगवान् देवात्मा ही एकमात्र परम गुरु और परम उपास्य देव हैं, वह इसलिए कि वही देव-ज्योति और देव-तेज के दाता हैं | अपनी महान, दुर्लभ और अनोखी देव-ज्योति के द्वारा वह हमें आत्मा का रूप दिखाते हैं, आत्मा के मरण और जीवन के नियम बताते हैं | आत्मा के सत्य-मोक्ष और विकास के सम्बन्ध में जो विश्वव्यापी नियम हैं, उनका दर्शन कराते हैं | वह अपने अनोखे देव-तेज के द्वारा अधिकारी हर्द्यों में उच्च परिवर्तन लाते हैं | एक ओर आत्म-अन्धता और आत्म-अज्ञानता को दूर करके आत्मिक-सत्य ज्ञान के ग्रहण करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं, और दूसरी ओर आत्मिक-रोगों से सत्य-मोक्ष और सात्विक-शक्तियों में उच्च विकास उत्पन्न करके वह सब अधिकारी आत्माओं का परम कल्याण साधन करते हैं |

प्रश्न:- परन्तु ऐसी महा श्रेष्ठ हस्ती का आविर्भाव किस प्रकार हुआ ? आप खुदा या परमात्मा को तो नहीं मानते | खुदा-परस्त तो अपने हृदय को यह तसल्ली देते हैं कि उनका खुदा या भगवान् समय समय में मनुष्यों के भले के लिए अपने प्यारों को इस धरती पर भेजता रहता है या स्वयं अवतार लेता रहता है | भगवान् देवात्मा के देवरूप में किसने अवतार लिया ?

उत्तर:- उनके जीवन में देव-शक्तियों ने अवतार लिया है |

प्रश्न:- वह किस प्रकार ?

उत्तर:- प्रकृति की निर्माणकारी अथवा विकासकारी विधि से | यह विधि एक बहुत ही महत्त्व-पूर्ण अटल और अनादी विधि है | जैसे प्रकृति अनादी और स्वयंभू है, वैसे ही यह विधि भी अटल और अनादी है |

प्रश्न:- क्या कोई विधि या प्रक्रिया सदा से हो सकती है ?

उत्तर:- जी हां, जब से प्रकृति है (जो सदा से है) तबसे उसका परिवर्तन का नियम भी सदा से है | प्रकृति तो जड़ और शक्ति-सम्पन्न पदार्थों और अस्तित्वों से भरी हुई है | जहां शक्ति है, वहां हलचल है | जहां हलचल है, वहां परिवर्तन है | शक्तियों से उत्पन्न यह हलचल विश्वव्यापी है | इसलिए यह परिवर्तन भी विश्वव्यापी है | यह परिवर्तन दो रूपों में प्रकाशित होता है, एक निर्माणकारी तथा दूसरा ध्वंसकारी | अर्थात एक विकासकारी दूसरा विनाशकारी | यह दोनों प्रकार के परिवर्तन सदा से हैं और सदा रहेंगे | निर्माण का कार्य होता ही रहेगा, और विनाश का कार्य भी होता ही रहेगा | जब प्रकृति एक है, दो या दो से अधिक नहीं, तथा उसके निर्माण कार्य का सिलसिला भी एक ही है, और लगातार है | यह कभी और किसी समय भी प्रकृति के भीतर से रुक अथवा नष्ट नहीं हो सकता | इसलिए इस निर्माण कार्य को हम अटल कार्य कहते हैं, क्योंकि यह कार्य प्रकृति की जिन विधियों के अनुसार होता है, वह विधियाँ भी अटल हैं | जिस प्रकृति में अटल विधियों से काम होता हो, उस प्रकृति के सम्बन्ध में यह गप्प हांकना कि यह विधियां अटल नहीं, किन्तु टल भी सकती है, और किसी नबी या पैगम्बर के हुक्म से टल जाती हैं, बहुत बड़ी भूल है | प्रकृति की अटल विधियाँ बदल ही नहीं सकतीं | वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ सकतीं | वह किसी की सिफरिश नहीं सुनतीं, सिफारिश करने वाला चाहे कहलाने वाले ख़ुदा का कोई प्यारा हो, चाहे स्वयं अवतार हो, चाहे उसका रसूल या पैगम्बर हो | जिस प्रकार विधियाँ अटल हैं, उसी प्रकार उनका कार्य भी अटल है | और वह यह है कि ऐसे पदार्थों और अन्य अस्तित्वों का निर्माण होता रहता है, जो एक ओर हानिकारक न हों, या कम से कम हानिकारक हों, और दूसरी ओर अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में अधिक से अधिक हितकर हों | इसलिए यदि हम अपनी पृथ्वी के इतिहास को देखें, तो हमें इस निर्माणकारी सिलसिले का आश्चर्यजनक रूप से दर्शन होता है | इस पृथ्वी को अलग

अस्तित्व रखते हुए करोड़ों वर्ष हो चुके हैं | यह आदि-काल में आग का गोला थी, फिर धीरे धीरे इसकी ऊपर की सतह (परत) ठंडी होती गई, और धीरे धीरे एक, फिर दूसरी तथा इस तरह कितनी ही गैसें उत्पन्न होती गईं | तथा उन गैसें से पैदा हुई हवाएं निकल कर धरती ने अपना वायु-मण्डल बना लिया | उस वायु-मण्डल में दो गैसें अर्थात आक्सीजन और हाइड्रोजन के एक निश्चित अनुपात में मिलने से पानी उत्पन्न हो गया और नदियों और समुन्द्रों के रूप में परिवर्तित हो गया | अब प्रकृति में जो नियम पूरे हुए – वह विकासकारी अटल नियम निम्नलिखित थे | पृथ्वी की सतह भी ठंडी, पृथ्वी के ऊपर पानी भी बहुत और उसके भिन्न वायु-मण्डल भी वर्तमान, सूर्य की ज्योति तथा ताप भी वर्तमान | इस परिवर्तन के द्वारा निर्माण का कार्य भी वर्तमान | इन नियमों के पूरा होने से परिणाम वही निकला, जो होना था | इन सब अनुकूल हालात के मिलने से निर्माण का कार्य आगे जाने के लिए बाध्य था | और इसलिए धरती पर **जीवनी-शक्ति** का सूत्रपात हुआ, क्योंकि यह सब हालात जीवन-दायक थे | जीवन-दायक सामानों के कार्य से ही जीवनी-शक्ति उत्पन्न हुई और उनकी वर्तमानता में ही वह स्थिर (अर्थात सुरक्षित) भी रही और रहती है | वह व्यक्ति मूर्ख हैं जो इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि प्रकृति में निर्माण का कार्य तो है, परन्तु एक एक विशेष अवसर पर कोई परमात्मा नामक अस्तित्व किसी नए अस्तित्व को प्रगट करता है | इन ना-समझों को यह पता नहीं कि प्रकृति के नियम लगातार काम करते हैं | वह रुकते नहीं | जो भी कोई अस्तित्व प्रगट होता है, वह प्रकृति की अटल विधियों के कारण ही प्रगट होता है | यह प्रकृति की अटल विधि है कि जिन सामानों में और जिन हालात में कोई विशेष अस्तित्व प्रगट होता है, वह उन्हीं सामानों और उन्हीं हालातों में सुरक्षित रहता है | यदि यह हालात किसी प्रकार मिलने बन्द हो जाएं, तो वह सब अस्तित्व धीरे धीरे विनष्ट हो जाएँगे | इसलिए जब एक एक कोशिका (Cell) के जीवित अस्तित्व धरती पर उत्पन्न हुए, तब वह अनुकूल हालत मिलने पर ही उत्पन्न हुए | पानी न होता तो वह उत्पन्न ही नहीं हुए होते, वायु-मण्डल न होता तो भी उत्पन्न न हो सकते थे, सूर्य की ज्योति और ताप न होता तो भी वह उत्पन्न न हो सकते थे | इसलिए एक एक समय में जब निर्माण के कार्य ने आगे क़दम उठाया है, तब हमें यह अध्ययन करने की आवश्यकता है कि किन हालात में प्रकृति ने छलांग मारी, किन हालात में प्रकृति की शक्तियों ने आगे क़दम उठाया, या किन हालात में निर्माण-कार्य आगे बढ़ा | अनुकूल हालात मिलते जाने पर इन्हीं एक 'कोशकीय-शरीर-धारी' अस्तित्वों से 'बहु-कोशकीय-शरीर धारी' अस्तित्व उत्पन्न तथा विकसित हुए | इन एक सेल रखने वाले जीवों से ही उद्भिद और पशु-जगत का आरम्भ हुआ | और इस समय जो उद्भिद और पशु-जगत की नस्लें वर्तमान हैं, वह इसलिए सुरक्षित और स्थिर हैं, क्योंकि उन सबके अस्तित्वों में उच्च परिवर्तन के विकासकारी नियम के अनुसार कार्य होता रहा है | और उन्हीं नस्लों ने उन्नति लाभ की जो विरोधी हालत का सामना कर सकी थीं, जो अपनी हस्तियों से न केवल हानिकारक प्रमाणित न होती थीं, किन्तु हितकर और सेवाकारी प्रमाणित होती थीं | इन नस्लों में जो एक एक अंग उत्पन्न हुआ है, वह भी सफलता के आधार पर उत्पन्न तथा सुरक्षित रहा है | पशुओं के विकास का यह सिलसिला भी करोड़ों वर्षों से लगातार चल रहा है | इस सिलसिले में भी हितकर प्रजाति के जीव् 'जत्थे' (समूह) की शक्ल में रहकर अपने अस्तित्वों को सुरक्षित रख सके | ज्ञान और बोध रखने वाले मनुष्यों को प्रकृति के निर्माण के कार्य में दो बातों का स्पष्ट ज्ञान हो सकता है, एक तो यह कि किसी जीवित गठन में **वही अंग सुरक्षित** रहा है जो उस गठन-प्राप्त अस्तित्व के लिए हितकर है | उसका ऐसा प्रत्येक अंग झड या विनष्ट हो गया कि जो उसकी गठन के लिए हानिकारक था | इसी प्रकार जब पशुओं के जत्थे सुरक्षित हो गए, तो उनमे भी वही नियम कार्य करता रहा | एक एक अस्तित्व की (चाहे वह वनस्पति, पशु अथवा मनुष्य प्रजाति का जीव हो) अपने आप में अपनी कोई कीमत नहीं, यदि वह दूसरे अस्तित्वों के साथ हितकर अंग बन कर न रहे, नहीं तो वह ख़ुद भी सुरक्षित नहीं रह सकता | यही कारण है कि गाय, भेड़ें और बकरियां आदि पशु नाना प्रकार के हिंसक पशुओं से घिरे रहकर भी अपनी नस्ल को सुरक्षित रख सके | इस जत्थे की जिंदगी का नियम यही रहा है कि जो पशु बीमार हो जाता था, वह जत्थे के साथ नहीं चल सकता था, इसलिए उसका जत्था या तो उसे मार डालता था, या वह ख़ुद ही जत्थे से अलग होकर, उसके लिए बोझ नहीं रहता था, और धीरे धीरे नष्ट हो जाता था | आपको इन सच्ची घटनाओं से अच्छी तरह यह ज्ञान हो सकता है कि एक एक गठनकारी जीवित अस्तित्व में वही अंग स्थिर (अर्थात सुरक्षित) रहे,

जो हितकर थे और जत्थे (समूह) में भी वही नस्ल स्थिर रह सकी, कि जिसके अंग उसकी नस्ल को मुख्य रखकर अपना जीवन व्यतीत करते रहे | निर्माण-कार्य का नियम तो दूसरों के लिए सेवाकारी होकर अपने जीवन को सफल बनाने का कार्य है | और इसलिए मैं पुन: दोहराता हूँ कि हितकर अंग ही किसी गठन में स्थिर (सुरक्षित) रहे | और हितकर या सेवाकारी अस्तित्वों की नस्ल ही प्रकृति मे स्थिर (सुरक्षित) रही |

प्रश्न:- क्या आपका तात्पर्य यह है कि आँखों और कानों जैसे हितकर अंग इसलिए उत्पन्न हुए और सुरक्षित रहे कि वह हितकर और सेवाकारी रहे थे ?

उत्तर:- जी हां | जीवित पदार्थ और पशु चौतरफा सामानों के साथ एकाकार रह कर ही ज़िंदा रह सकते थे | इसलिए नाना सम्बन्धों में पूर्ण मेल की अवस्था में होने के कारण अनुकूल हालात में उच्च-परिवर्तन लाभ करते गए | इस परिवर्तन के क्रम में वह ऐसे अंगों के स्वामी हो गए, जो अंग उनकी हस्ती को सुरक्षित रखने के लिए और उनका अनुकूल हालात से गठजोड़ करने के लिए आवश्यक थे | विकास-क्रम में एक एक अच्छे अंग के उत्पन्न होने और सुरक्षित रहने का यह इतिहास है | पशु-जगत के क्रम में एक और **अनोखी तथा नई** बात यह आरम्भ हो गई थी कि जहां कहीं कई शारीरिक अंगों ने प्रगट और स्थिर होना शुरू किया, वहां ऐसे अंग भी उत्पन्न होने शुरू हुए, **जो विविध प्रकार के हालात का ज्ञान और बोध** पाने के लिए आवश्यक थे | यही कारण है कि जहां नाना प्रकार के शारीरिक अंग उत्पन्न हुए, वहां मनुष्य के दिमाग़ में मानसिक-शक्तियां भी उत्पन्न हुईं, और जब प्रकृति के निर्माण-कार्य ने मनुष्य की शारीरिक-गठन को अंगों के विचार से पूर्ण कर दिया, तब उसका कार्य शरीर को लेकर आगे चलने की आवश्यकता न रही | इसलिए फिर **प्रकृति के निर्माण-कार्य ने एक और विकास की नई राह पकड़ी** और ऐसी शक्तियां उत्पन्न हो गईं कि जो इस गठन के लिए अधिक हितकर होने वाली थीं, अर्थात मानसिक-शक्तियां | जिन वानरों की नस्लों में से मनुष्य की प्रजाति उत्पन्न हुई, उन प्रजातियों की शारीरिक-बनावट की मनुष्य की शारीरिक-बनावट (अर्थात अस्थि-पिंज्जरों) के साथ तुलना करें, तो हमें आश्चर्य होगा कि इन में यदि कोई अन्तर है, तो केवल मानसिक-शक्तियों का अन्तर है, न कि शारीरिक अंगों का | मनुष्य ने वानरों की नस्लों पर जो विशेषता लाभ की, वह मानसिक उन्नति (बुद्धि-शक्ति) के कारण लाभ की, न कि शारीरिक बल के कारण | इन वानरों की नई नस्ल में से जो नस्ल मनुष्यों की हो गई, उस मे प्रारम्भिक काल में कोई विशेषता न थी, अन्तर केवल इतना था कि जहां बाकि नस्लों में **मानसिक-उन्नति का सिलसिला** ठहर हुआ था, वहां इस नस्ल में उन्नति का सिलसिला (कार्य) शुरू हो गया | उनमे यह परिवर्तन अनोखे प्रकार के निर्माण का कार्य था | यह प्रकृति का अद्भत चमत्कार था | परन्तु आरम्भ में यह अनोखापन दिखाई नहीं देता था | हज़ारों और लाखों वर्ष तक मनुष्य बिलकुल जंगली और नंग-धड़ंग रहा | पशुओं की तरह बेघर और बे-घाट रहा | उसको न खेती का बोध था, न कपड़ों का | पशुओं की तरह बच्चे पैदा कर लेता और पशुओं की तरह ही बच्चे पल जाते थे | परन्तु निर्माण का कार्य बराबर अपना काम कर रहा था | विकास-क्रम अपना कार्य करने से रुक नहीं सकता था, क्योंकि निर्माण का कार्य रुक नहीं सकता | इस सच्चाई को बार बार स्मरण करना चाहिए | इन जंगली मनुष्यों में से कुछ श्रेणियां उन्नति के मार्ग पर पड़ गईं, और उन्हों ने धीरे धीरे जो उन्नति की, वह बहुत हैरान करने वाली है | यह बेघर अस्तित्व लाखों मकानों के बनाने वाला हो गया | यह इधर उधर भटकने वाला प्राणी गाँव और नगरों को बनाने और आबाद करने वाला हो गया | यह प्रकृति के ही फलों और फूलों का आधार रखने वाला प्राणी खेतों और बागों को उत्पन्न करने वाला तथा उनका स्वामी हो गया | यह सैंकड़ों के जत्थे में रहने वाला प्राणी (अर्थात मनुष्य) करोड़ों के जत्थे में रहने वाला बन गया | यह नंग-धड़ंग रहने वाला प्राणी कपड़े बनाने वाली कलों (अर्थात मशीनों) के बनाने वाला हो गया | यह अज्ञानता का पुतला लाखों पुस्तकों के लिखने वाला बन गया | जो बोल नहीं सकता था, वह सैंकड़ों भाषाओं और बोलियों के उत्पन्न करने वाला हो गया | जो प्रकृति की प्रत्येक आपदा से डरता था, वह क्या पृथ्वी, क्या समुन्द्र और क्या वायु-क्षेत्र (आकाश) का स्वामी हो गया | अपने शारीरिक-रोगों के दूर करने वाला हो गया | अपनी आयु को लम्बा करने के नियमों को जानने वाला बन गया | कहां इसकी वह जंगलीपन की अवस्था और कहां इसका वैज्ञानिक बन जाना ! **यह सब चमत्कार मनुष्य की उन्नतशील मानसिक-शक्तियों की कारण ही उत्पन्न हुए हैं** |

प्रश्न:- मैंने आपके विस्मय-जनक उल्लेख को सुन लिया | आपने बहुत कृपा की जो मुझे प्रकृति के निर्माण-कार्य (अर्थात विकास-प्रक्रिया) का दर्शन कराया है | प्रकृति के निर्माण-कार्य के जो चमत्कार हैं, उनकी तुलना में किसी हादी के चमत्कार क्या महत्त्व रखते हैं ? उन मनुष्यों ने तो करामातो (चमत्कारों) की गप्पें ही मारी हैं और अपने आपको बुरी तरह से अन्धा बनाया तथा प्रमाणित किया है | इस विशाल प्रकृति के निर्माण-कार्य के सन्मुख किसी हादी या नबी की हस्ती ही क्या है, वह तो सारे के सारे इस कार्य के ज्ञान से ही पूर्णत: शून्य रहे हैं | मिथ्या-मत तो वास्तव में विपथ-गामी हैं | मूर्खता से भरी हुई चमत्कार की गप्पों को दोहराते हैं, और एक एक हस्ती में जो प्रकृति का सत्य तथा आश्चर्यजनक चमत्कार वर्तमान है, उसका दर्शन नहीं करते | मैं तो अपने आपको बड़ा धन्य समझता हूँ कि आपकी कृपा से मुझे यह ज्ञान मिला | क्या प्रकृति का निर्माणकारी-कार्य अपना सब 'कार्य' पूर्ण कर चुका है ?

उत्तर:- मैं आपके इस प्रश्न को सुन कर आश्चर्य-चकित हूँ | प्रकृति के निर्माण का कार्य कभी बन्द नहीं हो सकता, वह तो अनादी है, और अटल है | इतना तो सत्य है कि मनुष्य-जगत में उसकी असाधारण मानसिक उन्नति के साथ साथ मनुष्यों ने जब सुख दु:ख के भावों से परिचालित होकर सुख के पाने के लिए नाना प्रकार के अनुराग बढ़ाये, और दु:ख से बचने के लिए नाना प्रकार की घृणायें उत्पन्न कर लीं, तब वह उनके बुरी तरह से दास बन गए | वह अपनी सुध-बुध को खो बैठे और बुरी तरह से खो बैठे | उनका (अर्थात मनुष्यों का) असाधारण ज्ञान उनके अपने लिए ही मुसीबत का कारण हो गया |

प्रश्न:- वह क्यों ?

उत्तर:- वह इसलिए कि उनके जीवन के परिचालक-भाव नीच-अनुराग और नीच-घृणायें हो गए |

प्रश्न:- इन सुखों का स्वाभाव क्या है ?

उत्तर:- इन सुखों का स्वभाव यह है कि यह मनुष्य को सच्चाई और भलाई का शत्रु और मिथ्या और पाप का अनुरागी बना देते हैं |

प्रश्न:- मनुष्य का यह रूप तो निर्माणकारी कार्य के पूर्णत: विरुद्ध है ?

उत्तर:- जी हां, यही कारण है कि इन भावों से परिचालित होकर मनुष्य एक-दूसरे के सम्बन्ध में हितकर बनने के स्थान में एक-दूसरे के जानी दुश्मन बने हुए हैं, और उस का परिणाम यह है कि लाखों और करोड़ों जन बुरी तरह से विनष्ट हो रहे हैं |

प्रश्न:- ऐसा क्यों ?

उत्तर:- वह इसलिए कि जो जन बिगाड़ने या विनाश करने के काम में लग जाते हैं, वह विनाश-क्रम की परिधि में आ जाते हैं | ऐसे जन केवल मनुष्यों को नष्ट ही नहीं करते, बल्कि प्रजातियों का भी नाश कर देते हैं | इसलिए जब तक प्रत्येक मनुष्य को यह बोध न हो कि औरों की रक्षा में मेरी रक्षा और औरों की भलाई करने में मेरी भलाई है, औरों के विकास करने में मैं ख़ुद विकास पाता हूँ, तब तक ऐसा जन विनाश के चक्कर से बाहर निकलने की कोई आकांक्षा नहीं करेगा | मिथ्या-मतों ने तो करोड़ों जनों की आंखें (अर्थात आंतरिक-बोध) फोड़ दी हैं | उन्होंने अपने अनुयाइयों को यह मिथ्या-शिक्षा दी है कि केवल तुम्हारे मत वाले तुम्हारे भाई हैं, बाकि सब तुम्हारे शत्रु हैं | इसलिए एक एक मत वालों ने दूसरे मत के निर्दोष जनों पर बहुत बड़ा अत्याचार किया है, और यह प्रमाणित किया है कि **उनका मत विनाशकारी मत है** | इसलिए इस मत के अनुयाई जनों की जितनी हानि हुई है और होगी, उतनी मजलूम (दबी-कुचली) जातियों की हानि नहीं होगी |

प्रश्न:- यह सत्य है, और मैं हैरान हूँ कि मनुष्यों के सामने यह सच्चाई प्रगट क्यों नहीं हुई, कि प्रत्येक अस्तित्व की अपनी भलाई अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में हितकर तथा सेवाकारी होने में है, न कि हानिकारक बनने में | उनका अपना शरीर उनके सामने रहा है, और वह देखते रहे हैं कि यदि उनके शरीर का कोई अंग शरीर के लिए सहायकारी तथा सेवाकारी न रहे, तो विनष्ट हो जाता है | एक एक मनुष्य विशाल प्रकृति का अंग होकर, यदि उसके लिए हितकर प्रमाणित न हो, तो क्या वह विनष्ट हो जाएगा ?

उत्तर:- निस्संदेह | यह बिलकुल सत्य है, परन्तु यह सत्य मनुष्य-मात्र से छुपा हुआ है | ऐसा कोई धर्म-संस्थापक व हादी उत्पन्न नहीं हुआ कि जो इस सत्य को देखता हो और इसका प्रचार करता हो |

यदि कोई ऐसा संस्थापक होता, तो वह अपने मत में ऐसे घृणा से भरे हुए शब्दों का प्रचार न करता, जैसा कि एक एक हादी या संस्थापक ने किया है | अर्थात वह दूसरे मत के लोगों को काफिर न कहता, वह उनको मलेच्छ न बताता, वह उनको apostate जैसे घृणा-सूचक शब्द न कहता | वह अपने नारकीय विचारों का प्रकाश न करता | वस्तव में आरम्भ-काल में उत्पन्न हुए संस्थापक व हादी इससे अधिक और कर भी क्या सकते थे ? कुछ नहीं, कुछ नहीं !

प्रश्न:- तो फिर यह अवस्था किस प्रकार दूर हो ?

उत्तर:- यह अवस्था तो दूर होने के लिए ही है | और इसका समाधान भी प्रकृति के निर्माणकारी कार्य में ही हो सकता है, और उसकी पूर्ती प्रकृति ने भगवान् देवात्मा के आविर्भाव में ही रक्खी है |

प्रश्न:- वह किस प्रकार ?

उत्तर:- इसका उत्तर आगामी अध्याय में दिया गया है |

०००००

8
प्रकृति ने मनुष्य के परम कल्याण के लिए क्या समाधान निकाला और प्रकाशित किया है ?

०००

प्रश्न:- आपकी बातचीत से मेरे सामने यह सत्य प्रगट हुआ है कि सारी मानवता **आत्म-अंधकार** में बुरी तरह ग्रस्त है | मनुष्य-मात्र नीच अनुरागों और नीच घृणाओं की बेड़ियों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है तथा वह साधारणत: उच्च सात्विक-भावों से शून्य है| कृपया बताएं कि अब प्रकृति ने 'मनुष्य-आत्माओं' की इस दुर्दशा को दूर करने के लिए क्या समाधान निकला है ?

उत्तर:- यदि आपको प्रकृति के निर्माण-कार्य का ज्ञान होता, तो आप निश्चित तौर पर यह विश्वास रखते और प्रगट करते कि मनुष्य-मात्र का इस दुर्दशा से उद्धार होना ही होगा, नहीं तो निर्माण-कार्य (अर्थात विकास-क्रम) का जो उद्देश्य है, वह पूरा ही नहीं होता | तथा विकासक्रम अर्थ-हीन शब्द बन कर रह जायेगा |

प्रश्न:- प्रकृति के निर्माण-कार्य का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर:- निर्माण-कार्य का उद्देश्य यह है कि अपूर्ण गठन के पूर्ण होने का प्रबंध हो | अनमेल के मिट जाने और मेल के आने के हालात उत्पन्न हों | चारों-जगतों (अर्थात भौतिक-जगत, वनस्पति-जगत, पशु-जगत तथा मनुष्य-जगत) का आपस में जीवन-दायक उच्च मेल स्थापन हो | और जो जो अस्तित्व इन चारों जगतों में प्रगट होते हैं, वह हानिकारक न रहने की अवस्था में पहुँच जावें, न्याय की शक्तियों के वारिस (अधिकारी) बन जावें, और विनाश करने वाली शक्तियों से मुक्त हो जावें | **प्रकृति के निर्माण-कार्य का यह उद्देश्य विकास-क्रम के नियम में निहित है, जिसे हम सबको समझने की बहुत बड़ी आवश्यकता है** |

प्रश्न:- मनुष्य में जो शारीरिक-गठन अपनी पूर्णता को पहुँच चुकी है, वह किस प्रकार सम्भव हुआ ?

उत्तर:- प्रकृति के निर्माण के सिलसिले में ही मनुष्य की शारीरिक-गठन पूर्णता को प्राप्त हुई है |

प्रश्न:- मनुष्य की मानसिक शक्तियों में असाधारण प्रकाश और विकास किस प्रकार हुआ?

उत्तर:- मनुष्य की मानसिक-शक्तियों की उत्पत्ति और उन्नति प्रकृति के निर्माण-कार्यों के सिलसिले में ही हुई है | विशाल प्रकृति का यह निर्माण-कार्य उसकी गुप्त 'क्रियाशाला' (**Laboratory**) में आश्चर्यजनक चमत्कार पैदा करता है | जो विशेष हस्तियाँ प्रकृति के इस विशाल कार्य को देख तथा उपलब्ध करके उसके छिपे हुए सत्यों और तत्वों की खोज में लग गईं, उनको ही प्रकृति के न केवल विशाल और असीम होने का, बल्कि सत्यों और तत्वों की **पूर्ण कान** (अर्थात भंडार) होने का बोध हुआ | उन्होंने ही यह उद्घोषणा की कि हे मनुष्य ! प्रकृति ही सब प्रकार के सत्य-ज्ञान का भण्डार है | यदि

सत्य ज्ञान खोजना है तो उसका ही दर खटखटाओ | कल्पित खुदा या परमात्मा के कल्पित प्रेम में अपना समय नष्ट मत करो |

प्रश्न:- तब आप क्या यह मानते हैं कि मनुष्य की दुर्दशा आखिरकार दूर होनी ही थी ?

उत्तर:- जी हां | जिनके सामने प्रकृति के निर्माण-कार्य की वास्तविकता खुल गई हो, वह यह दावे से कहेंगे कि बुराई मिटने के लिए है, झूठ नष्ट होने के लिए है, मिथ्या-विश्वास मिटने के लिए हैं | आत्म-अन्धापन और अज्ञानता नष्ट होने के लिए है | आत्मिक-सत्य ज्ञान फैलने के लिए है, सत्य और शुभ का राज्य आने के लिए हैं |

प्रश्न:- मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि प्रकृति कोई मनुष्य नहीं, ईश्वर नहीं, कोई होश रखने वाला देवता नहीं, फिर भी आप प्रकृति से होश की बातों की आशा क्यों रखते हैं, और ऐसी बुलंद (ऊंची) आवाज़ किस बूते पर निकालते हैं, कि मिथ्या और बुराई का राज्य जाएगा, और सत्य और शुभ का राज्य आयेगा ?

उत्तर:- यह बिलकुल सत्य है कि 'प्रकृति' ईश्वर नहीं, कोई होश रखने वाला अस्तित्व भी नहीं | परन्तु प्रकृति एक असाधारण हस्ती है कि जिस के रूप का ज्ञान पाकर और उसमे वर्तमान शक्तियों का ज्ञान पाकर मनुष्य वह कुछ जान तथा बता सकता है कि जो कोई खुदा या पैगम्बर नहीं बता सकता | नैपचून नामक ग्रह के अस्तित्व का होना एक सौ वर्ष पहले दो वैज्ञानिकों ने बताया था | वह वैज्ञानिक गणितज्ञ थे | उन्होंने सब ग्रहों का प्रभाव इस पृथ्वी पर गणित के अनुसार जान लिया था, फिर भी उनकी गणना में कुछ फ़र्क पड़ता था, जिसके कारण चंद्र एवं सूर्य ग्रहण लगने के समय का ठीक ठीक पता नहीं चल पाता था | वह प्रकृति के नियमों की अटलता को जानते थे, इसलिए उन्हों ने पूर्ण विश्वास के साथ यह बताने का साहस किया कि जिन ग्रहों का हमें ज्ञान है, उनके भिन्न कोई और (अन्य) गृह भी है, जिसके कारण सारे ग्रहों की स्थितियों का ठीक आकलन नहीं हो पाता, तथा चंद्र-ग्रहण एवं सूर्य-ग्रहण के बारे हमें ठीक समय का ज्ञान नहीं हो पाता | प्रकृति के नियमों का कार्य अनिवार्य है, अत: जब उसकी विधि पूर्ण होगी, तब जो कुछ इस विधि के द्वारा होना होगा, वह होकर रहेगा | अब मनुष्य की खुराक 'झूठ' तथा 'बुराई' नहीं | 'झूठ' केवल झूठ ही है, इसलिए वह सत्य की ज्योति में ठहर नहीं सकता | मनुष्य की जैसी कुछ आत्मिक-गठन है, इसका प्राकृतिक-स्वाभाव इसे सत्य की ओर ले जाने का है, क्योंकि झूठ में इसकी मृत्यु है | यदि मनुष्य की आत्मिक-गठन में यह बात न होती, तो विज्ञान का कोई भी सत्य दुनिया में कभी स्थापित न हो सकता| बेशक गलेलियो को कारागार में बन्द करके समाप्त किया गया था, परन्तु उसकी खोजी गई सच्चाई को उस समय के मिथ्या परायण लोग क्यों न दबा सके ? वह इसलिए कि प्रकृति में मनुष्य का राज्य नहीं, प्रकृति में निर्माणकारी कार्य (अर्थात विकास-क्रम) का राज्य है | प्रकृति के निर्माण-कार्य में ऐसे जनों का उत्पन्न होना ज़रूरी था कि जो एक एक पहलू में मिथ्या को त्याग और सत्य को ग्रहण कर लेवें | ब्रूनो नामक वैज्ञानिक को प्रकृति के निर्माण-कार्य ने प्रगट किया | मिथ्या परायण लोगों ने उसको ज़िंदा जला दिया | यह सत्य है कि ब्रूनो न रहा, परन्तु उसने जिस सत्य को प्रगट किया था, वह आज जीवित है | इसी प्रकार डार्विन को दबाने का कोई थोड़ा प्रयास नहीं किया गया | खुदा-परस्तों (अर्थात ईश्वरवादी) का तो प्राय: सारा समूह पागल हो गया | वह डार्विन की सच्चाई में अपने खुदा का अपमान समझते थे | खुदा-परस्तों के हादियों ने जो शिक्षा दी थी, वह डार्विन की सच्चाई के सामने हास्यप्रद थी | लाखों और करोड़ों खुदा-परस्तों ने दांत पीसे, परन्तु जय किसकी हुई ? सूर्य की ज्योति के सामने धुन्ध के बादल कब तक खड़े रहते ? प्रकृति के विकास-क्रम में ऐसे जन उत्पन्न होते गए, जो प्रकृति की अधिक से अधिक खोज करते गए, और जिन्होंने सत्य की ऐसी शाहादतें (प्रमाण) पेश कीं, कि मिथ्या की कमर टूट गई | प्रकृति के निर्माण-कार्य के सिलसिले में ऐसे मनुष्यों का उत्पन्न होना अवश्यम्भावी है कि जो सत्य की ज्योति में आंखें खोलने के अधिक से अधिक योग्य होते जावें | प्रकृति में ऐसे अस्तित्व उत्पन्न होते ही रहेंगे, जो सब प्रकार की मिथ्याओं की पोल खोलते ही रहें | यदि शोक होता है तो केवल मिथ्या परायण जनों पर, क्योंकि वह मिथ्या के अन्धकार में पड़े रहना चाहते हैं और उसी में रहकर विनष्ट हो रहे हैं |

इसी प्रकार अन्य सब बुराइयों का हाल है | गुलामी की बुराई सदियों तक जारी रही, परन्तु उस बुराई के विरुद्ध समय समय पर अच्छे जन उत्पन्न होते गए, कि जो गुलामी की बुराई को मिटाने

का संग्राम करते रहे | प्रकृति के ऐसे 'रत्न' प्रारम्भिक-काल में बहुत थोड़े थे | किन्तु समय के साथ साथ बढ़ने लगे, और ऐसा समय आया कि इस अन्याय को दूर करने के लिए कई श्रेष्ट हस्तियाँ उत्पन्न हो गईं | लाखों जनों ने ऐसी हस्तियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई, उनको बहुत सताया और तड़पाया गया | उनकी हत्या करने के षड्यंत्र किये गए | परन्तु जब प्रकृति ऐसी किसी श्रेष्ट हस्ती को उत्पन्न करती है, तब उसको ऐसी विशेष-शक्ति के साथ उत्पन्न करती है, जिसके द्वारा वह लाखों करोड़ों जनों पर विजयी रहता है | समय आया कि जब गुलामी पूर्णतया दूर हो गई | करोड़ों गुलाम आज़ाद किये गए और मनुष्य-मात्र के माथे से यह कलंक का टीका सदा सदा के लिए मिट गया | इसी प्रकार अन्य सैंकड़ों प्रकार की बुराइयों का हाल रहा है, जो मनुष्यों की प्रत्येक सामाजिक-गठन (Social Organizations) में उत्पन्न हो गईं | यथा;

भारत वर्ष में **सती की भयानक प्रथा** आई, परन्तु **विकास-क्रम** की विरोधी होने के कारण वह एक दिन इस धरती से मिट गई | हमारे देश में विधवओं पर सैंकड़ों वर्ष अत्याचार होता रहा | विधवओं की शादियाँ बल-पूर्वक रोकी जाती रहीं | लाखों और करोड़ों जन ऐसी बुराइयों के साथी रहे | जो बुराई के साथी होकर मृत्यु को प्राप्त हुए, वह तो कालिख़ का टीका अपने माथे पर लेकर इस दुनिया से विदा हुए, परन्तु इन लाखों और करोड़ों बुराई के साथियों की तुलना में प्रकृति ने अपने निर्माण-कार्य के सिलसिले में ऐसे भी जन उत्पन्न किए, जिन्होंने इस बुराई के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई, ऐसी श्रेष्ट हस्तियों के शब्द ज्योति और शक्ति से भरे हुए होते थे | उन्होंने औरों में नई जान फूंक दी, तथा इस विषय में अन्धकार मिटने लगा | सदियों से फैली हुई एक अन्यायकारी प्रथा का भयानक रूप नज़र आने लगा | इस तरह भलाई के साथियों का जोश और उत्साह बढ़ता गया, और अन्त में एक एक बुराई को जड़ से उखाड़ दिया गया |

इसी प्रकार **बाल-विवाह** का भयानक भंवर जारी रहा, जिस में छोटी आयु के लाखों बालकों और बालिकाओं की आहुति दी जाती रही | और ऐसे लाखों और करोड़ों बुराई के प्रेमक अपने अंधकारमय-जीवन से नीच-प्रभावों का धुआं निकाल निकाल कर अन्धकार, अज्ञान, और अन्याय के बादल उत्पन्न करते रहे | उनके विरुद्ध प्रकृति के निर्माण-कार्य के द्वारा कुछ ऐसी श्रेष्ट हस्तियाँ उत्पन्न हुईं, जिनकी आवाज़ में बिजली जैसी कड़क थी | जिनके लेखों में असाधारण शक्ति थी, और जिनके आन्दोलनों में विशेष प्रकार की झलक थी | आखिरकार वही हुआ जो होना था | अर्थात बुराई के बादल छंटने लगे | बुराई के साथी निर्बल और निस्तेज होने लगे | उनके हथियार गिरने लगे, और निर्माणकारी-कार्य का यह बोलबाला होने लगा कि बुराई मिटने के लिए है और भलाई आने के लिए है |

अब यदि आप इन थोड़ी सी घटनाओं को सुनकर कोई परिणाम निकाल सकते हैं – तो वह यह है कि बाकी सब बुराइयां भी नष्ट होने के लिए हैं | मांसाहार दुनिया से जाएगा | बेशक 'मांसाहारी जन' कालिख का टीका अपने माथे पर लेकर मरेंगे, परन्तु पशुओं पर यह अत्याचार सदा के लिए जारी नहीं रहेगा | बद-दयानती दुनिया से मिट जायेगी, यदि अपमानित होना है, तो बद-दयानत जनों ने, यदि प्रकृति की फटकार पड़नी है, तो बद-दयानत जनों पर | इसी प्रकार बद-चलनी (व्यभिचार) दुनिया से दफा होने के लिए है | **काम-अनुराग** पूजा की चीज़ नहीं, **बेवफाई** पूजा की चीज़ नहीं | जो इस काम-अनुराग के पुजारी हैं, वह इस लोक में भी कई स्त्रियाँ रखेंगे और परलोक में भी स्त्रियों के स्वपन ही देखेंगे | वह काम-अनुराग के कोढ़ से कोढ़ी हो जायेंगे, वह इस नीच-अनराग के इस **आत्मिक-कोढ़** से अपमानित होते रहेंगे | आने वाली नस्लों की दृष्टि में वह पशुओं से भी निकृष्ट समझे जायेंगे | यदि कोई इस बुराई के शिकार होंगे, तो वह ऐसे ही रोगी आत्मा होंगे | उनको स्मरण रखना चाहिए कि पशु-पन जाने के लिए है | जिस प्रकार भूख बुरी चीज़ नहीं, परन्तु चोरी बुरी चीज़ है | खाना बुरा नहीं, लेकिन पेटू बनना बुरा है | इसी प्रकार विवाह का सम्बन्ध बुरा नहीं, लेकिन काम-अनुरागी बनना बुरा है | इर्ष्या तथा द्वेष का कोढ़ नष्ट होने के लिए हैं | घमंड तथा नीच-घृणा जाने के लिए है | स्वेच्छाचारिता जाने के लिए है | बुरा हाल तो उनका हुआ, जो इनके गुलाम थे | नाश तो उनका हुआ, जिन्होंने उनको अपने जीवन में पाला और बढ़ाया | समय के साथ साथ यह सब बुरी शक्तियां और बुरे भाव मिटने के लिए हैं | इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले विश्व में कहीं न कहीं उत्पन्न होते रहे हैं, परन्तु शुरू शुरू में उनकी आवाज़ इतनी शक्ति-शाली नहीं थी कि इन बुराइयों के गुलाम डर जाते | अंततः

प्रकृति के उसी विकासकारी कार्य के द्वारा एक ऐसा अनोखा और अद्वितीय आविर्भाव उत्पन्न हुआ कि जिसके हृदय में कुल मिथ्याओं और कुल बुराइयों को मिटाने के लिए पूर्ण बल वर्तमान है | जिनके जीवन्त-शब्दों की गूँज से बड़े बड़े पापी हिल जाते रहे हैं, और उनके पाँव उखड़ जाते रहे हैं, उनके शरीर कांपने लग जाते रहे हैं | और कई बार ऐसे जन उनके पास से उठकर दूर भाग जाते रहे हैं, कि कहीं वह अपनी प्रिय बुराइयों को छोड़ न बैठें | और शेष कितने ही जन अपनी बुराइयों पर शर्मसार होते और अपने आपको कोसते रहे हैं कि हाय ! इन बुराइयों ने हमें बुरी तरह से बरबाद कर दिया | और वह उनको त्यागने के लिए मजबूर होते रहे हैं |

प्रश्न:- ऐसी प्रत्येक झूठ तथा बुराई के विरुद्ध नई आवाज़ किस ने उठाई ?

उत्तर:- इस आवाज़ को उठाने वाले जन थे **विज्ञान-मूलक सत्य धर्म के प्रवर्तक परम पूजनीय भगवान् देवात्मा** |

प्रश्न:- क्या उनका यही विश्वास है कि बुराई मिटने के लिए है, और मिट कर ही रहेगी | झूठ मिटने के लिए है, और मिट कर ही रहेगा | सत्य और शुभ जय पाने के लिए है, और वह अवश्य जय पायेंगे ?

उत्तर:- जी हां | उन्होंने फरमाया था:-

"यहां देव-राज आयेगा - मुझको यकीन है,
देवत्व ही फतह पायेगा – मुझको यकीन है |"

उन्होंने यह भी बताया था:-

"दुनिया-परस्त लाख मुक़ाबिल में हों खड़े,
आख़िर शिकस्त खायेंगे – मुझको यकीन है |"

प्रश्न:- यह असाधारण घोषणा उन्होंने किस आधार पर की ?

उत्तर:- अपनी अद्वीतित देव-शक्तियों के बल के आधार पर |

प्रश्न:- देव-शक्तियों के बल से आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:- देव-शक्तियों के बल से मेरा तात्पर्य यह है कि भगवान् देवात्मा को ही प्रकृति ने देव-शक्तियां बीज रूप में देकर इस विश्व में आविर्भूत किया है | ज्यों ज्यों यह देव-शक्तियां उनके हृदय में उन्नत होती गईं, त्यों त्यों इन देव-शक्तियों की महिमा उनके सामने सारी दुनिया की तुलना में असाधारण रूप में प्रकाशित होती गई | उन्होंने देव-शक्तियों का सुन्दर और जीवन-दायक रूप देखा, उनका देव-ज्योति और देव-तेज उत्पन्न कर्ता रूप देखा | इस देव-ज्योति में उन्होंने सारा आत्मिक-जगत देखा | अर्थात उन सब अति सुन्दर आत्मिक-सत्यों और तत्वों का दर्शन किया, जिनका आत्मा के जीवन और मृत्यु के साथ गहरा सम्बन्ध है | उस **देव-ज्योति** में उन्होंने मनुष्य-मात्र की **आत्मिक-अन्धता** का वास्तविक हाल देखा | उनकी आत्म-अन्धता का हाल देख कर देवात्मा के दुःख की कोई सीमा न रही | आत्म-अन्धता के कारण जो मनुष्य अन्धेरे में ठोकरें खा रहे थे, और नाना सम्बन्धों में टकराहट उत्पन्न कर रहे थे, उस टकराहट का भयानक रूप देखा | आत्म-अन्धकार में रहकर जो करोड़ों मनुष्य अपने भीतर 'नीच-अनुरागों' और 'नीच-घृणाओं' को उत्पन्न करके मदहोश और पागलों की तरह अपनी शारीरिक तथ **आत्मिक-पूँजी** (अर्थात जन्मजात उच्च-भावों) को लुटा रहे थे और हिन्सक तथा खूंखार पशुओं की तरह अपने साथी मनुष्यों और पशुओं की हत्याएं कर रहे थे, वह भयानक दृश्य भी देवात्मा ने अपनी इस देव-ज्योति में देखा | उनका देव-हृदय परम दयालु होने के कारण बेचैन हो उठा | और जहां एक ओर उनके सामने झूठ तथा बुराई का भयानक रूप खुला, वहां दूसरी ओर उन्हें यह भी प्रतीत हुआ कि यह सारा दृश्य 'मनुष्य-अत्माओं' में से देव-ज्योति के आने से ही मिट सकेगा | अन्धेरा 'ज्योति' के सामने खड़ा नहीं रह सकता, इसलिए वह मिटने के लिए है | जिस अँधेरे में **आत्मिक-रोग** उत्पन्न होते हैं, वह आत्मिक-रोग अँधेरे के मिटने से ही मनुष्यों को अपने वास्तविक रूप में नज़र आ सकेंगे | और ज्यों ही ऐसे उच्च बोध की अवस्था पैदा होती जायेगी, त्यों ही मनुष्य अपनी प्रकृति से लाचार होकर इन आत्मिक-रोगों से मुक्ति पाना चाहेंगे, और भगवान् देवात्मा की ओर आकृष्ट होने लगेंगे | भगवान् देवात्मा ने अपनी **देव-शक्तियों** के रूप को देख कर पूरे दावे से यह फरमाया है कि इन देव-शक्तियों के कार्य से ही मनुष्य-जगत में से सब प्रकार की मिथ्या और सब प्रकार की बुराई मिट कर रहेगी | भगवान् देवात्मा ने **देव-शक्तियों के असीम देव-बल** का भीदर्शन किया है और

उनके सन्मुख यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि असीम **देव-बल** के सामने बुराई तथा झूठ का राज्य ठहर ही नहीं सकता | उनको प्रकृति ने इन देव-शक्तियों को देकर इस योग्य रखा है कि वह किसी भी हालत में झूठ तथा बुराई के सामने पराजित नहीं हो सकते | भगवान् देवात्मा तो जय पाने के लिए हैं, उनका **विजय-पताका** उनके विजयी होने का बाह्य्क चिन्ह है |

संक्षेप में कहा जाए तो **सच्चा गुरु तथा आध्यात्मिक-पथ-प्रदर्शक** वह आत्मा होता व हो सकता है कि जो प्रकृति की **विकास प्रक्रिया** की अटल विधियों के अनुसार अपने आत्मा में सारे के सारे सात्विक-भाव उत्पन्न तथा विकसित कर सका हो | इसके पश्चात **अद्वितीय देव-शक्तियां** अर्थात (१) सत्य के प्रति पूर्णाग अनुराग, (२) असत्य के प्रति पूर्णाग घृणा, (३) शुभ के प्रति पूर्णाग अनुराग तथा (४) अशुभ के प्रति पूर्णाग घृणा मूलक देव-भावों को पूर्ण विकसित अवस्था में लाभ कर सका हो, क्योंकि इन अद्वितीय भाव-शक्तियों के मिलने से ही कोई "**मनुष्यात्मा**" अपनी गठन में पूर्णता लाभ करता है | विश्व में **भगवान् देवात्मा** ही वह अकेली हस्ती है जिनकी **आत्मिक-गठन पूर्णता** लाभ कर सकी है | जबकि बाकी सब मनुयात्मायें अधूरी आत्मिक-गठन लिए हुए हैं | जो आत्मिक-अंग सारी मानवता को मिले भी हैं, वह भी अपनी गठन की दृष्टि से बहुत टेढ़े-मेढ़े हैं | सारी मानवता आत्मिक-रोगों से भी बुरी तरह ग्रस्त है | इसलिए <u>एक पूर्ण गठन-प्राप्त आत्मा अर्थात देवात्मा को छोड़ कर और किसी मनुष्यात्मा को प्रकृति ने यह सौभाग्य प्रदान नहीं किया था कि वह सत्य-धर्म की विज्ञान-मूलक खोज कर सके</u> |

———

9
विकास-क्रम में देवात्मा का आविर्भाव अनिवार्य था |

०००००

प्रश्न:- मैं चाहता हूँ कि आप कृपा करके मुझे यह स्पष्ट करें कि देवात्मा का आविर्भाव किस विधि से हुआ ?

उत्तर:- विकास-क्रम में भगवान् देवात्मा का अविर्भाव होना अनिवार्य था | जिस विधि से इस अविर्भाव ने प्रकाश पाया, वह विधि प्रकृति की अपनी विधि है, जिसको हम **विकास-क्रम की विकास-प्रक्रिया (अर्थात प्रकृति के निर्माण का कार्य)** के नाम से जानते हैं |

प्रश्न:- आपके अनुसार निर्माण का कार्य किसी समझ-बूझ रखने वाले अस्तित्व की शक्ति के द्वारा नहीं होता ? फिर भी आप उसके सम्बन्ध में यह शक्तिशाली दावे किस आधार पर करते हैं कि ऐसा होकर ही रहेगा, ऐसे विश्वास की सुनिश्चितता आपको किस प्रकार प्राप्त हो जाती है ?

उत्तर:- देखने और अच्छी तरह समझने से |

प्रश्न:- वह किस प्रकार ?

उत्तर:- मुझे यह ज्ञान है कि यदि आग पर बर्तन रख जाएगा, तो वह गर्म हो जाएगा | जलने वाली वस्तु जब भी आग के संपर्क में आएगी, वह तब ही वह जल उठेगी | मुझे इस बात का इसलिए विश्वास है, क्योंकि यह प्रकृति का नियम है, जो कि विश्व्यापी तथा अटल है | यह अपना स्वभाव बदल नहीं सकता | जहां यह नियम पूरा होगा, वहां ऐसा ही स्वभाव प्रगट करेगा | ज्यों ही यह कारण न रहेगा, त्यों ही इसके सम्बन्ध में ऐसा कार्य भी बन्द हो जाएगा | यह प्रकृति का ऐसा सत्य है कि जिसके सम्बन्ध में ज्ञानी होकर मनुष्य विश्वास कर सकता है | यदि यह नियम समझ-बूझ वाला होता, तो इसके सम्बन्ध में निश्चित बात हो ही नहीं सकती थी | आप देखें कि परमात्मा एक सर्व-ज्ञानी पुरुष माना जाता है, परन्तु उसकी बात पर कोई भरोसा नहीं | वह ज्ञान देता है तो उलटा, बातें बताता है तो जुदा जुदा और एक दूसरे के विरुद्ध | संसार में वह कभी मूसा को भेज देता है, तो कभी ईसा को | कभी मुहम्मद साहिब को भेज देता है, तो कभी बहाउल्हा को | उसकी ओर से भेजा गया प्रत्येक पैगम्बर अपनी अपनी महिमा

का नारा लगाता है, और यह कहता है कि खुदा ने उसको भेजा है | परन्तु परमात्मा या खुदा चुप है | उसकी तरफ से इल्हाम का दावा किया जाता है, कि करोड़ों मनुष्य उसको मानते हैं | बहुत अच्छा हुआ कि प्रकृति होश वाली न थी, नहीं तो ईश्वर या खुदा की न्याईं वह भी अटकल-पच्चू चलती | जब कभी कहलाने वाले खुदा को गुस्सा आया तो खेतियाँ उजाड़ दीं, भूकम्प भेज दिए | अब उसके गुस्से का कौन पता निकाले ? उसके पुजारी तो उस पर लट्टू हो जाते हैं और उसके गुस्से से ही भविष्य में घटने वाली सच्चाई देख लेने का दावा करते हैं | परन्तु प्रकृति में जिन कारणों से भूकम्प आता है, उन कारणों का यदि कोई अध्ययन करे, तो उसकी हानि से अपनी रक्षा कर सकता है |

प्रश्न:- आपने यह तो नई बात बता दी कि होश रखने वाला ईश्वर तो अटकल-पच्चू चलता है, और नियम-**बद्ध-प्रकृति** पूर्त: विश्वास के योग्य है | क्या आप इस सत्य को अधिक विस्तार से बताने का कष्ट करेंगे ?

उत्तर:- आप यह नही देखते कि कहलाने वाले खुदा या ईश्वर की तरफ से मूसा आया, ईसा आया, मुहम्मद आया, वहाउल्हा आया और प्रत्येक ने एक नया दीन व मज़हब चलाया, और नई नई बातें बताईं तथा जुदा जुदा शिक्षाएं देनी शरू कर दीं | वही बात एक मज़हब अच्छी कहता है, और दूसरा उसे बुरी कहता है | खुदा चुप रहकर यह तमाशा देखता रहता है | दो सौ वर्ष ईसाईयों और मुसलमानों में मज़हबी जंग रही, दोनों ही मज़हब यह कहते जाते थे कि खुदा ने भेजे हैं, फिर भी दोनों मतों के अनुयाई एक-दूसरे के खून के प्यासे बने रहे | लाखों जानें नष्ट हो गईं, परन्तु अल्ला मियाँ चुप साधे रहे | इरान में नया मज़हब पैदा हुआ, वहाउल्हा इस का नबी बताया गया, मुस्लमानों ने उस मज़हब के अनुयाइयों पर बहुत बड़ा अत्याचार करना आरम्भ कर दिया | कहा जाता है कि तीस हज़ार वहाई मारे गए | इस्लाम का यह दावा है कि हम शान्ति लाते हैं, ईसाइयत का यह दावा है कि हम शान्ति लाते हैं, दोनों खुदा के मज़हब शान्ति पैदा करने का दावा करते हैं, और लाये हैं जंग | प्रकृति के नियमों में यह दोनों परस्पर विरोधी बातें हो ही नहीं सकतीं | प्रकृति खुदा की तरह नाराज़ नहीं होती, तथा किसी की झूठी सिफारिश नहीं सुनती | वह झूठे लारे नहीं देती, और झूठी उम्मीदें भी नहीं देती, झूठी प्रार्थनाएँ नहीं सुनती, अपनी झूठी महिमा नहीं सुनती, किसी के रोने पर अपना स्वाभाव नहीं बदलती | किसी के विरोधी अथव बागी होने पर तैश में नहीं आती, प्रकृति के नियमों पर उपरोक्त प्रकार की किसी बात का कोई प्रभाव नहीं होता | प्रकृति के नियम अटलता से ही काम करते हैं | जो अस्तित्व प्रकृति के नियम पूरे करेगा, वह चाहे प्रकृति से विरोधी व बाग़ी क्यों न हो, उन नियमों का फल अवश्य भोगेगा | वेदान्त मत रखने वाले प्रकृति से विरोधी ही रहे, परन्तु जब वह रोटी खाते थे, तो रोटी खाने के फल अवश पाते थे, जब पानी पीते थे, तब उनकी प्यास बुझ जाती थी, जब हवा में सांस लेते थे, तब जीवित रहते थे | जब रौशनी में आंखें खोलते थे, तब देख सकते थे | प्रकृति ने उनके विरोधी होने से खुदा की न्याई अपना स्वाभाव नहीं बदला | प्रकृति के नियमों में उनके स्वाभाव की जो अटलता है – वह पूर्णत: विश्वास के योग्य है | परन्तु कहलाने वाले 'खुदा' या 'ईश्वर' के स्वाभाव की तो कोई अटलता ही दिखाई नहीं देती |

प्रश्न:- इस अटलता के निश्चित और आवश्यक फल क्या हैं ?

उत्तर:- पहला और मुख्यत: निश्चित लाभ यह है कि मनुष्य विश्वस्त होकर अपना जीवन व्यतीत कर सकता है | एक एक कृषक जब गेहूं बोता है तो गेहूं के फसल की आशा करता है | जब ज्वार बोता है तब ज्वार की आशा करता हैं | जब बाजरा बोता है, तो बाजरे की आशा करता है | आम के वृक्ष से आम की आशा करता है | आक के पौधे से आक की ही आशा हो सकती है | अब यदि प्रकृति की यह अटलता न होती, तो मनुष्य विश्वस्त होकर न जीवन व्यतीत कर सकता था, न होश रख सकता था | यदि कोई गेहूं बोता है और खेत में पैदा हो जावे ज्वार, बो आये ज्वार और निकल आये बाजरा, बो आये बाजरा और निकल आयें सरकंडे, तो क्या मनुष्य अपने होशो-हवास स्थिर रख सकता है ? भूकम्प आते रहे, और जब तक मनुष्य ने भूकम्पों के नियमों का अध्ययन नहीं किया, तब तक बहुत हानि उठाता रहा | जब उन नियमों का ज्ञान पाकर मनुष्य ने उनके आधार पर भवन बनाए, तब वह किसी भूकम्प से न गिर सके | यदि कोई ईश्वर होता, जो बहुत नाराज़ होने वाला बताया जाता है, तो मनुष्य का क्या हाल होता ? कोई वस्तु उसके सामने सुरक्षित न होती | किसी ठीक बात पर मनुष्य चल ही न सकता | इसलिए न जीवित

रह सकता, और न अपने होश स्थिर रख सकता | खुदा या ईश्वर का विश्वास ही मनुष्य को अटकल-पच्चू बना देता है |

प्रश्न:- यदि होश वाली सत्ता की आप ज़रुरत ही अनुभव नहीं करते, तो मनुष्य-मात्र के होश पाने के महिमा क्यों गाते हैं ?

उत्तर:- अच्छा हुआ आपने यह प्रश्न पूछ लिया | मैंने होश वाले खुदा या ईश्वर की आवश्यकता नहीं बताई है | होश मनुष्य के लिए बहुत मूल्यवान वस्तु है, परन्तु इस बात को अपने हृदय में अच्छी तरह अंकित कर लें, कि मनुष्य के होश भी इसीलिए स्थिर हैं क्योंकि प्रकृति और उसके नियम पूर्ण विश्वास के योग्य हैं | यदि प्रकृति और उसके नियम विश्वास के योग्य न होते, तो सब मनुष्य परेशान और पागल हो जाते | आप विचार करें कि यदि कृषक अपने खेत में गेहूं बो दे, और उसमे पैदा हो ज्वार, और यदि ज्वार बो दे, और खेत में पैदा हो बाजरा, और यदि बाजरा बोये, तो उत्पन्न हो सरकंडा | यदि गिलास में पानी आग बन जाए, तो क्या किसी के भी होश ठिकाने रहेंगे ? मनुष्य के होश का प्रकृति की सच्ची घटनाओं के साथ गहरा सम्बन्ध है | घटनाओं के साथ मेल होने के कारण ही मनुष्य का आत्म-विश्वास बचा और बना रहता है | और हम उसको ही अधिक होश वाला समझते हैं जो प्रकृति की घटनाओं का अधिक ज्ञान रखता हो | हम वैज्ञानिक लोगों की महिमा क्यों गाते हैं, उनको ऊंची श्रेणी के मनुष्य क्यों कहते हैं ? वह इसलिए कि उच्च श्रेणी के जन प्रकृति की घटनाओं की सच्चाइयों और नियमों के सत्य ज्ञान के खोजने में लगे हुए हैं | हम मिथ्या-मतों के प्रचारकों को बेहोश क्यों बताते हैं, इसलिए कि वह प्रकृति और उसके नियमों की सत्यता से हट कर जो शिक्षा देते हैं, वह सब भ्रन्तियों से भरी हुई है | क्या यह भी कोई होश की बात है कि खुदा ने जगह जगह की मट्टी इकट्ठी करके मनुष्य का शरीर बनाया, और उसके नाक में फूंक मार कर उसको जीवित बना दिया ? क्या यह पागलपन नहीं, जबकि मनुष्य के सामने ज्ञान वर्तमान है कि मनुष्य पशुओं से विकसित हुआ है, तो भी यह मनुष्य उस ज्ञान से लाभ नहीं उठा सकता और बिलकुल बेतुकी हांकता रहता है | आप पागलखाने में जाकर ज़रा ध्यान से पागलों की बातें सुनें, और विचार करें कि वह पागल क्यों कहे जाते हैं | वह इसलिए पागल कहे जाते हैं क्योंकि वह प्रकृति की घटनाओं को उलटे रूप में देखते हैं | साधारण तथा गरीब होकर भी एक एक स्त्री यह कहती रहती है कि मैं महारानी हूँ, यदि उसका अफसर भी उसको महारानी कह कर न बुलाये, तो वह उस पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाती है | एक एक अफसर उससे झाड़ू भी यह कह कर दिलवाता है, कि महारानी जी आप कृपा करके अमुक स्थान पर झाड़ू लगा दें | अब उस बेचारी महारानी की यह समझ में नहीं आता कि मैं तो पागल हूँ, फिर भी अपने आपको महारानी कहती हूँ, और यदि सचमुच में महारानी हूँ, तो किसी की आज्ञा मानने की मुझे क्या ज़रुरत है ? अब एक एक पागल कब होश वाला समझा जाता है, जब वह प्रकृति की घटनाओं को उनके असल रूप में देखना आरम्भ कर देता है | यदि आप इस सच्चाई को देख चुके हों, तो कितने ही प्रश्नों का उत्तर आपको मिल जाएगा |

प्रश्न:- वह किस प्रकार ?

उत्तर:- आपने पूछा था कि मिथ्या क्यों मिटने के लिए है, तथा सच्चाई क्यों स्थापन होने के लिए है | आपने यही पूछा था या नहीं ?

प्रश्न:- जी हां | मैंने अवश्य यही पूछा था, अब आप बेशक इस प्रश्न का उत्तर दें |

उत्तर:- आप ही देखें कि मनुष्य की होश के यह अर्थ हैं कि वह प्रकृति की घटनाओं को उनके वास्तविक रूप में देखे | होश रखने वाले मनुष्यों से आप क्या आशा करेंगे ? यही कि वह प्रकृति के नियमों के सम्बन्ध में अधिक ज्ञानी हों, और अधिक तत्व-दर्शी हों | तब मनुष्य-श्रेणी में से ऐसे मनुष्यों का उत्पन्न होना आवश्यक है कि जो सत्य-ज्ञान के आकांक्षी हों, और इसलिए अपने होश को स्थिर रखने वाले हों | अन्धकार तब तक कायम रहा, जब तक देखने वाली आंखें उत्पन्न नहीं हुईं | ज्योंहि आंखें उत्पन्न हुईं, त्योंहि जीवों का अन्धकार दूर होने लगा | इसी प्रकार प्रकृति की विकास विषयक प्रक्रिया में जब ऐसे मनुष्य उत्पन्न होने आरम्भ हुए कि जिन के हृदय में प्रकृति की घटनाओं और सत्य-नियमों के जानने की आकांक्षा उत्पन्न हुई, तब मनुष्य की उन्नति में एक नया मार्ग खुल गया | ज्यों ज्यों मनुष्य-श्रेणी के लोग अपनी विभिन्न खोजों में सफल होते गए, और अपनी खोजों के द्वारा लाभ किये गए सत्यों का प्रचार करते गए, त्यों त्यों मनुष्य-श्रेणी की मानसिक-बेहोशी दूर होने लगी |

इन खोजी हुई सच्चाइयों से ज्योतिर्मान होने के लिए सैंकड़ों मनुष्य उनके साथ जुड़ने लगे | यह मनुष्य के स्वभाव में है कि ज्यों ही उसको ज्योति मिलेगी, त्यों ही उसका अन्धकार जाएगा | इसलिए ज्यों ज्यों मनुष्यों के हृदय सत्य-ज्ञान की ज्योति से ज्योतिर्मान होंगे, त्यों त्यों वह मिथ्या-विश्वासों के पहाड़ों को उठाकर समुद्र में फैंक देंगे | आप ज्योतिर्मान होकर अन्य मिथ्या-विश्वासों में फंसे हुए मनुष्यों पर तरस खायेंगे | मनुष्य के होश स्थिर रखने के लिए मिथ्या का अन्धकार दूर होना तथा मनुष्य की होश स्थिर रखना और बढ़ाना मनुष्य के अस्तित्व के लिए अति आवश्यक है - यह तो मनुष्य-प्रकृति का स्वभाव है | मनुष्य में जो जीवित रहने और मृत्यु से बचने की गहरी आकांक्षा तथा संग्राम है, वह भी तभी सफल हो सकता है, जब मनुष्य जीवित रहने और मृत्यु से बचने के नियमों का ज्ञान पने तथा उन्हें पूरा करने के योग्य बन जाए | अब इन नियमों का जानना और पूरा करना मनुष्य के **बोधवान** होने के लिए अति आवश्यक है | इस पृथ्वी पर मनुष्य-मात्र में एक ऐसी श्रेष्ठ-श्रेणी वर्तमान है कि जो यह अच्छी तरह से जानती है कि प्रकृति की घटनाओं और नियमों के जानने में ही मेरी रक्षा है | यह श्रेष्ठ-श्रेणी दिनों दिन सत्य-ज्ञान की ज्योति से ज्योतिर्मान होती जा रही है | और अपने लेखों और मुख के द्वारा सत्य-ज्ञान का प्रचार करती है | वह सच्चे फलों के आधार पर सत्य-ज्ञान की महिमा प्रगट करती रहती है | अब यह आवश्यक है कि सत्य-ज्ञान की ज्योति से अज्ञानता का अन्धकार मिट जाए | इसलिए मैं फिर दोहराता हूँ कि सत्य-ज्ञान की इसलिए विजय होगी क्योंकि सत्य-ज्ञान में ही मनुष्य की रक्षा तथा विकास है | सत्य-ज्ञान की इसलिए विजय होगी क्योंकि सत्य-ज्ञान को पाने से ही मनुष्य अपनी होश स्थिर रख सकता है, और उसे और बढ़ा सकता है | सत्य-ज्ञान की इसलिए जय होगी क्योंकि मनुष्य के भीतर जो जीने का संग्राम वर्तमान है, वह संग्राम सत्य-ज्ञान के पाने से ही सफल हो सकता है | और सत्य-ज्ञान की इसलिए जय होगी क्योंकि सत्य-ज्ञान के खोजी और प्रेमकों की एक श्रेष्ठ-श्रेणी प्रकृति के निर्माणकारी-कार्य से उत्पन्न हो चुकी है, और वह दिनों दिन बढती जा रही है, और वह श्रेणी सत्य-ज्ञान की ज्योति से ज्योतिर्मान होकर महाबली श्रेणी बन गई है | और यह श्रेणी जो जो सच्चे चमत्कार करके दिखाती है, वह चमत्कार नबियों, हादियों, पैगम्बरों और रसूलों आदि के मिथ्या-मूलक चमत्कारों से अति श्रेष्ट और महान हैं |

प्रश्न:- जब सत्य-ज्ञान में नई जाग्रति है, और सत्य-ज्ञान में जीवन है, मिथ्या में मदहोशी (अर्थात बेहोशी) और मृत्यु है, तब तो आपका यह दावा सच्चा है, कि मिथ्या मिटने के लिए और सत्य-ज्ञान स्थापित होने के लिए है | इस विषय को आप कृपा करके और आगे बढायें |

उत्तर:- मैंने आपको बताया है कि प्रकृति का निर्माण-कार्य अटल और अनिवार्य है | यह कार्य किसी के रोकने से न रुक सकता है और न बदल सकता है | यह कार्य लागातार अपना अमल (सिलसिला) जारी रखता है | इस कार्य के निरंतर गतिशील रहने के कारण नए नए अस्तित्व तथा नई नई नस्लें उत्पन्न होती रहती हैं | इस कार्य के कारण हस्तियों के भीतर नए नए अंग (यथा शारीरिक, मानसिक तथा भाव-विषयक आदि) उत्पन्न होते रहते हैं | इस कार्य के कारण नाना अस्तित्वों के अंगों में अपूर्णता से निकल कर पूर्णता की ओर जाने का रुझान बना रहता है | इसलिए नए नए अंगों को पाकर पहली वर्तमान नस्लों से नई नस्लों (अर्थात प्रजातियों) का प्रकाश होता है | मनुष्य ने तो प्रकृति की इस सत्यता को देखकर कई अनुसंधान भी किये हैं | कुत्ते की नस्ल को ही ले लें, मनुष्यों ने ऐसी विशेषता रखने वाले जोड़ों (नर और मादा) को मिलाना शुरू किया, कि जो खास विशेषता रखते थे, और जिस विशेषता को मनुष्य स्थिर रखना चाहते थे, और उन विशेषता रखने वाले जोड़ों से जो बच्चे उत्पन्न होते थे, यदि उन मे से उस विशेषता का प्रकाश नहीं पाया जाता था, तो उनको छोड़ दिया जाता था | और जिनमे वह विशेषता वर्तमान होती थी, उनका पालन करते तथा उनको सुरक्षित रखा जता था | इस क्रम को एक लम्बे काल तक स्थिर रखा गया | जहां उन्होंने खिलौनों जैसे बहुत छोटे कद के कुत्तों की नस्ल तैयार की, वहां बड़े बड़े डील-डौल वाले कद तथा शेर की सी हिम्मत रखने वाले कुत्ते भी उत्पन्न तथा विकसित किये | इसी प्रकार मटमैला रंग रखने वाले कबूतरों में से नाना प्रकार के सुन्दर कबूतर उत्पन्न तथा विकसित किये | और मनुष्य उन से कई प्रकार के काम लेने लगे | बेशक ऐसे हालात में जोड़ों (नर और मादा) को मिलाना मनुष्य के अपने हाथ में रहा है, लेकिन प्रकृति में भी यह चुनाव का क्रम (**Selection**) जारी है | 'मनुष्य-श्रेणी' में मनुष्य चुनाव करता है, और प्रकृति में 'अनुकूल-हालात' चुनाव

करते हैं | नाना प्रकार के पालतू पशुओं में जो मनुष्य ने कई प्रकार की श्रेणियां उत्पन्न कर दीं, वह प्रकृति के नियमों के पालन करने से ही हुई हैं, न कि किसी कहलाने वाले खुदा के दरबार में प्रार्थनाएं करने से | जो ज्ञान मनुष्य ने लाभ किया, वह सत्य-प्रकृति और उसके अटल नियमों का ज्ञान था, न कि इल्हामी पुस्तकों का | मूर्ख मनुष्य तोते की तरह यह रटता रहता है कि ईश्वर नामक कल्पित अस्तित्व सत्य-ज्ञान का दाता है, और उससे प्रार्थना करने से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं, जबकि वास्तविकता ठीक इसके विरुद्ध है | खुदा या ईश्वर की प्रार्थनाओं से कुछ नहीं बनता और न बनेगा, क्योंकि खुदा या ईश्वर पूर्णत: कल्पित अस्तित्व है | प्रकृति का दर खटखटाने से और उसके ज्ञान के असीम भण्डार से सत्य-ज्ञान पाने से मनुष्य के नाना कार्य सिद्ध हो रहे हैं | ऐसे जनों पर बहुत शोक है, जो इस वास्तविकता को उपलब्ध नहीं कर सकते; और एक कल्पित अस्तित्व के अन्धोंविश्वास में फंस कर अपने शरीर तथा आत्मा दोनों की ही (जानबूझकर अथवा अनजाने में) हत्याएं कर रहे हैं | अब यदि आपके सामने प्रकृति के निर्माण या विकास की सत्यता प्रगट हो गई हो, तो आप समझ सकेंगे कि प्रकृति का निर्माण-कार्य समय के साथ साथ ऐसे जनों को उत्पन्न करता ही जाएगा कि जो अपने अस्तित्व को स्थिर रख सकेंगे | जो सत्य-ज्ञान के अधिक से अधिक आकांक्षी हों, उसको पाने की अधिक से अधिक योग्यता रखते हों, और जो इस सत्य-ज्ञान के द्वारा अपनी हस्ती को स्थिर (सुरक्षित) रखने और उसकी आयु के बढाने में सफल हो सकें | प्रकृति का 'निर्माण-कार्य' बनाने का कार्य है, और जबकि यह कार्य रुकता नहीं, तब बनाने का कार्य लगातार बढेगा | अब यह बनाने का कार्य मनुष्य-श्रेणी में भी प्रभाव डाल रहा है, तथा ज़ोर से अपना काम कर रहा है | सारांश यह है कि जहां विनाश के कार्य के सिलसिले में झूठ और बुराई के प्रेमक उत्पन्न हो गए, जो अपना और औरों का नाश कर रहे हैं, वहां प्रकृति के विकास-क्रम में अच्छे से अच्छे जन भी उत्पन्न होते गए और हो रहे हैं | जो जन एक व दूसरी मिथ्या के सम्बन्ध में **उच्च-घृणा** रखने वाले हों, और **सत्य-ज्ञान** के सम्बन्ध में एक व दूसरे अंग में प्रेमक हों, ज्यों ही दूसरी श्रेणी (सत्य-ज्ञान आकांक्षी श्रेणी) ने विकास लाभ किया, त्यों ही ऐसे जनों ने मिथ्या का किला नष्ट कर दिया | सत्य-ज्ञान के आकांक्षी और प्रेमक जनों ने ज्यों ही 'आत्मिक-जगत' (अर्थात आध्यात्मिक-जगत) में प्रवेश किया, त्यों ही मिथ्या की मृत्यु का नगारा बजने लगा, और इस महाबली श्रेणी के सन्मुख **मिथ्या-अनुरागी जनों** को हार माननी ही पड़ी, क्योंकि यही प्रकृति का नियम है | इसी प्रकार जहां बुराई के प्रेमक बुराई का बाजार गर्म करने के लिए उत्पन्न हुए, वहां ऐसे **सात्विक भाव्-धारी** जन भी उत्पन्न हो गए कि जिनका उत्पन्न होना निर्माण-कार्य के सिलसिले में आवश्यक था | ऐसे जनों ने एक एक बुराई को नष्ट करने का बीड़ा उठाया | जहां विनाश का चक्कर है, वहां विकास का चक्कर भी है, जहां बिगाड़ने का काम है, वहां बनाने का काम भी है | बनाने का काम महाबली है, उस कार्य की दिवार की ईंट पर ईंट चुनी जा रही है, इसलिए 'विकास-क्रम' का बड़ा भारी भवन बनता जा रहा है, यह अधिकार विनाश के कार्य (अर्थात विनाश-क्रम) को प्राप्त नहीं | अब जहां एक एक मिथ्या और एक एक बुराई को मिटाने वाले जन उत्पन्न हो गए, वहां वह समय भी आने वाला था कि सारी मिथ्याओं और बुराइयों को मिटाने वाले और समस्त सच्चाइयों और भलाइयों को स्थापन करने वाले भी आविर्भूत हो गए, अर्थात **प्रकृति के निर्माण या विकासकारी कार्य के द्वारा अन्तत: मनुष्य सृष्टि के सरताज परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव हो गया**, जो न केवल मनुष्य-मात्र के, किन्तु उसके नीचे के अन्य सब जगतों के लिए भी प्रकृति का महान दान है |

———

10
देवगुरु अनुरागी शिष्य बनने की आवश्यकता |

ooooo

प्रश्न:- आपके वचनों से मुझे यही प्रतीत होता है कि प्रकृति में जो विस्मय-जनक निर्माण अथवा विकास का कार्य लगातार काम कर रहा है, उसी ने अनुकूल समय तथा अनुकूल हालात में भगवान् देवात्मा को आविर्भूत किया | परन्तु जिस उद्देश्य के लिए वह आविर्भूत हुए, उस उद्देश्य का आप कृपा करके संक्षिप्त शब्दों में वर्णन करें |

उत्तर:- भगवान् देवात्मा को प्रगट करने में जो पृकृति के निर्माण-कार्य का लक्ष्य प्रतीत होता है, वह यह है कि 'मनुष्य-आत्मा' एक ओर 'आत्म-अन्धकार' से निकल कर 'आत्म-सत्यज्ञान' की दुनिया में आंखें खोलें, और दूसरी ओर नाना 'नीच-अनुरागों' और 'नीच-घृणाओं' से 'सत्य-मोक्ष' पाकर 'सात्विक-भावों' को अपने हृदय में उत्पन्न और उन्नत करने के संग्राम में लग जाएँ | भगवान् देवात्मा यह सामर्थ्य रखते हैं कि अधिकारी-मनुष्यों (**Fit Souls**) को उनकी अपनी योग्यता के अनुसार सब प्रकार की मिथ्याओं और नीच-भावों से मोक्ष देकर आत्म-ज्ञान के सत्यों और तत्वों से ज्योतिर्मान करें | और सब प्रकार की नीच-शक्तियों के दासत्व से मोक्ष देकर उनके हृदयों में सात्विक-भावों को उत्पन्न करें | इस सामर्थ्य के रखने के कारण देवात्मा सारे मनुष्य-जगत के परम कल्याण के लिए **सत्य उपास्य-देव के रूप में प्रगट हुए हैं** | परम गुरु तो प्रगट हो चुके, अब उनके **अनुरागी-शिष्यों** की आवश्यकता है |

प्रश्न:- क्या प्रत्येक मनुष्य भगवान् देवात्मा का शिष्य बनने की योग्यता नहीं रखता ?

उत्तर:- जी नहीं | लाखों और करोड़ों मनुष्य तो प्रकृति (स्वभाव) से ही ऐसे अयोग्य उत्पन्न होते हैं कि वह किसी हाल में भी भगवान् देवात्मा के देवरूप की महिमा को देख नहीं सकते, तब वह उनको गुरु रूप में किस तरह ग्रहण कर सकते हैं ? यह बिलकुल सत्य है कि जो जन उनकी महिमा देखेंगे, वही उनकी ओर थोड़ा व अधिक आकृष्ट होंगे | इस बात की बड़ी हैरानी होती है कि भगवान् देवात्मा प्राय: आधी सदी से अधिक काल तक पंजाब प्रांत में रहकर अपनी असाधारण ज्योति प्रदान करते रहे | अपनी देव-वाणी तथा लेखनी के द्वारा उन्होंने मनुष्य-जगत में जो हलचल उत्पन्न की, वह आजतक स्मरणीय है | उनके उपदेशों तथा वक्तव्यों में असाधारण उच्च प्रेरणाएं तथा प्रभाव हैं | बड़े बड़े डाक्टर और बैरिस्टर आजतक भी उनके उपदेशों तथा वक्तव्यों को स्मरण करके उनके सम्बन्ध में अपने प्रशंसनीय भावों का प्रकाश करते हैं | एक डाक्टर और बैरिस्टर ने मुझे बताया कि भगवान् देवात्मा अपने देव-आश्रम में जब बोलते थे, तो हमें अनारकली (अनारकली - लाहौर नगर में एक स्थान का नाम है) के दूर के फासले तक भी उनकी ध्वनि की गूँज सुनाई देती थी, तब उनके बोलने से दीवरें हिल जाया करती थीं | शायद ही कोई ऐसा जन होगा जिसका हृदय उनके देव-प्रभावों से हिल न जाता हो ! सैकड़ों और हज़ारों के सामने ऐसे दृश्य भी उत्पन्न हो जाते थे कि अधिकारी जन आंसू बहाते हुए देखे जाते थे | अपने पापों को स्वीकार करने के लिए खड़े हो जाते थे, कई अपने जीवनों को उनके श्री चरणों में अर्पण करने के लिए तैयार हो जाते थे | उनके उपदेशों तथा वक्तव्यों को चमत्कारी उपदेश तथा वक्तव्य बताया जाता था | देवात्मा से जुड़े हुए जनों के जीवनों में अनोखा परिवर्तन होना आरम्भ हो जाता था | फिर भी, इन साक्षात घटनाओं का वर्णन सुनते हुए भी हज़ारों ऐसे जन भी वर्तमान थे, जो उनकी महिमा गाने में मुसीबत अनुभव करते थे |

प्रश्न:- ऐसा क्यों ?

उत्तर:- इसके दो कारण हैं, एक तो हजारों और लाखों मनुष्य उच्च-जीवन की महिमा ही देखने के अयोग्य उत्पन्न होते हैं | जो जन इर्ष्या, द्वेष, घमंड और घृणा आदि भावों के दास होते हैं, यह भाव उनको किसी की भी महिमा देखने के योग्य ही नहीं रखते | ऐसे जन अपने गुरु आप होते हैं, और अन्धकार में रहने और मरने के लिए ही उत्पन्न हुए होते हैं | दूसरे मनुष्य वह हैं, जो प्रकृति (अर्थात जन्मजात-स्वभाव) तो अच्छा लेकर उत्पन्न हुए होते हैं, परन्तु जिन हालात में उन्होंने पालन-पोषण लाभ किया होता है, उन हालात मे उनमे भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में दूसरे आम लोगों से अश्रद्धा की बातें सुन सुन कर उनकी महिमा देखने और उनके श्रद्धावन बनने के योग्यता नहीं रहती, इसलिए वह भगवान् देवात्मा की महिमा नहीं देख सके और उनके दर से दूर ही रहे |

प्रश्न:- जो जन भगवान् देवात्मा के दरबार में आये, भला उनका क्या हाल है ? क्या वह सभी देवात्मा के **अनुरागी-शिष्य** बन गए ?

उत्तर:- जी नहीं | किसी स्कूल में दाखिल होकर सभी लड़के प्रथम श्रेणी में नहीं आ जाते | बहुत थोड़े लड़के प्रथम श्रेणी में उतीर्ण होते हैं | संख्या में उनसे कुछ अधिक द्वीतिय श्रेणी में आते हैं | पास शुदा लड़कों की बहुत सारी संख्या तृतीय श्रेणी की होती है | बाकी एक एक यूनिवर्सिटी की परीक्षा में जितने लड़के पास होते हैं, प्राय: उनसे अधिक लड़के फेल होते हैं | इसी प्रकार एक एक खेल में बहुत सारे खिलाड़ी भाग लेते हैं | परन्तु सभी मशहूर नहीं हो जाते | कोई कैप्टन बन जाता है, परन्तु बहुत सारी संख्या में खिलाड़ी किसी बड़ी टीम में लिए जाने के अधिकारी नहीं समझे जाते | एक एक व्यापार में सैंकड़ों और हज़ारों जन लग जाते हैं, परन्तु कोई कोई धनवान हो जाता है | मेरे नगर में शुरू में बहुत सारे जनों के द्वारा टूटी हुई बाइसिकलों की मुरम्मत करने वाली दुकाने खोली गईं, उनमे से केवल एक ही जन ऐसा निकला, जो बहुत बड़ा रईस बन गया और जिसने कई लाख रूपये दान किये | पंजाब में इंजिनियर थोड़े तो उत्पन्न नहीं हुए, लेकिन सर गंगा राम इंजिनियर ने इतनी उन्नति क्यों लाभ की ? उन्होंने एक असाधारण सफलता लाभ की, इतना धन कमाया कि जिनमे से पच्चास लाख रूपये दान भी किये, इसलिए वह पंजाब के शिरोमणि दानी माने जाते हैं | एक ही हालात में सब मनुष्य एक ही प्रकार का लाभ नहीं उठा सकते |

भगवान् देवात्मा के दरबार में जो भी जन आते हैं, वह बहुत सौभाग्यवान हैं | वह तो एकमात्र सच्चे आध्यात्मिक-जगत के **देव-सूर्य** की शरण में आ जाते हैं | उनकी ज्योति-किरणों को लाभ करना शुरू कर देते हैं | ऐसे जनों का अधिकार तो उन राजाओं-महाराजाओं से भी बढ़कर है जो राजे-महाराजे भगवान् देवात्मा के श्री चरणों में नहीं आये या नहीं आ सके | लेकिन अधिकार मिलना एक अलग बात है और उसको सफल करना दूसरी बात है | इसलिए भगवान् देवात्मा के दरबार में जो भी जन आयेगा, वह एक महा श्रेष्ठ आधिकार तो अवश्य पायेगा | परन्तु कहां तक वह इस महोच्च अधिकार को सफल करेगा, इसका उत्तर तो उसका स्वभाव ही दे सकता है | भगवान् देवात्मा से तो प्रत्येक अधिकारी जन को उच्च-भावों और धर्म-जीवन का दान मिलता है | जो जन भी भगवान् देवात्मा के श्री चरणों में आता है, वह पहले से अवश्य बेहतर बन जाता है, उसके **आत्म-विकास** का दरवाज़ा तो सदा के लिए खुला रहता है, परन्तु वह जन दरवाज़ा खुला पाकर कहां तक अपने लक्ष्य को सिद्ध करेगा, यह अलग प्रश्न है |

अंतत: आप स्वयं ही देखते हैं कि सूर्य की ज्योति में वास करते करते भी कई जन अपनी आंखें खो देते हैं, जो आंखें बिलकुल नहीं खो देते, उनमे से कई जनों की आंखें कमज़ोर हो जाती हैं, और काली ऐनक लगाकर अपना गुज़ारा करते हैं | यदि आंखें दर्द करती हैं, तो सूर्य को ही त्याग देते हैं | कुछ ही जन ऐसे होते हैं कि जिनकी मरते दम तक आँखों की ज्योति ठीक रहती है | इसलिए वह ज्योति के प्रेमक भी रहते हैं | इसी प्रकार मनुष्य आत्माओं का हाल है, जो जन आंखें (अर्थात आन्तरिक आंखें) रख कर भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति में निरंतर वास करते हैं, उनके सौभाग्य की कोई सीमा नहीं | परन्तु यह उनकी आगामी काल की अवस्था बताएगी कि वह भगवान् देवात्मा की ज्योति में रहते हैं, या सारी आयु अँधेरे में ही गुज़ार देते हैं, और कभी कभी भगवान् देवात्मा से उनके लेखों या सतसंग के द्वारा आध्यात्मिक-ज्योति में आंखें खोलते हैं | भगवान् देवत्मा का सेवक बनने से कोई जन उनका सच्चा शिष्य नहीं हो जाता | कभी कभी **देव-ज्योति** में अपनी असल हालत को देख कर और उससे बेचैन होकर अपने जीवन की चिन्ता में पड़ जाना एक बात है, परन्तु ऐसी **आध्यात्मिक-ज्योति** का प्रबल आकांक्षी या प्रेमक बनना दूसरी बात है |

ठीक इसी प्रकार भगवान् देवात्मा के **देव-तेज** को पाना और उसे पाकर मोटे आठ पापों से मुक्ति पाना और कुछ मोह-बंधनों से बाहर निकल आना एक बात है, परन्तु **देव-तेज** के लिए प्रबल आकांक्षा या अनुराग अनुभव करना बिलकुल दूसरी बात है | एक एक अधिकारी आत्मा **देव-ज्योति** और **देव-तेज** को पाकर धन्य धन्य हो जाता है, क्योंकि इन बरक़तों के द्वारा उसके कुछ पाप झड़ गए, जो उसको सताते और तड़पाते थे | उसके कुछ मिथ्या विश्वास चले गए, जिनमे बड़े बड़े विद्वान् जन भी फंसे हुए हैं | उसके हृदय में चारों जगतों की कुछ न कुछ सेवा करने का भाव जागने लगा तथा ऐसा उच्च परिवर्तन भी उसको आश्चर्य में डालने लगता है, जबकि वह अपने चारों तरफ महा स्वार्थी मनुष्यों की भीड़ देखता है | ऐसे महा स्वार्थी जनों की तुलना में उसको अपना जीवन बहुत बदला हुआ अनुभव होने

लगता है | ऐसे बदले हुए जन इतने से उच्च परिवर्तन से ही संतुष्ट हो जाते हैं | अपने सौभाग्य को देखकर धन्य धन्य होते रहते हैं | लेकिन उनके सामने यह प्रश्न उत्पन्न नहीं होता कि मुझे जो दान मिला है, उसके बदले में मैंने अपने सद्गुरु के लिए क्या किया ? क्या मेरे भीतर भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में **हित-परिशोध** अथवा **कृतज्ञता** का कुछ भाव उत्पन्न होता है या नहीं ? क्या मैं अपने सद्गुरु के लिए कोई सच्चा त्याग करता हूँ, क्या मेरे भीतर कृतज्ञता की कोई भाव-शक्ति दिखाई देने लगी है ? यह प्रकृति का नियम है कि यदि उपकार पाकर कोई जन अपने भीतर कृतज्ञता का भाव उत्पन्न न कर सके, तो उसके भीतर स्वार्थ का भाव स्वत: ही बढ़ता जाएगा | यदि उपकार पाकर दीनता का भाव नहीं बढ़ायेगा तो घमंडी बनता जाएगा | इसी तरह यदि किसी की सच्ची महिमा सुन या देख कर कोई जन उसके प्रति श्रद्धा न बढ़ाएगा, तो इर्ष्या (इर्ष्या जो घमंड के बढ़ने का ही फल है) बढ़ने लगेगी और बढ़ती जायेगी | दुनिया में चारों ओर जो इतना स्वार्थ फैला हुआ है, वह इसलिए कि एक एक जन विश्व में असंख्य उपकार पाकर कृतज्ञता का भाव नहीं बढ़ा पाता, क्योंकि चारों ओर स्वार्थ का वतावरण भरा पड़ा है, तथा कृतज्ञ बनने का प्रशिक्षण कहीं नहीं दिया जाता | दुनिया में कोई सफलता पाकर उस सफलता का श्रेय किसी उपकारी का नहीं समझता, बल्कि अपनी योग्यता मानता है, और इस प्रकार धन्यवाद के भाव से नहीं बल्कि घमंड से भर जाता है | एक एक अच्छा तथा ऊंचा पद पाकर, उस पद के कर्तव्यों को अनुभव करके दीन नहीं बनता, अपितु ऊंचे पद के नशे में खौफनाक तौर पर घमंडी तथा ज़ालिम हो जाता है | वही लाभ प्राप्त करके एक जन पहले से बेहतर हो जाता है, जबकि वही बरक़तें पाकर दूसरा जन अकड़ता फिरता है | इसी प्रकार देवात्मा के **देव-प्रभावों** को पाकर एक एक जन अपने आप में ही मस्त रहता है, अपने स्वाथ्य, अपनी आर्थिक अवस्था, अपने पारिवरिक-जीवन, अपनी पोज़ीशन में बेहतरी देख कर उनके नशे में धन्य धन्य रहता है | तथा अपने परम गुरु को केवल शब्दों में याद करता है, लेकिन उच्च-कर्मों से नहीं | अर्थात देवात्मा के मिशन के लिए अपनी ओर से धन आदि के द्वारा भी कुछ योगदान नहीं देना चाहता | ऐसा एक एक बुद्धिमान मनुष्य जो केवल शब्दों में ही देवात्मा की महिमा गाता है, और कर्मों से कुछ साथ नहीं देना चाहता है, वह इस अधोगति को पहुँच जाता है कि फिर वह अपना नियत दान (अर्थात वर्ष भर के लिए साधारण सी फीस) भी नहीं देना चाहता | अब दूध में जितनी चीनी डालोगे, उतना ही मीठा होगा, इसके विपरीत नमक डालने से दूध मीठा न होगा | इसी प्रकार गुरु के दरबार में कुछ अर्पण से संकोच करने वाले जन बेहतर जीवन तो नहीं पा सकते | जो उपकार पाकर प्रति-उपकार न कर सकें अर्थात गुरु की सेवा भी में कुछ भेंट न देना चाहें, ऐसे जन सच्चे शिष्य नहीं कहला सकते तथा नहीं हो सकते | वह तो **नीच-अनुराग शक्तियों** और उन सांसारिक-अस्तित्वों के गुलाम हैं, जिनके लिए भाग भाग कर कुरबानियां करते फिरते हैं | कहावत है कि **'बिन सेवा नहीं प्रीती जागे**- और **बिन प्रीती नहीं अपनत्व भागे** |' जब तक अपनत्व (अर्थात निपट स्वार्थ) रहेगा, तब तक कोई जन **सच्चा-शिष्य** बनने की योग्यता लाभ न कर सकेगा | कबीर साहब ने इस विषय में बिलकुल ठीक फरमाया है:

'जब मैं था तब गुरु नाहीं – जब गुरु हैं मैं नाहीं;
प्रेम गली अति सांकरी – ता में दो न समाहि |'

इसलिए भगवान् देवात्मा के जो सेवक उनसे सत्य-धर्म का महान दान पाकर भी अपनत्व को ही बढ़ाते रहेंगे, वह सच्चे शिष्य बनने की योग्यता (यदि कोई है) तो उसे खोते जायेंगे | इसलिए आप समझ सकते हैं कि आठ पाप छोड़ने से (आठ मोटे पापों से सम्बंधित प्रतिज्ञायें, जो किसी जन को भगवान् देवात्मा के मिशन का सदस्य बनने से पूर्व पूरी करनी पड़ती हैं) कोई जन उनके मिशन का सदस्य हो सकता है, वह भगवान् देवात्मा का सेवक भी होता है और है, परन्तु उनका शिष्य नहीं | इसलिए परम उपास्य भगवान् देवात्मा का **सच्चा-शिष्य** बनने की योग्यता किसी किसी जन में ही पाई जाती है | और कोई कोई जन ही अपने इस **महोच्च-अधिकार** को सफल कर सकता है |

प्रश्न:- भगवान् देवात्मा का **अनुरागी-शिष्य** बनने के सम्बन्ध में क्या कोई नियम हैं ?

उत्तर:- जी हां, अवश्य हैं | भगवान् देवात्मा से जो **सत्य-धर्म** का दान मिलता है, उस दान के पाने के लिए किसी जन में बढ़ती हुई आकांक्षा शिष्य बनने के लिए बहुत आवश्यक है | देवात्मा से जो देव-प्रभावों का दान मिलता है, उसको पाने के लिए जो जन सच्चे अर्थों में आकांक्षी बनेंगे, वही देवात्मा

के साथ अपना सम्बन्ध घनिष्ट करने का सच्चा प्रयास करेंगे | वह संग्राम में पड़ जायेंगे | देव-प्रभावों की आवश्यकता को बोध करके, उनको पाने की गहरी आकांक्षा उत्पन्न करेंगे | यह सत्य है कि देव-प्रभावों को पाने से किसी जन के वासना-मूलक नीच-भाव दबने तथा घटने शुरू हो जाते हैं | यदि किसी जन का देव-प्रभावों को पाते रहने का यह क्रम निरंतर चलता रह सके, तो धीरे धीरे उसके नीच-भावों से उसे थोड़ी सी मोक्ष भी मिल सकती है, तथा वह अपनी बदलती हुई उच्च-अवस्था में संतुष्ट रहना और उसी का बार बार वर्णन करना अपना सौभाग्य अनुभव करने लगता है | लेकिन ऐसी अवस्था में ठहर जाना तथा केवल उसी का वर्णन करते रहना देव-प्रभावों को पाने की आकांक्षा का प्रकाश नहीं है | देव-प्रभावों को आत्मा के लिए जीवन का सच्चा आहार बोध करने से ही देवात्मा के प्रति गहरी आकांक्षा उत्पन्न होना सम्भव है | शारीरिक दुनिया में मनुष्य अन्न, पानी और ज्योति को जीवन का आहार बोध करके उन्हें पाने के लिए बेचैन रहता है, यदि इसी प्रकार की बेचैनी भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में उत्पन्न हो जाए, तब और तब ही कोई अधिकारी-जन भगवान् देवात्मा के साथ **जीवन्त-सम्बन्ध** स्थापन करने के संग्राम में पड़ सकता है | और जब तक इस जीवन्त-सम्बन्ध का बोध मनुष्य में उत्पन्न न होगा, तब तक उसके भीतर **अनुरागी-शिष्य** बनने की अवस्था भी उत्पन्न न होगी | भगवान् देवात्मा का अनुरागी-शिष्य बनने के लिए उनके देव-प्रभावों का **प्रबल आकर्षण** बहुत आवश्यक है |

प्रश्न:- यह तो आपने बिलकुल नई तथा कड़ी शर्त लगाई है |

उत्तर:- यह शर्त तो प्रकृति की ही लगाई हुई है, जो अटल है | अत: इसे कोई नहीं बदल सकता | आपको पता है कि प्रत्येक जीवित अस्तित्व के लिए यह नियम है कि वह तब तक ही जीवित रहेगा, जब तक पौष्टिक खाना खाएगा, शुद्ध पानी पिएगा, स्वच्छ वायु और खुली रोशनी में वास करेगा | अब यह नियम शरीर के लिए प्रकृति ने ही स्थिर किया हुआ है | यदि मनुष्य के वश में होता, तो वह इसे बदल डालता | बंगाल के दुर्भिक्ष में जो लाखों जन भूखे मर गए, वह कभी न मरते, यदि मरने और जीने के नियम मनुष्य के हाथ में होते | फिर तो हम बिना भोजन किये ही जीवित रह सकते | निर्धनता मनुष्य को क्यों तंग करती है ? इसके यही अर्थ हैं कि किसी को भर पेट भोजन प्राप्त न हो, रहने के लिए खुला रौशनी से भरपूर तथा हवादार मकान न मिले | आदि आदि | भारत के सच्चे हमदर्द अपने देश की दुर्दशा से क्यों दुखी हैं ? वह इसीलिए कि उनके अनुसार लाखों जनों को सारे दिन में केवल एक बार भोजन मिलता है | तीन चीज़ें मनुष्य के शरीर के लिए आवश्यक समझी गई हैं- एक भोजन, दूसरी शिक्षा तथा तीसरी स्वस्थ सम्बन्धी सहायता | यदि मनुष्य के वश में होता, तो वह तीनों चीज़ों की आवश्यकता को हटा देता | परन्तु प्रकृति ने अपने अटल नियम अपने ही हाथ में रक्खे हैं | उसने अन्धकार को मिटाने के लिए ज्ञान-प्राप्ति को आवश्यक रक्खा है | ठीक इसी प्रकार **मनुष्य-आत्मा** के अस्तित्व को स्थिर तथा सुरक्षित रखने तथा उसकी **आत्मिक-उन्नति** के लिए प्रकृति ने **देव-प्रभाव दायक खुराक** आवश्यक रक्खी है, इस अटल नियम को कोई कभी बदल नहीं सकता | प्रत्येक **अधिकारी-जन** को प्रकृति की इस परम आवश्यक शर्त के सन्मुख अपना सिर झुकाना पड़ेगा | जो ऐसा नहीं करेगा, वह एक न एक दिन **आत्मिक-मृत्यु** को अवश्य प्राप्त होगा | यह शब्द मेरे नहीं, यह तो प्रकृति का फ़तवा (अर्थात **Code of Conduct by Natue**) है | जो जन आंखें (आन्तरिक-आंखें) रखते हैं, वह प्रकृति के इस **शास्वत-सत्य** को अच्छी तरह देख सकते हैं | इसलिए जब तक किसी अधिकारी जन की यह अवस्था न हो जाए कि वह देव-प्रभावों के सम्बन्ध में अपने भीतर बोध उत्पन्न करे और उनके पाने की प्रबल भूख अनुभव करे, और उनके देने वाले के लिए अपने हृदय में सच्ची व्याकुलता उत्पन्न करे, तब तक उसे संतुष्ट न रहना चाहिए | अनाज के ढेरों के सन्मुख खड़ा हो जाना काफी नहीं, उनके सम्बन्ध में ज्ञान, बोध तथा भूख का होना भी बहुत आवश्यक है | मैं समझता हूँ कि अब आपके सन्मुख कुछ न कुछ सच्चाई अवश्य खुल गई होगी |

प्रश्न:- जी हां, अवश्य | परन्तु मेरे भीतर कुछ और प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं ?

उत्तर:- निस्संदेह ! अवश्य पूछें, और मैं यथा सम्भव अवश्य उत्तर दूंगा |

———

11
अनुरागी शिष्य बनने **के सम्बन्ध में**
देव-वाणी |

०००००

प्रश्न:- आपने जो कुछ बताया है, क्या उसकी पोषकता भगवान् देवात्मा की **देव-वाणी** से भी होती है ?

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा की **देव-वाणी** एक स्थान पर इस तरह लिखी हुई है:-

"देव-धर्म प्रवर्तक की जिस महान और **सर्वोच्च ज्योति** (अर्थात **देव-ज्योति**) को पाकर कोई मनुष्य अपनी किसी नीच-गति को उस के हानिकारक और घृणित रूप में देख सकता है, और उनके **देव-तेज** को पाकर उससे मोक्ष पाने का आकांक्षी बन सकता है, और धर्म विषयक किसी **उच्च-भाव** के सौन्दर्य को देख कर उसके लाभ करने के लिए इच्छुक हो सकता है, वह दुर्लभ देव-ज्योति और देव-तेज अथवा उनके **देव-प्रभाव** तब ही किसी जन को लाभ हो सकते हैं, कि जब वह उनसे उनकी प्राप्ति का **अभिलाषी** और उनके पाने के **योग्य** हो |"

आप इस **देव-वाणी** को अच्छी तरह से सुन कर उस पर विचार करें, तथा भगवान् देवात्मा की उन अमूल्य सच्चाइयों को अनुभव करें कि जिन्हें उन्होंने फरमाया है, कि देव-प्रभावों को पाने के लिए दो नियम पूरे करने की आवश्यकता है, एक तो ऐसे देव-प्रभावों का **अभिलाषी** बनना है, दूसरा उनके पाने के लिए **योग्य** होना है |

प्रश्न:- मैं आपकी बात को समझ गया हूँ, कि भगवान् देवात्मा ने अपनी देव-ज्योति में जो कुछ प्रगट किया है, उसके आधार पर ही आपने थोड़े से शब्दों में मुझे कुछ सत्य बताने की कृपा की है | अब आप कृपया यह बताएं कि देवसमाज सबसे बड़ा और मुख्य उपदेश क्या देती है ?

उत्तर:- मैं फिर देव-वाणी के आधार पर ही यहां देवसमाज का उद्देश्य उद्धृत करता हूँ कि जो भगवान् का सबसे बड़ा और मुख्य उपदेश है |

"देवसमाज का सबसे बड़ा और मुख्य उपदेश यही है कि पहले तुम देवधर्म प्रवर्तक के साथ अपने सम्बन्ध को **जीवन्त-रूप** से स्थापन करने की आवश्यकता को अनुभव करो और उसके अभिलाषी बनो | ऐसी अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए तुम्हें जिस जिस ज्ञान की आवश्यकता है, जिस जिस साधन की आवश्यकता है उसको जानने, सीखने और पूरा करने की कामना करो | क्योंकि किसी मनुष्य में ऐसी आकांक्षा और कामना के जागने पर ही उनके सम्बन्ध में **शिष्य-विषयक योग्यता** लाभ करने की आशा हो सकती है |"

प्रश्न:- यह विचित्र देव-वाणी तो आंखें (अर्थात आन्तरिक आंखें) खोलने वाली है | इस देव-वाणी के आधार पर आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि कौन कौन से नीच-भाव हैं, जो इस योग्यता के बढ़ाने में रुकावट बनते हैं, या इस योग्यता को नष्ट करने का हेतु बनते हैं ?

उत्तर:- सुनो ! मैं इन नीच-भावों का वर्णन भी देवात्मा की देव-वाणी के द्वारा ही करना चाहता हूँ, वह देव-वाणी यह है :-

"इस योग्यता के लाभ करने में और कई बातों के भिन्न जो बड़े बड़े निकृष्ट भाव रुकावट बते हैं, वह यह हैं:-

१. **अहंकार भाव** | "यह भाव जिस 'मनुष्य-आत्मा' में जितना अधिक हो, वह उतना ही उसके विष से अधिक पागल होता है | और अपने पागलपन की मात्रा के अनुसार **सत्य को मिथ्या, और मिथ्या को सत्य** के रूप में देखता है | और सत्य को त्याग कर मिथ्या को ग्रहण करता है, और अपने हृदय को अधिक से अधिक विकृत करके अपने-आप को उस ज्योति की प्राप्ति के अयोग्य बनाता है कि जिसे पाकर ही वह अपने बुरे रूप व अपने किसी पाप व अपराध को **प्रकृत-रूप** (अर्थात **वास्तविक -रूप**) में देख सकता था | इस अहंकार के वश होकर केवल यही नहीं की कोई मनुष्य अपने किसी नीच गति दायक पाप या मोह या अपराध आदि को घृणित रूप में नहीं देख सकता, किन्तु उसके विरुद्ध अपने किसी दोष

व अपराध व पाप के विषय में कोई बात सुनते ही जल उठता है, और **सत्य को असत्य, और असत्य को सत्य** के रूप में देखता है | अर्थात जिसे कुछ देर पहले वह अपने से महान देखता था, उसी को अपने इस महा-निकृष्ट भाव से उत्तेजित होकर हीन और तुच्छ देखता है | जिसके साथ पहले कुछ निकटता सी अनुभव करता था, उसी से अब दूर हो जाता है | जिसको पहले अपना हितकारी अनुभव करता थ, अब उसी को अपना अहितकारी अनुभव करने लगता है | और यदि इस अहं के साथ साथ उसके भीतर द्वेष और प्रतिशोध का महा विनाशकारी भाव भी यथेष्ट रूप में वर्तमान हो, तो उसके उत्तेजित हो जाने से वह अपने हितकर्ता को उलटा हानि पहुंचाने के लिए तत्पर हो जाता है, और अराधना के स्थान में उसकी निन्दा करने में ही तृप्ति लाभ करता है |"

प्रश्न:- यह तो बड़ा भयानक भाव है !

उत्तर:- जी हां | यह भाव मनुष्य की होश मार देता है | यदि कोई ज्योति उसके भीतर वर्तमान हो, तो वह उसको मिटा देता है | ज्योति के बुझने से इस भाव का दास **सत्य को असत्य, और असत्य को सत्य** समझता है |

प्रश्न:- ऐसा क्यों होता है कि अहं का दास **सत्य को असत्य, और असत्य को सत्य** समझता है ? पाप और अपराध की पोषकता क्यों करता है, अपने हितकर्ता को शत्रु क्यों समझता है, उसकी महिमा के बदले निन्दा क्यों करता है ?

उत्तर:- यह सब इसलिए कि **अहंकार** मनुष्य को आन्तरिक तौर पर अंधा बना देता है |

प्रश्न:- अनमेल की जो आग घर घर जल रही है, उसके भड़काने तथा बढ़ाने में क्या इसी भाव का हाथ है ?

उत्तर:- जी हां | एक एक निकट का सम्बन्ध अहं-भाव के कारण टूट जाता है, क्योंकि इस भाव के दास अपने आपको पूर्णत: ठीक तथा औरों को पूरी तरह ग़लत समझते हैं | लाखों तलाक़ इस भाव ने कराये, लाखों मुकद्दमे इस भाव ने कराए, क्योंकि प्रत्येक लड़ने वाला जन ख़ुद ठीक और दूसरे को ग़लत समझता है | घमंडी समझौता करना ही नहीं जानता | सास-बहु के झगड़े में भी अधिकतर यही भाव काम करता है | मेरा यह कटु अनुभव रहा है कि यह भाव सबसे अधिक **नारकीय-भाव** है | प्रत्येक अहंकारी यह चाहता है कि मुझे सभी प्यार करें, मुझे सभी अच्छा समझें; परन्तु यदि उसको उसका कोई बड़े से बड़ा हितकारी भी कोई उचित रोक-टोक भी कर दे, तो वह जल उठता है, आंखें तरेर लेता है | इस नारकीय-भाव् के विषय में भगवान् देवात्मा ने और किसी स्थान पर भी बहुत सुन्दर **देव-वाणी** प्रकाशित की है | अपनी विरोधिता का उल्लेख करते हुए भगवान् देवात्मा ने अपनी **आत्म-कथा** नामक अनोखी पुस्तक में यह फरमाया है:-

"**जीवन-व्रत** ग्रहण करने से पहले भी कितने ही लोग मेरे बहुत विरोधी थे, परन्तु व्रत ग्रहण करने के अनन्तर तो मानों चारों ओर आग ही जल उठी, कि जो समय के साथ साथ अधिक से अधिक प्रचण्ड होने लगी | इस विरोधिता की अग्नि के प्रज्वलित होने का कारण क्या ? कारण, मनुष्य में अहं-प्रियता (अर्थात घमण्ड-भाव) की प्रबलता का होना है | **अहं-प्रियता** क्या ? अपने संस्कार, अपने मत, अपने स्वभाव, अपनी रूचि, अपनी वासना, अपनी इच्छा आदि का प्यार, चाहे उनमे से कोई एक व प्रत्येक ही उसके और अन्य अस्तित्वों के लिए कैसी ही बुरी, कैसी ही अपराध व पाप-मूलक और कैसी ही हानिकारक क्यों न हो | साधारण मनुष्य अपने किसी मिथ्या से मिथ्या संस्कार, व मत व विश्वास और बुरे से बुरे स्वाभाव व आचार के विरुद्ध कुछ सुनना पसंद नहीं करता, और अपनी नीच से नीच और बुरी से बुरी और पापी से पापी और मिथ्या से मिथ्या गति को इतना प्यार करता है, कि उस पर और तो और अनेक बार अपने किसी सच्चे हितकर्ता की ओर से भी कोई चोट पहुँचने पर बिलबिला उठता है, कोप से जल उठता है, आंखें बदल लेता है, मुंह फेर लेता है, घृणा से भर जाता है, और उसे श्रद्धा और सन्मान की दृष्टि से देखने के स्थान में अश्रद्धा और शत्रु की निगाह से देखता है, और यदि इसके भिन्न वह अपने हृदय में द्वेष व परिशोध का प्रबल भाव भी रखता हो, तो फिर कृत्घन और उत्पीड़नकारी बन कर उसे तरह तरह से सताने और हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाता है |"

यह सब भगवान् देवात्मा का अपने जीवन का निजी अनुभव है, जिसे कोई भी सच्चा हितकर्ता अपने अनुभव से देख सकता है | हर समय किसी को अपनी मन-मर्जी पूरी करनी हो, और

उच्च नियमों की अवहेलना करके दूसरों को खुश करने का ही बीड़ा उठाया हो, तो फिर कोई उससे नाराज़ क्यों हों ? मनुष्य को अपनी "मन-मर्जी" अच्छी लगती है, जो जन उसकी तारीफ में लग जाएंगे, चाहे वजह कैसे ही पापी हों, वह उनका हो जाएगा | उस को रोकने और टोकने वाला उसका कैसा ही उपकारी और हितकारी हो, वह उसका शत्रु बन जाता है | मैंने भी दुनिया में ऐसी कितनी ही घटनाएं देखी हैं, जहां कहीं मित्रता का सम्बन्ध बहुत गहरा है, वहां तो एक बार रोकने-टोकने से मनुष्य अपना एक जानी-दुश्मन पैदा कर लेता है, क्योंकि साधारण मनुष्यों में **अहं** तथा **प्रतिशोध-भाव** बहुत बड़ी मात्र में वर्तमान है | ऐसा जन न केवल शत्रु बन जाता है, किन्तु कृतघ्न भी हो जाता है | एक महा पुरुष ने सत्य ही कहा है:-

'कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह;
मान, बड़ाई, इर्षा, दुर्लभ तजनी ऐह |"

मान, बड़ाई तथा इर्ष्या 'अहं-प्रियता' के बच्चे हैं, इसलिए यदि कोई उच्च-भाव किसी के भीतर उत्पन्न न हो जाए, तो आज या कल वह सम्बन्ध टूट जाएगा | खून का रिश्ता थोड़ा बहुत चल सकता है, विवाह-बन्धन कुछ रिश्तों को मजबूत कर देता है | इन दोनों सम्बन्धों में अल्प या अधिक स्थिरता है, लेकिन जहां यह दोनों सम्बन्ध न हों, तथा कोई मित्रता का सम्बन्ध भी न हो, वहां तो सम्बन्ध बहुत संवेदनशील होता है | ऐसी हालत में यदि किसी के हृदय में श्रद्धा का भाव उत्पन्न न हो गया हो, तो केवल मत को लेकर वह सम्बन्ध स्थिर (अथवा मजबूत) नहीं रह सकता | सम्बन्ध के सूत्र, खून के सूत्र, विवाह के सूत्र, तथा बिरादरी के सूत्र तो सदियों से अपना अधिकार बनाए हुए हैं | लड़-झगड़ कर भी मनुष्य एक-दूसरे के साथ इन सूत्रों से जुड़े रहते हैं तथा एक-दूसरे से चाह कर भी सम्बन्ध विच्छेद नहीं कर सकते | बाकी जहां एक-दूसरे के हित को लेकर सम्बन्ध हो, वहां तो उच्च तथा हितकर भावों के सम्बन्ध-सूत्रों की बहुत बड़ी आवश्यकता होती है | जबकि किसी मनुष्य में **आत्म-हित** तथा **अहित-बोध** उत्पन्न न हुआ हो, तथा उसमे **सत्य** तथा **असत्य का बोध** न जागा हो, तब तक **आत्मिक-सम्बन्ध स्थिर तथा शक्तिशाली** नहीं हो सकता |

प्रश्न:- क्या इस अहं भाव के अतिरिक्त कोई और भाव भी हैं, जो शिष्य बनने की योग्यता को नष्ट कर देते हैं ?

उत्तर:- जी हां | शिष्य बनने के योग्यता को नष्ट करने वाले तीन और भाव भी हैं | यथा **इर्ष्या**, **द्वेष** तथा **मिथ्या** का अनुराग |

प्रश्न:- क्या आप कृपा करके इर्ष्या के सम्बन्ध में देवात्मा की देव-वाणी का विस्तार से वर्णन करेंगे ?

उत्तर: जी हाँ, अवश्य | इस विषय में भगवान् देवात्मा फरमाते हैं :-

"जिन मनुष्यों मे **इर्ष्या** का महा हानिकारक भाव वर्तमान होता है, वह किसी जन के किसी ऐसे उच्च-भाव व उसके सद्गुण की प्रशंसा सुनकर, जो उनमे न हो, जल उठते हैं, तथा उससे अपने हृदय में बहुत क्लेश अनुभव करते हैं | और कई बार उसके सम्बन्ध में बहुत बुरी बुरी कामनाएं करते हैं | यह अति निकृष्ट भाव जिस जन में जितना अधिक हो, उतना ही वह सत्य और हित विषयक विविध उच्च भावों की महिमा को देखने और उनके प्रति सच्चा श्रद्धावन बनने के अयोग्य होता है | तथा उसके विष से पागल होकर एक व दूसरे उच्च भावधारी आत्मा के किसी ऐसे उच्च रूप को या तो मूल से ही स्वीकार नहीं करता, या उससे भी बढ़कर उसे उसके उलट रूप में प्रगट करता है |"

प्रश्न:- यह तो बड़ा हानिकारक भाव है ?

उत्तर:- जी हां | **ईर्ष्या-भाव** तो मनुष्य को ख़त्म कर देता है, यह भाव तो प्रकृति के विकास-क्रम के नियम के ही उल्ट है | प्रकृति के विकास-क्रम में नई से नई और अच्छी से अच्छी हस्तियाँ उत्पन्न होती जायेंगी, तथा उनके उत्पन्न होने का क्रम कभी बन्द न होगा, क्योंकि **विकास-क्रम का अर्थ ही आगे से आगे बढ़ते जाना है** | उनके चाहने तथा उनका गुण गाने वाले भी उत्पन्न होते रहेंगे | फिर आप विचार करें कि ईर्ष्या-परायण जनों का क्या हाल होगा ? उच्च-गुणधारी जन उत्पन्न होते रहेंगे, तथा

इर्ष्या-परायण जन जलते रहेंगे, जबकि उन के अन्य साथी मनुष्य गुण गायेंगे | अर्थात कोई किसी की महिमा गायेगा, तथा इर्ष्या-परायण जन अपना सिर पीटेगा |

एक जन ऐसा था कि जो किसी मत के गुरु के सम्बन्ध में **इर्ष्या-भाव** रखता था | वह प्राय: हर समय जलता-कुढ़ता रहता था, उसके जलने कुढ़ने की यहां तक नौबत पहुँच जाती थी कि ज्योंहि किसी ने उस गुरु की महिमा गई, त्यों ही वह अपनी छाती पीटने लग जाता था | वह अपनी छाती को पीटता और अपने आत्मा को कोढ़ी बनाता बनाता मृत्यु को प्राप्त हुआ | ओह ! इर्ष्या-परायण जन को कैसी भयानक सज़ा !! इर्ष्या-परायण जन औरों की उन्नति का शत्रु होता है, तथा वह इस नीच-भाव के वशीभूत बहुत सी चालें भी चलता है | तथा यदि वह किसी गुणधारी जन की किसी और इर्ष्या-परायण जन के सन्मुख कोई प्रशंसा भी करता है – तो वह इसलिए नहीं कि उसे किसी के कोई उच्च-गुण दिखाई देते हैं | बल्कि उसकी प्रशंसा भी पाप-मूलक भाव रख कर करता है, ताकि जिसके सन्मुख किसी की प्रशंसा की जाए, उसकी हेठी अथवा अपमान हो | मुझे तो बहुत सारे अनुभवों में से गुज़रना पडा है | एक बार कालेज की नीति-कक्षा में प्रिन्सिपल ने किसी लडके की महिमा गई, तो एक और लड़का खड़ा होकर यह कहने लगा कि प्रिन्सिपल साहब, आप इसकी क्या महिमा गाते हैं, इसकी तुलना में तो अमुक लड़का ज़्यादा अच्छा है | यदि किसी और अवसर पर मैं किसी दूसरे लड़के की महिमा गाता हूँ, तो यह इर्ष्या-परायण लड़का इर्ष्या-भाव से परिचालित होकर किसी और तीसरे लड़के की महिमा गाने लगता है, जिससे दूसरे लड़के का अपमान हो | अर्थात ऐसे जन महिमा गाते हैं तो किसी की निन्दा करने के लिए | इर्ष्या-परायण जन किसी की निन्दा और हानि में प्रसन्न होता है, अन्यथा जलता भुनता ही रहता है तथा अपनी उन्नति के मार्ग को स्वयं ही बन्द कर लेता है |

प्रश्न:- क्या आप **द्वेष-भाव** के सम्बन्ध में भी देव-वाणी का पाठ करेंगे ?

उत्तर:- जी हां, अवश्य | इस विषय में भगवान् देवात्मा फरमाते हैं:-

"जिस जन में यह निकृष्ट भाव जितना अधिक होता है, उतना ही वह अपनी किसी अनुचित वासना की तृप्ति में किसी और को रोक पाकर उसे यथा साध्य सब प्रकार की हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाता है, यहां तक कि किसी से बड़े बड़े उपकार पाकर भी उसकी अनुचित हानि करके अपने इस अति निकृष्ट भाव को तृप्त करता है | तथा जिस जन में यह भाव बहुत प्रबल हो, वह न केवल उस जन को, जिस के द्वारा उसकी अनुचित वासना की तृप्ति को रोक लगी हो, किन्तु उसके सम्बन्धियों को भी हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, तथा किसी किसी अवस्था में यहां तक कामना करता है कि यथा सम्भव उसके वंशधर भी उसकी न्याईं उस जन व उसके सम्बन्धियों से वही प्रतिशोध लेते रहें |"

प्रश्न:- बदला या प्रतिशोध लेने का भाव तो महा हिंसक भाव है ?

उत्तर:- जी हां | एक बार एक नौकर की एक घटना अख़बारों में निकली थी, जिसने सारे पाठकों के रौंगटे खड़े कर दिए थे | उसके मालिक ने नौकर को किसी बात पर डांट दिया | इस डांटने से नौकर इस प्रकार उत्तेजित हो गया कि उसने सोये हुए मालिक के सारे परिवार को, यहां तक कि छोटे छोटे बच्चों तक को भी क़त्ल कर दिया |

प्रश्न:- क्या कोई जन देव-प्रभावों में रहकर ऐसा कर सकता है ?

उत्तर:- जी नहीं | परन्तु बदला लेने का यह नीच-भाव कई सूरतों में मनुष्य के भीतर छुपा रहता है | भगवान् देवात्मा का एक उपकृत सेवक, जो 24 वर्ष तक उनसे अनगिनत उपकार पाकर भी चोट खाने पर इस हालत में पहुँच गया कि उसने महीनों तक अपनी नीच-प्रकृति से उत्तेजित होकर भगवान् देवात्मा की पवित्र हस्ती के सम्बन्ध में इतना अशिष्ट तथा अनैतिक प्रलाप किया कि वह देवसमाज के इतिहास में वह महा पिशाच और महा कृतघ्न मशहूर हो गया | यदि कोई बड़े से बड़ा अपराध हो सकता है, तो वह कृतघ्नता का है | और यदि एक एक उपकृत-जन अपने उपकारी से बदला लेने के लिए तैयार हो जाता है, तो उसकी अधोगति की कोई सीमा नहीं रहती | मनुष्य अपनी इस **अधम-प्रकृति** से डरता रहे तो ही अच्छा है | एक एक नीच-भाव जल्दी से मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता | उसके नीच-भाव '**देव-प्रभाद दायक मण्डल**' में इस तरह दबे रहते हैं, जिस प्रकार फासफोरस पानी में तो बचा रहता है, लेकिन ज्यों ही उसे पानी से बाहर निकाला जाए- उसमे से धुआं उठना तथा वह जलना आरम्भ हो जाता है | अत: जब

तक एक एक नीच-भाव पर देव-प्रभावों की किरणें वर्षों तक निरंतर न पड़ती रहें, तब तक वह दुर्बल अथवा नष्ट नहीं होता, विशेषकर **अहं, इर्ष्या, द्वेष तथा नीच-घृणा-भाव** |

प्रश्नः- आप सत्य कहते हैं, परन्तु दुनिया में चारों तरफ तो इन चारों भावों का ही राज्य फैला हुआ दिखाई देता है | उनसे उत्पन्न भयानक फल घर घर और गली गली में दिखाई देते हैं | फिर भी मनुष्य उनसे मोक्ष पाने के आकांक्षी नहीं देखे जाते, बल्कि उनके प्रेमक बने हुए हैं | ऐसा क्यों ?

उत्तरः- वह इसलिए कि इन भावों की तृप्ति में मनुष्य को सुख मिलता है | औरों के ऐसे नीच-भाव तो सबको नज़र आ जाते हैं, लेकिन अपने नीच-भाव किसी को दिखाई नहीं देते, बल्कि उनकी अपनी नज़रों से छुपे रहते हैं | औरों के नीच-भाव तो इसलिए नज़र आते हैं क्योंकि उनके देखने और दूसरों को नीचा दिखाने में मनुष्य को सुख मिलता है | अपने इसलिए नज़र नहीं आते क्योंकि मनुष्य सत्य का प्रेमक नहीं है | **मनुष्य का सोच-विचार और निर्णय लेने का सूत्र सुख का प्रेम और दुःख से घृणा ही है** | अतः उसके लिए वह भाव अच्छा है, जो उसे सुख देता हो, और वह भाव बुरा है, जो उसे दुःख देता हो | औरों से अपने लिए नीच-भावों के कड़वे फल चख कर एक एक मनुष्य दुखी होता है, इसलिए दूसरों के इन बुरे भावों को कोसता रहता है | इन चारों शक्तियों (अर्थात नीच-भावों) के वास्तविक रूप को नहीं देख पाता, यदि ऐसा कर पाता तो अपने भीतर वर्तमान इन नीच-भावों के घृणित रूप को पहले ही देख लेता | मनो-विज्ञान यह बताता है कि जब किसी नीच-भाव से कोई मनुष्य अपने आप छुटकारा नहीं पा सकता, तो अपने आपको कोसने की बजाये वह औरों में ही इन भावों को देखता और कोसता है | एक बहुत बड़े जज साहब के बारे में मशहूर है कि वह बदचलन जन को बहुत बड़ी सज़ा देता था | विशेषतया उन जनों को जिन के बुरे आचरण से कोई निर्दोष और अविवाहित स्त्री गर्भवती हो जाती थी | उसके ही सम्बन्ध में यह एक सच्ची घटना है कि एक स्त्री उससे गर्भित हो गई | वह स्त्री यह नहीं जानती थी कि यह जन जज है | उस स्त्री ने नालिश की कि अमुक जन से मैं गर्भित हो गई हूँ | स्त्री ने जो नाम लिया वह उस जज का नाम नहीं था | जब वह अदालत में आकर खड़ी हुई, तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही, क्योंकि उसने उस जज को पहचान लिया था कि यही तो मेरा चाहने वाला है, और इस उलझन में पड़ गई कि जो कुछ मैं देख रही हूँ, क्या वह सत्य है ? उस स्त्री ने एक पत्र लिख कर उस जज को सौंप दिया | कहा जाता है कि जज अदालत से उठकर अपने घर चला गया और उस स्त्री को अपने घर बुला लिया | उस स्त्री ने मुकद्दमा वापिस ले लिया | इस प्रकार की कई घटनाएँ मनोविज्ञानिकों ने एकत्रित की हैं, तथा मनुष्य की इस दुर्बलता को **Projection** के तौर पर स्मरण करते हैं | इसका अर्थ यह है कि जो दोष अपने भीतर है, और जिस से मनुष्य बाहर नहीं निकल सकता, उस दोष को वह औरों में कोसने लगता है, तथा अपने सम्बन्ध में मनुष्य का कुछ ज़ोर नहीं चलता | इसलिए औरों पर इस दुर्बलता के लिए फटकार डालता है तथा स्वयं अँधेरे में ही रहता है | परन्तु इतना सत्य है कि मनुष्य सुख देने वाले भावों का (चाहे वह कितने ही पाप-मूलक नीच भाव हों) प्रेमक बना हुआ है | इसके विपरीत वह दुःख देने वाले सब भावों का (चाहे वह कैसे ही हितकर क्यों न हों) दुश्मन बन हुआ है |

प्रश्नः- मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ कि मुझे आपने यह अमूल्य ज्योति प्रदान की | मिथ्या-अनुराग के सम्बन्ध में भी कृपया भगवान् देवात्मा की देव-वाणी का कुछ उल्लेख करें |

उत्तरः- इस विषय में विस्तार-पूर्वक उल्लेख अगले अध्याय में वर्णित किया जाएगा |

12
अनुरागी शिष्य बनने में रुकावट |

oooo

प्रश्नः- भगवान् देवात्मा का **अनुरागी-शिष्य** बनने में जो जो रुकावटें हैं, आपने उनका कुछ तो वर्णन किया है | आपने यह फरमाया था कि **मिथ्या-अनुराग-भाव** भी भगवान् देवात्मा के देवरूप का अनुरागी बनने में बहुत बड़ी रुकावट है | क्या आप उसके सम्बन्ध में भी कुच्छ बताने की कृपा करेंगे ?

उत्तरः- इस नीच-भाव के सम्बन्ध में भगवान् देवात्मा की **देव-वाणी** यह हैः-

"जिस जन में यह नीच-भाव (अर्थात **मिथ्या-अनुराग-भाव)** जितना अधिक हो, उतना ही उसका हृदय सत्य की तुलना में मिथ्या के ग्रहण करने में बहुधा अधिक तृप्ति पाता है | ऐसा मनुष्य अपने किसी भी शुभ सम्बन्ध में भरोसे के योग्य नहीं हो सकता | वर्षों तक उसने जिस जन के किसी शुभ गुण की परीक्षा की हो, उसी के विरुद्ध किसी दिन किसी और से किसी झूठे कलंक को सुन कर झट उसे सत्य मान लेता है, और पहले जन से पूर्णत: कट जाता है, अथवा उस पर मिथ्या संदेह आरोपण करता है |"

यह महा नीच-भाव अपना सानी आप ही है | इस प्रकार का स्वभाव रखने वाले जनों से दुनिया भरी पड़ी है | उनके लिए यह कह जाता है कि वह अपनी कोई समझ नहीं रखते, वह तो औरों की समझ के हवाले होते हैं | उन जनों के होते हुए ठगी का बाज़ार बहुत गर्म रहता है | प्रतिदिन हजारों घटनाएँ उत्पन्न होती रहती हैं, जिनसे स्पष्ट मालूम होता है कि अपनी समझ से खाली शून्य रहने वाले जनों ने अपने आपको लुटा लिया | राजनैतिक-जगत में तो नौजवानों को तबाह करने के लिए और उनको अपना गर्वीदा (अर्थात चाहवान) बनाने के लिए कई नेता स्पष्ट तौर पर पूर्णतय: झूठी बातें फ़ैला कर और उनकी घृणा-शक्ति को उत्तेजित करके फसाद (अर्थात दंगे) खड़े करवा देते हैं | ऐसी दुर्बल प्रकृति रखने वाले जो बेचारे अपनी समझ नहीं रखते, वह तो अपनी भी रक्षा नहीं कर सकते | ऐसी घटनाएँ तो अनगिनत हैं |

एक लड़की ने एक बार बताया कि एक चालाक जन ने मेरे कान में यह बात डाल दी कि वह बहुत बड़ा साहूकार है, और मुझ से शादी करना चाहता है | मुहे यह भी कहा, "तुम्हारा पिता तुम्हरा शत्रु है, वह तो तुम्हें एक जन को बेचना चाहता है | तुम यदि मेरे साथ भाग चलो, तो मैं तुम्हें अपने घर की रानी बना कर रक्खूँगा |" मैंने कहा, कि मेरा पिता तो ऐसा नहीं है, वह तो देने वाला है, मुझ से कुछ लेने वाला नहीं है | उस जन ने फिर कहा, कि तुम उसे नहीं जानती | तुम्हारे पिता ने मुझ से रूपये मांगे थे, मैं तो उसे रूपये देने को तैयार था, लेकिन एक और जन ने अधिक रूपये देने चाहे, जो मेरी तुलना में बहुत निर्धन है | तात्पर्य, एक-दो और ऐसी ही बातें बता कर और एक व दूसरा उपहार देकर उस जन ने लड़की को अपने पिता के सम्बन्ध में बेवफा बना दिया | इस प्रकार उस लड़की की जो तबाही हुई, वह उसको सारी आयु याद करती और रोती रही | एक और चालाक जन ने कुछ जनों से यह कह दिया कि जो तुम्हारा अफसर है, वह तुम्हारा शत्रु है, वह मेरे साथ आप लोगों का नाम लेकर ऐसी बातें करता रहा है कि मैं इन्हें छोडूंगा नहीं | वह जन मान गए, तथा अपने अफसर के प्रति घृणा से भर कर कुछ ऐसी बातें कर बैठे जिससे उनको बहुत हानि उठानी पड़ी |

एक एक बच्चा जो माता पिता से किसी बात के कारण रूठ जाता है, उसको पडोसी-जन माता-पिता से यह कह कर फाड़ डालते हैं कि तुम्हारे माता-पिता तो तुम्हारे दुश्मन हैं | मूर्ख बच्चे कई बार यह समझते नहीं कि माता-पिता से बढ़कर बच्चों का कौन सच्चा हितकारी और मित्र है ? एक बार भगवान् देवात्मा ने यह फरमाया था कि, "यदि कोई स्त्री किसी दूसरे के बच्चे से यह कह दे कि मैं तुम्हें तुम्हारी माता से अधिक प्यार करती हूँ, तो उस स्त्री को डायन समझो | जितना प्यार एक एक माता को अपने बच्चे के लिए है, उसकी कोई सीमा नहीं है | वह तो अपने बच्चों के ऊपर न्योछावर हो जाती है, परन्तु लाखों बच्चे ऐसी जननी से, औरों के बहकाने पर, गुमराह (पथ-भ्रष्ट) हो जाते हैं | किसी जन में शक़ पैदा करना जितना आसान है, भरोसा पैदा करना उतना ही कठिन है | अपनी समझ न रखने वाले जन करोड़ों की संख्या में हैं; जो साक्षात परोपकारियों को भी औरों के बहकाने पर भूल जाते हैं | यह सब इसलिए है कि मिथ्या का अनुराग उनमे कूट-कूट कर भरा हुआ है | भगवान् देवात्मा के कृतघ्नों के देवसमाज में रहने के दिनों के भाव-प्रकाश पढ़ें, और समाज से निकल जाने के बाद के पढ़ें | एक ऐसे बेवफा जन ने यह लिखा था, कि देवसमाज में **पापी-जन** भरे हुए हैं | उसने ऐसा क्यों कहा, क्योकिं वास्तविकता यह है कि कई जन भगवान् देवात्मा की **देव-ज्योति** को पाकर अपनी नीच-प्रकृति को भयानक रूप में देखते हैं और उसको स्वीकार करते हैं | उनके स्वीकार करने के पश्चात तो हृदय की शुद्धि होनी आरम्भ होती है, इस स्वीकृति के पश्चात बेहतर होकर और जनों की भी काया पलटनी आरम्भ हो गई | परन्तु इस कृतघ्न जन ने अपने जैसी प्रकृति रखने वाले जनों को एकत्रित करके यह बताना (अर्थात भड़काना) शुरू किया कि देवसमाज तो जरायम-पेशों (अर्थात अपराध-मूलक व्यवसाय

करने वालों) का समूह है | यह कैसी दुष्टता ! यह जन ऐसा झूठ लिखने के लिए इतना उत्तेजित क्यों हुआ ? यह इसलिए कि वह समझता था कि लाखों जन तो मिथ्या बातों को झट सत्य मान लेते हैं | मैंने उसके लेख का उत्तर देते समय यह पूछा था कि तुम 35 वर्ष से भी अधिक तक देवसमाज में रहे, तुम ख़ुद ही बताओ कि तुमने कौन कौन सी अपराध-मूलक व्यवसाय करने वाली बातें सीखीं, तुम्हारी शादी भी देवसमाज में हुई, तुमने विवाहित पत्नी के भीतर किन विशेष जुर्मों की वर्तमानता देखी थी, जिन पर तुम मोहित हो गए | तुमने अपने सारे बच्चों को देवसमाज के स्कूलों में पढ़ाया, वह बेचारे स्कूलों में क्या क्या जुर्म करना सीखे | फिर जब तुम देवसमाज से अलग हुए, उसके बाद भी तुम ने अपने एक बच्चे को देवसमाज के ही स्कूल में कौन सा अपराध सीखने के लिए भेजा था ? वह बेचारा इसका क्या उत्तर दे सकता था ? परन्तु क्या वह जन कभी अपने दुष्कर्मों के लिए शर्मिंदा हुआ ? क्या उसने कभी यह देखा कि उसने झूठे आरोप लगाकर अपने आपको कितना पतित बना लिया ? वह अच्छी तरह जानता था कि देवसमाज पाप छुडवाने का काम करती है न कि पाप बढ़ाने का | मिथ्या-अनुराग ऐसी भयानक बीमारी है कि जो मनुष्य के भीतर सत्य को देखने और ग्रहण करने की योग्यता नहीं छोड़ती | अब यदि किसी मनुष्य का पेट इस हालत में हो कि जो कुछ वह खाए उसे उलटी के द्वारा निकाल दे, तो क्या ऐसा जन ज़िंदा रह सकता है ? इसी प्रकार जो आत्मा सत्य को ग्रहण न करे, उसे दूर फैंक दे, और मिथ्या को ग्रहण करे, तो क्या उसके आत्मा का कभी भला हो सकता है ? क्या वह जन अपने आत्मा के भले के संग्राम में कभी लग सकता है ? क्या वह सच्चे सदगुरु का शिष्य होकर रह सकता है ? क्या ऐसा जन भगवान् देवात्मा के साथ सम्बन्ध रखने के योग्य भी है ? भगवान् देवात्मा तो सत्य के पूर्ण अनुरागी हैं – और यह मिथ्या का अनुरागी है; क्या कभी दोनों का मेल हो सकता है ? कभी नहीं, कभी नहीं | इसलिए मिथ्या अनुरागी जन भगवान् देवात्मा का अनुरागी शिष्य कभी बन ही नहीं सकता | यह भी कहना मुश्किल है कि वह भगवान् देवात्मा का सेवक होकर और सेवक रहकर ही मरेगा |

प्रश्न:- क्या मिथ्या-अनुरागी किसी के सम्बन्ध में विश्वास के योग्य भी हो सकता है ?

उत्तर:- नब्बे प्रतिशत हालत में नहीं | बाकी दस प्रतिशत भी बहुत मुश्किल है | मिथ्या पर कोई भवन खड़ा नहीं हो सकता | इसलिए मिथ्या पर कोई सम्बन्ध स्थापन नहीं हो सकता | मिथ्या-अनुरागी अपने वर्षों के अनुभव के बाद भी किसी के कहने या बहकाने से अपनी पत्नी से फट जाता है | किसी के बहकावे से एक एक बहुत अच्छे और उपकारी भाई से फट जाता है | मैंने एक भाई के सम्बन्ध में पढ़ा है कि जो अपने बड़े भाई को प्यार करता था और उसके लिए अपनी जान देने को तैयार रहता था | बड़े भाई को छोटे भाई के इस व्यवहार का वर्षों का अनुभव था | परन्तु ज्यों ही बड़े भाई ने शादी की, त्यों ही अपनी पत्नी के बहकावे में आकर अपने छोटे भाई से बहुत फट गया और उसको अपने से अलग कर दिया | छोटा भाई बहुत रोया कि मुझे अपने से जुदा न करो, मेरी दृष्टि आपके सम्बन्ध में नहीं बदली, परन्तु बड़े भाई ने उसकी एक न सुनी | दोनों का जुदा होना था कि दोनों पर आफतें आन पड़ीं | कई वर्षों के दुःख सहने के बाद बड़े भाई को होश आई | मिथ्या-अनुराग प्रत्येक सम्बन्ध में एक बहुत बड़ी मुसीबत है | परन्तु धर्म-जगत में तो यह सत्यानाश करने वाली हार्दिक नीच-शक्ति है |

प्रश्न:- मिथ्या-अनुरागियों को क्या हो जाता है, वह ऐसा क्यों करते हैं ?

उत्तर:- उन पर मिथ्या का अधिकार हो जाता है, या यह कहो कि उन पर बुरी तरह आत्म-अन्धकार छा जाता है, मानो उनकी आँखों में मोतिया बिन्द का रोग हो गया हो |

प्रश्न:- जब एक बार ऐसा जन ज्योति पाता है, और अन्धकार को अन्धकार के रूप में देखता है, तब अन्धकार को सदा के लिए त्याग क्यों नहीं देता ?

उत्तर:- क्योंकि वह स्वभाव से ही **अन्धकार-प्रिय** है, इसलिए वह अन्धकार से नहीं बचता तथा उल्लू की तरह अन्धकार-प्रिय ही रहता है | आपने उस कैदी की कथा तो अवश्य सुनी होगी, जो 70-80 वर्ष की आयु तक जेल में रहा | ज्योंहि नए बादशाह के राज्य संभालने की ख़ुशी में सारे कैदियों के साथ उस जन को भी स्वतन्त्र किया गया, और वह जिस समय जेल की अँधेरी बन्द कोठरी से बाहर निकला गया, त्योंहि वह ज्योतिमय आभा को देख कर बुरी तरह डर गया | वर्षो से अँधेरे का अभ्यस्त होने के कारण वह बाहर की ज्योति को सहन नहीं कर सका | एक दिन जब उसको पता चला कि बादशाह आज यहां से गुज़रेगा, तो वह सड़क के किनारे खड़ा हो गया | ज्योंहि नया बादशाह वहां आया, त्योंहि वह कैदी

उसके चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा कि मुझे मेरी उसी अँधेरी कोठरी में वपिस भेज दिया जाये | "हाय मेरी अँधेरी कोठरी, हाय मेरी अँधेरी कोठरी" के शब्द पुकारता रहा | बादशाह ने उसकी सारी कथा सुनी तथा उसे अँधेरी कोठरी में वपिस भेज दिया, जहां पहुँच कर वह शान्त हो गया |

मैंने देवसमाज में आये हुए एक एक जन के सम्बन्ध में सुना है कि जब वह दुर्भाग्यवश समाज से कट गया, तो उसने पहला क़दम यह उठाया कि जाकर मांस खाया कि जिसको देवसमाज में आने पर वह छोड़ चुका था | एक कृत्घन जन के लिए कहा जाता है कि उसने जाकर हुक्का पीना शुरू किया, क्योंकि देवसमाज में आने से पहले वह हुक्का पीने का अभ्यासी था | एक कैदी ने मेरे मित्र को बताया कि वह छः वर्ष जेल में रहा, जहां उसे तम्बाकू पीना नसीब नहीं होता था | वह ज्योही जेल से बाहर आया, त्योंहि उसने सबसे पहला काम तम्बाकू पीने का ही किया | एक एक जन एक एक मिथ्या या बुराई का प्रेमी होता है, इसलिए वह उससे जुदा हो ही नहीं सकता, या जुदा होना नहीं चाहता, या जुदा रहकर भी उसी के पीछे भागता रहता है | एक जन ने मेरे आगे हाथ जोड़ते हुए कहा कि खुदा के लिए ईश्वर या खुदा के बारे मुझे कुछ न कहना, क्योंकि मुझे विश्वास है कि आपकी दलीलों के कारण खुदा या ईश्वर से मेरा विश्वास उड़ जाएगा | मैं इस विश्वास को क़ायम रखना चाहता हूँ, क्योंकि इसके बिना मेरा गुज़ारा नहीं होगा |

शेख चिल्ली की कहानी तो बहुत प्रसिद्द है – जब उसके सिर से घी का बर्तन गिर गया और मालिक ने उसे बहुत डांटा कि तुमने मेरा घी नष्ट कर दिया, तभी शेख़ चिल्ली ने कहा कि तुम्हारा तो दो रूपये का घी नष्ट हुआ है, मेरा तो बना बनाया परिवार ही बरबाद हो गया है | उसका बना बनाया परिवार क्या था; एक मिथ्या तथा स्वप्न-वत भवन था, जिसका कोई अस्तित्व न था, फिर भी शेख़ चिल्ली के लिए वह वास्तविकता थी | एक जन ने मुझसे कहा कि ईश्वर हमारे सब अपराध और पाप क्षमा कर देता है, इस क्षमा के मिलने के विश्वास से मुझे बहुत शान्ति मिलती है | परन्तु तब मुझे बहुत कष्ट होता है जब कोई इस विषय के विरुद्ध बोलता है |

एक जन मेरे पास आया तथा आत्मा के सम्बन्ध में बातचीत करता रहा | जब मैंने उसे बताया कि शरीर के बिना आत्मा जीवित नहीं रह सकता, तथा किसी निराकार अस्तित्व का होना ही असम्भव है, तब उसने बड़ी चोट खाई, तथा कहने लगा कि क्या मरने के बाद हमारा आत्मा सितारों और सूर्यों में सैर नहीं करता रहेगा ? मैंने उत्तर दिया, नहीं | एक तो कोई निराकार हस्ती है ही नहीं, दूसरा मृत्यु के पश्चात सारे विश्व में सैर करने का विश्वास एक मिथ्या कल्पना है | यह शेख़ चिल्ली के स्वप्न से भी रद्दी स्वप्न है | वह मुझसे बिना जाने 'कि आत्मा बिना शरीर के जीवित क्यों नहीं रह सकती', नाराज़ होकर चला गया | यह भी जानने का प्रयास नहीं किया कि निराकार अस्तित्व का जीवित रहना या जीवित होना क्यों असम्भव है ? मिथ्या अनुराग के कारण मनुष्य सत्य का दर्शन नहीं करना चाहता | किसी अस्तित्व से घृणा करना अनुचित समझा जाता है, परन्तु <u>सत्य से घृणा करना तो महा विनाशकारी हार्दिक-अवस्था है</u> | एक एक मिथ्या विश्वास के सम्बन्ध में मनुष्य का यह हाल है, कि वह किसी मिथ्या कल्पना के विरुद्ध कुछ सुनना ही नहीं चाहता, तो ऐसा जन सत्य-अनुरागी भगवान् देवात्मा का शिष्य कैसे बनेगा, जबकि भगवान् देवात्मा तो कुल मिथ्या-विश्वासों को नष्ट करना चाहते हैं, और कुल मिथ्याओं के पूर्ण शत्रु हैं ? इसलिए मिथ्या अनुरागी जन उनका पुजारी नहीं हो सकता | और जो जन मिथ्या अनुरागी है, वह सत्य के प्रेमी होने की अभिलाषा कभी नहीं करेगा | इसलिए प्रत्येक आत्म-हित आकांक्षी जन के लिए यह परम आवश्यक है कि वह घमंड, इर्ष्या और द्वेष से बाहर निकले, और मिथ्या अनुराग के महा पतनकारी भाव से भी सत्य मोक्ष लाभ करे, अन्यथा वह देव जीवनधारी भगवान् देवात्मा का साधारण शिष्य भी न बन सकेगा, अनुरागी शिष्य बनना तो बहुत दूर की बात है |

13

अनुरागी शिष्य बनने के सम्बन्ध में प्रकृति के नियम का पूर्ण समादर |

००००

प्रश्न:- इन चारों विनाशकारी भावों के विषय में भगवान् द्वात्मा की देव-वाणी क्या है ?

उत्तर:- वह देव-वाणी यह है कि "एक ओर जब तक इन महा अनिष्टकारी भावों के अधिकार से किसी जन में परित्राण पाने की आकांक्षा और दूसरी ओर 'उच्च-जीवन गठनकारी अंगों' के प्रति यथेष्ट श्रद्धा व आकर्षण जाग्रत न हो, तब तक वह धर्म के पूर्णांग अवतार भगवान् देवात्मा के साथ कोई आत्मिक स्थाई तथा उच्च सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता |"

प्रश्न:- भगवान् देवात्मा की देव-वाणी में दो बातें बताई गई हैं | एक तो शिष्य बनने की आकांक्षा रखने वाला जन उन चारों नीच भावों से छुटकारा पाने की आकांक्षा अनुभव करे और दूसरी ओर वह उच्च-जीवन के अंगों के प्रति श्रद्धा और प्रेम के भाव उत्पन्न करे | क्या इस प्रकार की श्रद्धा लाभ करने और उच्च भावों को उत्पन्न करने के कोई प्राकृतिक नियम हैं ?

उत्तर:- जी हां, अवश्य हैं | भगवान् देवात्मा की देव-वाणी सुनो तो आपको पता लग जाएगा कि सत्य-धर्म में अटकल-पच्चू (अर्थात अनियमित) कोई बात नही | विज्ञान-मूलक धर्म में अटल नियमों का ही समादर है | भगवान् देवात्मा फरमाते हैं "याद रखो, सत्य-धर्म कोई ऐसी वस्तु नहीं कि जिस के देने या पाने के सम्बन्ध में कोई नियम न हो | **देव-धर्म विज्ञान-मूलक धर्म है** | विज्ञान में अटल नियमों का पूर्ण समादर है; इसीलिए इस विज्ञान-मूलक **सत्य-धर्म** की जो जन शिक्षा पाना चाहते हों, उनके लिए आवश्यक है कि वह उसे अटकल-पच्चू की वस्तु न समझें, किन्तु उसे नियम के ज्ञान और उसके साधन के द्वारा ही लाभ करने की वस्तु जानें | जिस प्रकार वायु को तुम अपने शरीर के भीतर नियम के द्वारा ही ले जा सकते हो, और नियम के द्वारा ही उसे अपने लिए स्वास्थ्यकर और विविध खाद्य-पदार्थों को नियम के द्वारा ही अपने आहार के योग्य बना सकते हो, उसी प्रकार नियम के द्वारा ही तुम देव-धर्म प्रवर्तक से उच्च-ज्ञान और उच्च-बोध उत्पादक ज्योति और शक्ति लाभ कर सकते हो, इसके बिना कदापि नहीं |"

प्रश्न:- वह नियम क्या हैं ?

उत्तर:- वह नियम यह हैं कि चार प्रकार की सात्विक-शक्तियों से जुड़ कर एक एक अधिकारी मनुष्य भगवान् देवात्मा के देव-ज्योति और देव-तेज संपन्न देव-प्रभावों को लाभ कर सकता है, अन्यथा नहीं |

प्रश्न:- वह चार प्रकार के सात्विक-भाव क्या हैं ?

उत्तर:- वह चार प्रकार के सात्विक-भाव हैं – भगवान् देवात्मा के देवरूप के प्रति अटल कृतज्ञता, अटल श्रद्धा, अटल विश्वास, तथा देव-रूप के प्रति प्रेम व आकर्षण |

प्रश्न:- नियम के जानने और पूरा करने के लिए भावों के भिन्न मनुष्य के लिए क्या विद्वान् होना भी ज़रूरी है ?

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा ने स्वयं फरमाया है कि "देव-धर्म के साथ साथ मूर्खता के दूर करने तथा विद्या और विज्ञान के लाभ करने की भी आवश्यकता है |"

इसलिए भगवान् देवात्मा अपने कार्य के लिए उच्च हार्दिक अवस्था रखने के भिन्न उच्च कोटि की मानसिक-शक्तियां रखने वालों की भी आवश्यकता बताते हैं |

प्रश्न:- मैं फिर आपसे एक और प्रश्न करना चाहता हूँ, आपने जहां आकांक्षा और अभिलाषा का उल्लेख किया है, और यह भी बताया है कि अनुरागी-शिष्य बनने के लिए यह आवश्यक है कि अधिकारी 'मनुष्य-आत्मा' में ऐसा बनने की आकांक्षा वर्तमान हो, वहां आपने यह भी कहा था कि आकांक्षा के भिन्न उसमे योग्यता भी वर्तमान हो | आपने उस योग्यता के सम्बन्ध में मुझे अभी तक कुछ नहीं बताया | कृप्या यह बताएं कि ऐसे कौन कौन से लक्ष्ण हैं कि जिनसे हम पहचान सकें कि किस प्रकार की योग्यता रखने वाला जन अनुरागी-शिष्य बन सकता है ?

उत्तर:- भगवान् देवात्मा ने ऐसे लक्षणों का अपनी देव-वाणी के द्वारा जो ज्ञान प्रदान किया है, उसका सारांश नीचे उद्धृत किया जाता है:-

१. "जो जन आत्मिक-गठन और जीवन के सम्बन्ध में भगवान् देवात्मा की शिक्षा व उपदेश आदि को पढ़ व सुनकर सत्य और असत्य विषयक कुछ विवेक लाभ कर सकते हों," वह अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग की ओर गमन कर सकते हैं |

अब जो जन 'आत्मा' के सम्बन्ध में सत्य और असत्य विषयक ज्ञान के सम्बन्ध में कोई विवेक लाभ नहीं कर सकता, वह भला असत्य को क्यों छोड़ेगा, और सत्य की तरफ क्यों आकृष्ट होगा ? इसलिए इस प्रकार का विवेक बहुत ही मूल्यवन विवेक है, जिसे लाभ करना अति आवश्यक है |

प्रश्न:- सत्य है | जहां विवेक नहीं, वहां पहचान क्या ? जहां पहचान नहीं, वहां आकांक्षा क्या ? और जहाँ आकांक्षा नहीं वहां तलाश क्या ? जहां तलाश नहीं, वहां लाभ करना क्या ? इसलिए मैं इस देव-वाणी की सत्यता को बहुत सन्मान की दृष्टि से देखता हूँ | आप कुछ और आगे बताने की कृपा करें |

उत्तर:- भगवान् देवात्मा ने अपनी देव-वाणी के द्वारा दूसरा लक्ष्ण यह प्रगट किया है:-

२. "जो जन उपरोक्त प्रकार के शिक्षा विषयक लेखों व उपदेशों का बार बार पाठ कर सकते हों, और उन मे जो नाना प्रकार के सत्य निहित हैं, उन्हें बार बार पाठ-विचार और जिज्ञासा के द्वारा अधिक से अधिक संख्या और उज्जवल रूप में देखने और ग्रहण करने की योग्यता रखते हों," वह अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग पर आगे कदम बढ़ा सकते हैं |

प्रश्न:- क्या इस प्रकार की योग्यता साधारण मनुष्यों में पाई जाती है ?

उत्तर:- जी नहीं | साधारण मनुष्य तो किसी उच्च लेख या उपदेश को पढ़ना ही नहीं चाहता, उसको तो किसी गूढ़-तत्वों से भरी हुई पुस्तक को हाथ लगाना भी मुसीबत अनुभव होती है | बाकी यदि किसी पुस्तक को पढ़ भी ले तो उसमे छुपे हुए तत्वों तथा सत्यों का दर्शन भी नहीं कर पाता | यदि दर्शन कर भी ले तो उसके हृदय पर कोई विशेष उच्च-प्रभाव नहीं पड़ते | अत: वह कुछ क्षणों के लिए भी इन सत्यों पर विचार करना एक दुसाध्य कार्य समझ कर थोड़ी सी देर में ही हार मान लेता है | साधारण जन इस बात में ही तृप्त हो जाते हैं कि उन्होंने किसी धार्मिक-पुस्तक का पाठ कर लिया, और बस | क्या इस पाठ के द्वारा किसी सत्य का दर्शन भी किया या नहीं ? यह जाने उनकी बला |

यह भी सत्य है कि यदि एक एक अधिकारी जन भगवान् देवात्मा की पुस्तकों की एक लाइन को भी पढ़ ले, तो उसकी सत्यता से वह इतना पकड़ा जाता है, कि सारा दिन उस सच्चाई का उसके दिलो-दिमाग पर बहुत गहरा प्रभाव रहता है | ऐसे जन इस प्रकार की अवस्था रख कर और उसको गहरा करके उच्च-स्तर के विचारक तथा लेखक बन सकते हैं | यह समझना बहुत भारी भूल है कि मनुष्य के पास मानसिक-ज्योति है, इसलिए वह भगवान् देवात्मा प्रदत्त सत्यों का दर्शन कर लेगा और उनसे गहरे तौर पर प्रभावित हो जाएगा | उच्च-जीवन के सत्य और तत्व तो देव-ज्योति में ही दिखाई देते हैं | जो जन ऐसे तत्वों का दर्शन नहीं कर सकते, वह अपने हृदयों को बड़ा धोखा देते हैं | यदि वह यह समझते हैं कि अमुक जन जो उच्च तत्वों के सम्बन्ध में या जीवन की सच्चाइयों के सम्बन्ध में मुझ से अधिक रखता है, वह केवल अपनी मानसिक-शक्तियों के द्वारा पाता है, यह उसका बहुत बड़ा भ्रम है | 'हार्दिक-सत्य' देव-ज्योति में ही दिखाई दे सकते हैं | इन सत्यों के प्रभावों की गहराई, मनुष्य की निज की हार्दिक योग्यता पर निर्भर करती है | यह निज की योग्यता उनके पूर्वजों का जन्म के समय दिया हुआ दान है, तथा भगवान् देवात्मा ने इस प्रकार की निज की योग्यता के बारे भी शिक्षा दी है | जब उन्होंने अपनी देव-वाणी में यह प्रकाश किया, कि पाठ करने वाला सेवक इन्हीं सत्यों का बार बार पाठ और विचार कर सकता हो, तथा उनको वास्तविक रूप में देखने और ग्रहण करने की योग्या रखता हो, तो ऐसी क्षमता ही उसकी निज की योग्यता होती है |

प्रश्न:- क्या आपका यह कहना है कि जिस हृदय में अधिक से अधिक सत्यों को जानने और उनको उज्जवल रूप में देखने और ग्रहण करने की योग्यता अच्छे रूप में नहीं, वह अनुरागी-शिष्य नहीं बन सकता ?

उत्तर:- जी हां |

प्रश्न:- क्या आप किसी और लक्ष्ण का वर्णन करने की भी कृपा करेंगे ?

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा ने अपनी देव-वाणी में जिस तीसरे लक्ष्ण का वर्णन फरमाया है, वह यह है:-

३. "जो जन भगवान् देवात्मा के इस प्रकार के शिक्षा विषयक तत्व-ज्ञान से उपकृत होकर अपने नाना नीच-अनुरागों और नीच-घृणाओं के विनाशकारी अधिकार से मोक्ष और विकासकारी धर्म व सात्विक-भावों की प्राप्ति के लिए आकांक्षी बन सकते हों," वह अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं |

प्रश्न:- ऐसी आकांक्षा तो देवताओं की आकांक्षा है !

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा तो देवता पैदा करने के लिए ही आये हैं | मनुष्य नीच-रागों और नीच-घृणाओं के कारण ही नारकीय बना हुआ है | अपहरणकारी होकर औरों के सम्बन्ध में हानिकारक बन जाता है | इसके विपरीत यह आकांक्षा कैसी महा सुन्दर, जिस से परिचालित होकर एक एक अधिकारी मनुष्य यह चाहे कि मैं दूसरों के लिए हानिकारक न बनूँ और न रहूँ | जिस हृदय से यह पद निकले थे, वह हृदय कितना सुन्दर था, जब उन्होंने यह गीत गाया था:-

"पाप का बोध मैं पाऊँ, न पर हानि कभी चाहूँ;
मैं हितकर जीव बन जाऊं, यही हो कामना मेरी |"

प्रश्न:- यह तो किसी देवता ने कामना की है !

उत्तर:- भगवान् देवात्मा के देव-प्रभावों से प्रभावित होकर उच्च हृदय से यह कामना निकली है | यह गीत देवसमाज में सैंकड़ों जन गाते रहते हैं | हमारे विद्यालयों में यह तथा इस प्रकार के और कितने ही सुन्दर गीत अक्सर गाये जाते हैं |

प्रश्न:- जो जन इन पदों की सत्यता को जानकर सरल भाव से और सच्चे दिल से यह कामना करते हैं, वह धन्य हैं, बारम्बार धन्य है !

उत्तर:- आपका हृदय भी धन्य है जो आप इस बात की प्रशंसा करते हैं |

प्रश्न:- मैं तो अनेकों घरों में जाता हूँ, सैंकड़ों जनों के संपर्क में आता हूँ | मैं दुकानदारों, नौकरी-पेशा, वकीलों, डाक्टरों, और जजों को मिला हूँ, लेकिन मुझे कोई जन ऐसा न मिला कि जो उक्त प्रकार का गीत गाता हो, और ऐसी कामना करता हो !

उत्तर:- ऐसे जन आपको कहां मिलेंगे, जो यह गीत गाते हों, बल्कि इसके उलट लाखों करोड़ों मनुष्य अपने अपने जीवनों से इस प्रकार का गीत गाते अवश्य मिलेंगे:-

"न पाप का बोध मैं पाऊँ, सदा पर-हानि मैं चाहूँ |"

आप देखें जब दुकानदार दूकान पर बैठता है तो क्या कामना करता है, और उसका आचरण कैसा होता है ? वह औरों को ठग कर ही तृप्ति पाता है | एक एक नौकरी-पेशा रिश्वत के द्वारा दूसरों के पैसे लूटकर तृप्ति पाता है | लाखों और करोड़ों जन यदि चिढ़ते हैं – तो दयानतदार (अर्थात इमानदार) व्यक्ति से | उनके सन्मुख यदि कोई मूर्ख है, तो वह है दयानतदार, पवित्र या परोपकारी जन | जब कोई जन परोपकार के लिए जीवन भेंट करता है, तो पाप-अग्नि से झुलसे हुए हज़ारों मनुष्य ऐसे जन को मूर्ख बता कर अपने अपने पापी हृदयों को ठंडा करते हैं | इर्ष्या के दास जो करोड़ों की संख्या में हैं – वह जलते हैं तो औरों की बेहतरी से, खुश रहते हैं – तो औरों की हानि से | ऐसे संसार में पूर्ण हित-अनुरागी का पैदा होना एक अति-विचित्र घटना नहीं तो और क्या है ? इसलिए ऐसे नीच-रागों और नीच-घृणाओं के प्रेमक, अद्वितीय सत्य और शुभ-अनुरागी देवात्मा के शिष्य बन ही नहीं सकते, अनुरागी शिष्य तो कहां बनना था ? चार प्रकार की नीच-शक्तियों के दास तो भगवान् देवात्मा के दरबार में आकर भी सकुशल नहीं हैं |

प्रश्न:- वह चारों भाव-शक्तियां कौन कौन सी हैं ?

उत्तर:- वह शक्तियां निम्न प्रकार की हैं;

स्वार्थ अनुराग, घमंड अनुराग, स्वेच्छाचारिता अनुराग एवं नीच-घृणा |

प्रश्न:- संसार तो इन नीच-भाव शक्तियों वाले मनुष्यों से भरा पड़ा है !

उत्तर:- जी हां | इसीलिए दुनिया का यह बुरा हाल है, कि मामूली परोपकारी जन के लिए भी ऐसे जनों में वास करना बहुत बड़ी मुसीबत बनी हुई है | ऐसी प्रकृति रखने वाले मनुष्यों में भगवान् देवात्मा ने किस तरह अपना जीवन व्यतीत किया, यह एक अचम्भे में डालने वाली बात है |

प्रश्न:- सत्य है | नीच-अनुरागी और नीच-घृणाकारी जनों में कोई साधारण उच्च बोध रखने वाला जन भी जीवन व्यतीत करना महा कठिन बात मानता है | एक एक मामूली भद्र-जन के हृदय पर भी

कठोर और पापी जनों के वर्ताव का बहुत दुखदाई प्रभाव पड़ता है | सत्य है ऐसे संसार में भगवान् देवात्मा का प्रगट होना विकास-क्रम की एक अति-विचित्र घटना है | परन्तु उन्होंने जिस तरह इस धरती पर जीवन व्यतीत किया, वह तो मेरे जैसा एक मामूली जन भी बहुत अनोखी लीला समझता है !

उत्तर:- प्रकृति ने जब भगवान् देवात्मा को देव-शक्तियां देकर इस धरती पर आविर्भूत किया, तब उनके साथ वह **देव-बल** भी उनको प्रदान किया, जो सब प्रकार के विघ्नों पर विजयी हों | वह तो सारे मनुष्य-जगत पर जय पाने वाले **अजेय देवात्मा** हैं | हम इसीलिए उनके झण्डे को "विजय-पताका" के नाम से स्मरण करते हैं | जो जो जन भगवान् देवात्मा के देव-प्रभावों को अपने हृदय पर अधिकार देंगे, वह पिशाचत्व (अर्थात नरकीय) के जीवन से निकल कर धर्म-जीवन के स्वामी बनते जायेंगे | वही सच्चे हृदय से यह गीत गायेंगे:-

"पाप का बोध मैं पाऊँ, न पर हानि कभी चाहूँ;
मैं हितकर जीव बन जाऊं, यही हो कामना मेरी |"

प्रश्न:- काश ! यह कामना कुल मनुष्य-मात्र के हृदयों की आकांक्षा बन जाये !

उत्तर:- प्रकृति के विकास-क्रम में यह निहित है कि "भगवान् देवात्मा की कृपा से किसी न किसी ज़माने में यह कामना मनुष्य-मात्र की **हार्दिक-आकांक्षा** अवश्य बन जायेगी |

प्रश्न:- ऐसे समय में जीना उन अधिकारी मनुष्यों के लिए जो उस समय पैदा होंगे, बहुत बड़े सौभाग्य का विषय होगा | हम तो हिंसक, दरिन्दे और अपहरणकारी करोड़ों मनुष्य रुपी भेड़ियों से घिरे हुए हैं !

उत्तर:- आपको विश्वास से भर कर रहना चाहिए कि उचित समय के आने पर यह हिंसक, दरिन्दे और अपहरणकारी प्रकृति रखने वाले मनुष्य रुपी भेड़िये इस तरह मिट जायेंगे, जिस तरह हिंसक जानवरों से भरी हुई इस धरती से कितनी ही हिंसक प्रजातियाँ विनाश-क्रम में नष्ट हो गईं | फिर सात्विक-मनुष्य पैदा होते और बढ़ते जायेंगे | तथा धरती पर सच्चा सतयुग होगा |

———

14
अनुरागी शिष्य बनने की योग्यता के कुछ और लक्ष्ण |

००००

प्रश्न:- आपने भगवान् देवात्मा के बताए हुए तीन लक्षणों का तो वर्णन किया है, इस विषय को कुछ और आगे बढ़ाने की कृपा करें |

उत्तर:- भगवान् देवात्मा ने अपनी पवित्र देव-वाणी के द्वारा जिस चौथे लक्ष्ण का वर्णन किया है, वह यह है:-

४. "जो भगवान् देवात्मा के उच्च सेवकों के उच्च-प्रभाव दायक साधनों में योग देने और उनसे उपकृत होने की अभिलाषा रखते हैं," वह अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं |

प्रश्न:- क्या कोई ऐसे अभागे जन भी हो सकते हैं कि जो भगवान् देवात्मा के उच्च-सेवकों के उच्च-प्रभाव् दायक साधनों में योग देने से कतराते हों, और उनके साधनों से लाभ उठाने से जी चुराते हों ?

उत्तर:- जी हां | नीच गतियों और नीच प्रभावों में पड़ कर एक एक जन किन फलों को प्राप्त होता है, उसका ब्यान 'विज्ञान-मूलक तत्व शिक्षा" नामक पुस्तक के पृष्ट ४२ तथा ४३ पर इस तरह दिया हुआ है;

(१) "ऐसा जन किसी उच्च-आत्मा से उच्च-प्रभावों को पाने की योग्यता को खोता जाता है |

(२) उच्च-जीवन की किसी उच्च-शक्ति की महिमा को अनुभव करने की शक्ति को खोता जाता है |

(३) किसी उच्च-आत्मा की संगत या उसके साथ कोई सम्बन्ध स्थापन करने के लिए अपने हृदय में कोई आकर्षण अनुभव नहीं करता, या इससे भी बढ़कर विकर्षण या घृणा अनुभव करता है |

(४) अपने आत्मिक-बल को दिनों दिन् क्षय करता रहता है, और अपने किसी सुख या मोह या हानिकारक अभ्यास या पाप आदि से एक एक बार मुक्त होने की आकांक्षा करके भी उससे बाहर निकलने की कोई शक्ति नहीं रखता और आत्मिक-दृष्टि से दिनों दिन रोगी और दुर्बल बनता जाता है, तथा उनके कारण नाना प्रकार के वृथा दुःख और क्लेश पाता है | तथा अपने आत्मिक-बल को क्षय करते करते एक दिन पूर्णत: नष्ट हो जाता है |"

अब मैं आपका ध्यान उपरोक्त पहली तीन बातों की ओर फेरता हूँ, यह तीनों बातें चौथे लक्ष्ण की पोषकता में हैं | वह नीच-भाव तथा नीच-गतियाँ क्या हुईं कि जो उच्च-जनों की उच्च-शक्तियों के सम्बन्ध में किसी जन को अन्धा न बना दें, उनके लिए नीच-घृणा पैदा न कर दें, और ऐसी शक्तियों से विभूषित जनों को घृणा करने से रोक सकें |

प्रश्न:- यह तो मनुष्यों की बहुत बड़ी दुर्गति है !

उत्तर:- जी हां | नीच-गतियाँ और उच्च-गतियाँ भिन्न भिन्न गतियाँ हैं, उनके फल भी जुदा जुदा हैं | इसलिए प्रकृति के विश्वव्यापी अटल नियमों के अनुसार दो प्रकार की श्रेणियों की विभिन्न गतियाँ एक ही प्रकार के फल पैदा नहीं कर सकतीं | अर्थात प्रेम तथा घृणा की गतियाँ एक ही प्रकार के फल नहीं ला सकतीं | नीच-गतियों का प्रेम उच्च-गतियों के प्रति विकर्षण पैदा कर देगा, और उसी प्रकार उच्च-गतियों का प्रेम नीच-गतियों के प्रति विकर्षण पैदा कर देगा | नीच-जीवनधारी जन यदि आकृष्ट होंगे, तो अपने जैसी प्रकृति रखने वाले जनों के प्रति ही | तथा यदि विकर्षण रखेंगे तो उच्च अर्थात सात्विक-भावों के रखने वाले जनों के प्रति | इसलिए जिस जन के भीतर किसी उच्च जीवनधारी उच्च आत्माओं के प्रभावों से लाभ उठाने की आकांक्षा ही नहीं, वह जन भला देवात्मा की ओर किस तरह आकृष्ट होग़ा ? यदि देवात्मा के उच्च-पदधारी उच्च-सेवकों से किसी ने लाभ नहीं उठाया, तो भगवान् देवात्मा के देव-प्रभावों से वह कब लाभ उठाएगा ?

खाने का भूखा खाना चाहता है और खाना मांगता है | वह यह नहीं पूछता कि अनाज की खेती करने वाला कौन था, और अनाज के व्यापारी कौन थे ? उसे तो केवल खाने से मतलब है, न कि इधर उधर की बातों से | इसी तरह जीवन दायक प्रभावों के आकांक्षी जन उन सब जनों से लाभ उठाने की आकांक्षा रखेंगे कि जो उस तक देव-प्रभाव पहुंचाने की क्षमता रखते हैं | अर्थात आकांक्षी जन देव-प्रभाव दायक मंडल को ढूँढने का प्रयास करेंगे | यदि किसी जन में देव-प्रभावों की भूख ही न हो, जैसा कि नीच-संगती वालों का हाल है, तब ऐसा आत्मा उच्च-संगत की ज़रुरत अनुभव नहीं करेगा |

प्रश्न:- इस प्रकार की सच्चाई की घटनाएँ तो प्रतिदिन होती रहती हैं | प्रत्येक सत्संग के अवसर पर जब उच्च-मण्डल पैदा हो जाता है, तब एक एक पापी जन यह बताने के लिए मजबूर हो जाता है कि हाय ! मैं तो पहले सत्संग में आने से जी चुराता था | मैंने तो फैसला ही कर लिया था कि मैं इनकी संगत में न आऊंगा, मैं कैसा धोखा खाता यदि संगत में न आता | हाय ! मैं अपनी पत्नी और बच्चों को सतसंग में क्यों नहीं लाया ? हाय मैं ख़ुद इच्छुक न होकर अपने साथियों को भी यहां आने से रोकता रहा, इसलिए मेरे मित्र भी संगत में न आ सके |

उत्तर:- जी हां | सत्संग के अवसरों पर प्राय अधिकारी जन अपनी अवस्था को देखते और लगभग ऐसे ही भावों का प्रकाश करते रहते हैं |

प्रश्न:- अपने "आत्म-निरिक्षण" की यह तो बहुत अच्छी अवस्था है | क्या ऐसे जन आगामी काल के लिए ऐसे वतावरण में फिर से आने के इच्छुक रहते हैं ?

उत्तर:- अधिकतर अवस्था में नहीं, कारण यह था कि उनके यह भाव उस उच्च प्रभाव दायक मण्डल की देन थे | ऐसे जन जब फिर घर वपिस आते हैं, तो अपने उन्हीं नीच अनुरागी मित्रों तथा सम्बन्धियों के वतावरण में वास करने के कारण उनकी आत्मिक-अवस्था फिर पहले जैसी ही हो जाती है | अर्थात देव-प्रभाव प्राप्ति की उन की उच्च आकांक्षा ढीली पड़ने लगती है | वह ज़हर ही क्या जो मनुष्य को मदहोश न कर दे ? वह नीच भाव क्या जो किसी की सुध-बुध न मार दे और उच्च-जनों की संगती से उदासीन न कर दे |

प्रश्न:- तब यदि ऐसे जनों के आत्मा के हित लिए संग्राम न किया जा सके, तो वह उच्च-संगत के साथ अपना गहरा सम्बन्ध किस प्रकार रख सकेंगे ?

उत्तर:- कई जन तो लगातार उच्च संगत से सदा के लिए कट जाते हैं | ऐसे जनों को होश में रखने के लिए तथा उन तक उच्च-प्रभाव पहुंचाने का लगातार प्रयास करते रहने के लिए सतसंग के कई अवसर रखे जाते हैं, तथा कई उपाय ग्रहण किये जाते हैं | एक तो उनके पास देवसमाज के पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के द्वारा धर्म-भावों को पहुँचाया जाता है, दूसरे ऐसे उत्सव रखे जाते हैं कि जिनके कारण धर्म-आकांक्षी जन एक स्थान पर एकत्रित हो सकें और अपनी सम्मिलित शुभ-आकांक्षाओं से वहां का वतावरण ऐसा बना दें, कि आये हुए जनों के हृदय देव-प्रभावों से ओत-प्रोत हो जाएँ, और वह सब आत्मिक-बेहोशी की गहरी नींद से जाग जाएँ तथा अपने अमूल्य जीवन की फ़िकर में लग जाएँ | ऐसा एक एक अवसर कई जनों के हृदय के उच्च-भावों को उभार देता है, जिनके कारण वह देर तक अच्छी अवस्था में रहते हैं | कई हिताकांक्षी जन अपनी शुभ-कामनाओं के द्वारा उनकी रक्षा करते रहते हैं | इस बहुत सारे संग्राम के द्वारा वह एक एक धर्माकांक्षी-जन की रक्षा करते हैं | जब तक किसी जन की आंतरिक आंखें उच्च-जनों के सम्बन्ध में खुली न रहेंगी, तब तक उनकी खैर नहीं | जिस वस्तु का किसी जन को दर्शन नहीं होता, उस वस्तु के सम्बन्ध उस जन में कोई आकर्षण भी उत्पन्न नहीं होता | जब कोई जन उच्च-जनों की महिमा का बोध पायेगा, तभी उनको सराहने की कोशिश कर सकता है | ज्योंहि वह उच्च-जनों के सम्बन्ध में बेसुध हो जाएगा, त्योंहि उन की महिमा उसकी आँखों से छुप जायेगी |

प्रश्न:- तब क्या आपका यह तात्पर्य है कि यदि किसी जन को एक बार उच्च-ज्योति मिल जाए, तो यह ज़रूरी नहीं है कि वह उच्च-ज्योति सदा के लिए उसके पास रहे ?

उत्तर:- जी हां | उच्च-जनों की ज्योति उनकी अपनी ज्योति नहीं | साधारण मनुष्यों के भीतर जो भाव-शक्तियां वर्तमान हैं, वह इस ज्योति की शत्रु हैं, इसलिए वह आत्म-अन्धकार तथा गहरी आत्मिक-बेसुधी उत्पन्न करती हैं | यह तो परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की अथाह कृपा और शक्ति है कि वह ऐसी उलटी प्रकृति रखने वाले जनों में उनकी इच्छा से नहीं, किन्तु कई सूरतों में उनकी इच्छा के विरुद्ध अपने देव-प्रभाव पहुंचा देते हैं | देव-ज्योति की यह विशेषता है कि उसके मिलने से आत्मिक-अन्धेरा दूर होता है | तेज की यह विशेषता है कि दुर्बलता, पाप और मिथ्या नष्ट होता है | इसलिए ज्योंहि देव-ज्योति तथा देव-तेज सम्पन **देव-प्रभाव** किसी जन को प्राप्त होने लगते हैं, त्योंहि वह आत्मिक-बेहोशी की अवस्था से निकल कर होश की अवस्था में आंखें खोलता है | अन्धकार की गहरी खाई से निकल कर ज्योति की दुनिया में प्रवेश करता है, तथा अपनी बुरी अवस्था को बुरे रूप में देखता है | रोता चिल्लाता और पछताता है तथा अपने **आत्म-शुद्धि** के साधनों में लग जाता है |

प्रश्न:- ऐसी अच्छी अवस्था को पाकर क्या वह फिर से बेहोश हो सकता है ?

उत्तर:- जी हां | यह तो सारा भाव-शक्तियों का खेल है | ज्योति में अपना मैला तथा कुत्सित रूप नज़र आता है, अँधेरे में नहीं | ज्योति में भय तथा खतरे नज़र आते हैं, अँधेरे में नहीं | ज्योति में लुटा हुआ जीवन नज़र आता है, अँधेरे में नहीं | इसलिए ज्योति की जो लीला है, वह अँधेरे में उत्पन्न नहीं हो सकती | ज्योंहि ज्योति आँखों से गायब हुई, त्योंहि उस की लीला भी बन्द हो गई | किये हुए पाप देव-ज्योति में बुरे लगते हैं, आत्मिक-अन्धकार में नहीं | बाहर की दुनिया में यह यही सच्चाई काम करती है | एक जन शराब में बेसुध हो गया, अपनी मदहोशी में उसने अपनी बहुत प्यारी पत्नी का क़त्ल कर दिया | वह पोलिस के द्वारा गिरफ्तार किया जाकर जेल में डाल दिया गया | दूसरे दिन उसे ज्योंहि होश आई तो पूछने लागा कि मैं कहां हूँ ? सिपाहियों ने कहा कि तुम जेल में हो | उसने पूछा कि मैंने क्या अपराध किया है जो आपने मुझे जेल में डाल दिया ? सिपाहियों ने कहा कि तुमने कल अपनी पत्नी को क़त्ल किया है | वह मुसकुराया और कहने लगा कि मैं तो अपनी पत्नी का बाल-बांका भी नहीं देख सकता | तुम मूर्ख यह कहते हो कि मैंने उसे मार डाला | जब उसे विश्वास हो गया कि उसने सचमुच ही अपनी पत्नी का खून कर दिया, तब वह इतना तड़पा तथा इतना रोया कि उसका दुःख देखा नहीं जाता था | उसने दिवार के साथ ज़ोर से अपना सिर मारा, और बार बार यह कहता कि मुझे मेरी पत्नी की मृत देह के दर्शन कराओ | उक्त उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि 'मनुष्य-आ**त्मा**' की यह दोनों जुदा जुदा अवस्थाएं हैं | नीच-अनुरागों के दासत्व के अधीन जब कोई जन बेहोश हो जाता है, तब फिर वह अपने निकट से निकट के सम्बन्धी (जिसे वह बहुत प्यार करता है तथा जिसके बिना एक पल भी जीना उसके लिए दूभर हो जाता है) उसे भी बेहोशी की इस अवस्था में बड़ी से बड़ी हानि पहुंचाने से बाज नहीं आता

| बेहोशी की अवस्था में जिस प्रिय पत्नी की उसने निर्मम हत्या कर दी, तथा होश में आने पर कातर होकर ज़ोर ज़ोर से रुदन करता रहा, क्या उसके लिए फिर यह सम्भव नहीं था कि पुन: शराब के नशे में उसी प्रकार की पाप-मूलक गतियाँ न करता ? ऐसे दृश्य दुनिया में हर रोज़ देखने को मिलते हैं | यही अवस्था मनुष्य-जगत के आंतरिक-जीवन की हर रोज़ देखी जाती है, अर्थात सारा दिन पाप-कर्म करता है, और सुबह और शाम मन्दिरों में जाकर किसी देवता की मूर्ती के आगे प्रणाम तथा कुछ भेंट चढ़ा देता है, और सारा दिन किये गए पापों से क्षमा मिलने की झूठी तसल्ली में मस्त रहता है, और आत्म-हित आकांक्षियों की एक नहीं सुनता | लेकिन सौभाग्यवश यदि उसे देवात्मा की **आध्यात्मिक-ज्योति** (अर्थात **देव-ज्योति**) मिल जाती है, और नीच-अनुरागों की बेहोशी से वह कुछ क्षण के लिए भी बाहर निकलता है, त्योंहि उसके हृदय पर किये गए पाप-कर्मों तथा अपनी आत्मिक-हानि का थोडा सा बोध जागना आरम्भ होता है – जैसा कि उपरोक्त शराबी को ज्ञान मिला कि नशे की अवस्था में उसने अपनी प्यारी पत्नी की बेरहमी से हत्या कर दी |

जब कोई जन नीच-अनुरागों में मदहोश होता है, तो वह क्या लीला दिखाता है ? अपनी प्रिय पत्नी को यूंही पीटना शुरू कर देता है | पत्नी का रोना पीटना और दुःख से बिलबिलाना उसे दिखाई नहीं देता | परन्तु ज्योंहि उसे देवात्मा की देव-ज्योति मिलती है, और उसका कुछ नशा उतरता है, त्योंहि उसके हृदय पर अपनी पत्नी की बेबसी, लाचारी और बिलबिलाहट का गहरा असर होता है, तथा वह जन धांय मार कर रोने तथा पश्चाताप करने के लिए मजबूर हो जाता है | भरी सभा में अपनी पत्नी के चरणों में सिर रख कर यह घमंडी क्षमा मांगने के लिए विवश हो जाता है, और सचमुच क्षमा मांग कर ही शान्ति पाता है | धर्म-जगत का कैसा अलौकिक दृश्य !

इसी प्रकार एक एक भाई अपने सगे भाई के सम्बन्ध में द्वेष से भर कर उसके अधिकार को छीनना चाहता है | दो भाइयों के दो मकान थे, वह दोनों मकान बड़े भाई के नाम थे | जब आपस में बाँट हुई, तो दोनों मकान बड़े भाई के ही नाम रहे | अब जिस भाई के नाम दोनों मकान रहे, उसकी अपने छोटे भाई के साथ किसी बात को लेकर अनबन हो गई | छोटे भाई के घर का परनाला बड़े भाई के सेहन में गिरता था, उसने अपने भाई को कहा कि परनाला इस तरफ से बन्द कर लो | इस परनाले का और कोई रास्ता न था, इसलिए छोटे भाई ने अपनी विवशता जतलाई | झगड़ा बढ़ गया, तथा बड़े भाई के भीतर, जिसके नाम दोनों मकान थे, द्वेष भाव फूट आया, और उसने कहा कि मैं यह मकान तुम्हारे पास नहीं रहने दूंगा | द्वेष-भाव अन्धा बना देता है, और उसके ज़हर से मनुष्य पागल हो जाता है | अदालात में मुकद्दमा चला जो हाई कोर्ट तक गया, और जिस भाई के नाम दोनों मकान थे, उसके हक़ में डिगरी हो गई | यह डिगरी अन्यायमूलक थी, बाँट में एक मकान छोटे भाई को मिलना था, लेकिन क़ानून की दृष्टि से दोनों मकान बड़े भाई के पास चले गए | ज्योंहि डिगरी बड़े भाई के हक़ में हुई, उसको बड़ी शान्ति मिली | परन्तु डिगरी होने के बाद उसे होश आया कि हाय ! मैं क्या कर बैठा | इस जन को देवसमाज के दो अच्छे सेवक मिलते रहते थे | उन दोनों की मेहनतें यहां तक सफल हुईं कि ज्योंहि डिगरी हुई, त्योंहि उस भाई के हृदय में पश्चाताप की अग्नि जलने लगी | वह कहने लगा कि हाय ! मैंने अंधेर मचाया और अपने भाई की बहुत हानि की | बिरादराना **(Brother-hood)** मुहब्बत को ग़ारत किया, अपने भाई को यूहीं जलील भी किया, और उसका नाहक खर्च भी करवाया | जिस मकान की खातिर उसने ऐसी **पिशाच-लीला** की थी, वह मकान फिर अपने उसी छोटे भाई को दे दिया | इतना त्याग करके भी बड़े भाई का हार्दिक-दुःख दूर न हुआ | वर्षों लगातार अपने द्वारा किये गए इस अन्याय का दृश्य उसके हृदय को व्याकुल करता रहा | कारण यह था कि अब उसे भगवान् देवात्मा की **आध्यात्मिक-ज्योति** (**देव-ज्योति**) मिलने लगी थी | इस पाई हुई अद्वितीय ज्योति में वह अपना मुंह किसी को दिखाने के योग्य नहीं समझता था |

यह दोनों भाई भगवान् देवात्मा के सेवक (शिष्य) न थे | परन्तु हृदय की **योग्य-अवस्था** रखने के कारण उपरोक्त सेवकों की उच्च-संगत से भगवान् देवात्मा की कुच्छ न कुछ देव-ज्योति लाभ कर चुके थे, जिसके कारण ऊपर वर्णित सु-घटना उनके जीवन में घट सकी | जबकि मदहोशी की हालत में वह मुकद्दमा लड़ता रहा, और होश की हालत में आया तो बड़ा भाई ख़ुद तड़पने लगा और जिस मकान की खातिर छोटे भाई से वर्षों लड़ता रहा, उसको उसे वापिस लौटा कर ही शान्ति पाई | होश और

मदहोशी के कैसे जुदा जुदा और विचित्र फल ! इसलिए बार बार यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि हमारी अपनी भाव-शक्तियां तो **आत्म-अन्धकार** उत्पन्न करती हैं, जबकि भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति हमें **आत्मिक-अन्धकार** से बाहर निकाल कर सच्चे अर्थों में **धर्मवान** बनाती है | यदि हम देव-ज्योति को लाभ करने से वंचित हो जायेंगे, तो आत्मिक-अन्धकार में पशुओं का सा जीवन जीने के लिए ही बाध्य होंगे | अपनी पाप-मूलक अवस्था को घृणित रूप में देखने की बजाये हम उस अवस्था के प्रेमक बन जायेंगे, और अपने प्यारे से प्यारे सम्बन्ध को तोड़-फोड़ कर सत्यानाश कर लेंगे | इसलिए वह लक्षण जिसका वर्णन इस लेख में हुआ है, साधारण दृष्टि से देखने के योग्य नहीं है | वह तो असाधारण लक्षण है | मैं इस शिष्य-विषयक लक्षण को फिर से दोहराता हूँ, भगवान् देवात्मा की यह देववणी है:-

"जो जन भगवान् देवात्मा के उच्च-सेवकों के उच्च प्रभाव-दायक साधनों में योग देने और उनसे उपकृत होने की अभिलाषा रखते हों," वह सच्चे धर्मवान बनने के लिए आकांक्षी हो सकते हैं | हम अपनी पड़ताल (जांच) बार बार करें कि कहां तक हमारे भीतर यह अभिलाषा वर्तमान है, और कहां तक बढ़ती जाती है ? किसी कारण से यह अभिलाषा कम या शिथिल तो नहीं हो रही | कहीं ऐसा तो नहीं कि यह किसी दिन पूर्णत: नष्ट तो नहीं हो जायेगी ? **आत्म-हित-अभिलाषा** का नष्ट हो जाना कोई कम नुक्सान नहीं है, यह तो बहुत बड़ी विडम्बना (Tragedy) है | मूर्ख मनुष्य ! यह मत समझे कि उच्च-जीवन रखने वाले उच्च-सेवकों के प्रति घृणा करके और उनके साधनों से लाभ उठाने की बजाये दुश्चिंता करने से कोई जन अपनी रक्षा कर सकेगा | हमारा आत्मा हमें कई बार बहुत धोखा देता है, उस धोखे से हमें बचना चाहिए | धोखा यह होता है कि एक एक मनुष्य इस भ्रम में पड़ जाता है कि मैं तो ठीक ठाक हूँ, यदि मुझे किसी कर्मचारी या सेवक के साधन में लाभ नहीं होता, तो यह उस सेवक या कर्मचारी का दोष है, कि वह मेरी अवस्था के अनुसार साधन नहीं कराते, यह बहुत बड़ा धोखा है | फिर यदि इस भ्रम में पडा हुआ जन यह डींग मारता है कि देखो मैं अमुक अमुक संगत से लाभ उठाता हूँ, तो उसको यह देखने और समझने की आवश्यकता कि क्या वह सचमुच लाभ उठता है, या तुलना करके पहले सेवक या कर्मचारी के सम्बन्ध में किसी नीच-भाव में बढ़ रहा है | मैंने आपको बताया था कि मैंने जब एक लड़के की महिमा गानी शुरू की, तो एक और लड़के ने कहा, कि आप अमुक लड़के को तो देखो, वह कैसा योग्य है | मैंने उस लड़के को बताया कि मैं उस दूसरे लड़के की महिमा गाता हूँ, तो तुम किसी तीसरे लड़के को मेरे सामने पेश कर देते हो | अर्थात तुम किसी की महिमा नहीं गाते, बल्कि अपने **इर्ष्या-भाव** की तृप्ति ही करते हो, और ऐसा करके तुम बहुत धोखे में रहते हो | यह सुनकर वह लड़का चुप हो गया | परन्तु कक्षा के और लड़कों ने मेरी बात को समझ लिया | कई जन इस प्रकार के धोखे अपने आपको देते रहते हैं |

प्रश्न:- इस धोखे से तो मैं भी हैरान हो गया हूँ कि नीच-भाव तथा नीच-शक्तियां क्या क्या रंग और रूप रखती हैं ?

उत्तर:- नीच-जीवन सम्बन्धी नीच-शक्तियां बहु-रंगी हैं, वह कई शक्लें बदलती हैं | किसी ने सत्य ही कहा है कि "लोको, नीच-शक्तियां बुरियां – सबनूं छुरियाँ मार दियां |" अर्थात नीच-शक्तियां बहुत बुरा स्वभाव रखती हैं तथा सबको छुरियां मार मार कर बुरी तरह घायल कर देती हैं |

———

15
अनुरागी और वफादार शिष्यों के कुछ उदाहरण |

००००

प्रश्न:- आपने अनुरागी-शिष्य बनने की योग्यता के सम्बन्ध में चार लक्षणों का वर्णन किया है, इन के अतिरिक्त क्या कोई और लक्षण भी हैं |

उत्तर:- जी हां, अवश्य हैं | इस योग्यता के सम्बन्ध में जिस पांचवें लक्षण का भगवान् देवात्मा ने अपनी देव-वाणी के द्वारा प्रकाश किया है, वह यह है:-

५ "जो जन घमंड या अनुचित अहं-भाव से इतने शून्य हों कि अपनी किसी तुच्छता को अनुभव कर सकते हों, अपनी किसी हीनता व अनुचित क्रिया व अपने किसी पाप व अपराध के सम्बन्ध में अपने बड़ों से उच्च-घृणा सूचक कोई बात व उपदेश सुनकर उनसे फट कर दूर न हो जाते हों, और उनके प्रति घृणा व द्वेष-भाव पोषण न करते हों," वह अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं |

प्रश्न:- यह लक्षण तो बहुत बड़ा महत्व रखता है |

उत्तर:- जी हां | जो घड़ा भरा हुआ हो, उसमे और पानी कहां से आ सकेगा ? जब कोई जन नदी या नाले से पानी पीना चाहता है, तब उसके लिए आवश्यक है कि वह झुके और झुककर पानी पिए | न झुकेगा तो प्यासा रह जाएगा | इसी प्रकार जिस किसी को कहीं से कोई दान पाना है, तो उसे भिखारी की अवस्था ग्रहण करनी होगी तथा प्रार्थी बनाना होगा | आकांक्षी-जन ही प्रार्थी बनेगा | जो अपने आपको ज़रूरतमंद नहीं समझता, वह किसी से मांगेगा क्यों ? इसी प्रकार जो जन अपने आपको ठीक समझता है, वह किसी की पूजा क्यों करेगा ? जिसको यही नहीं पता कि मुझे सबक नहीं आता, वह किसी से पढ़ेगा क्यों ? इन सब सूरतों में अपनी तुच्छता का बोध होना बहुत ज़रूरी है | धर्म-जगत में तो घमंडी का काम ही नहीं | घमंडी को गुरु ग्रहण करने की क्या ज़रुरत है, वह तो अपना गुरु आप बना हुआ है | वह तो पूर्ण रूप से अंधा है | बाक़ी जो जन इतना घमंडी न हो, और अपनी तुच्छता को देख सकता हो, उसके लिए धर्म-मार्ग खुल सकता है | अर्थात धर्म-दान पाने के लिए दीन होना अति आवश्यक है |

प्रश्न:- मनुष्य दीन कब हो या बन सकता है ?

उत्तर:- जब किसी बड़े या उपकारी जन की कोई जन महिमा देखता है, और उस गुणी के गुण की तुलना में अपने आपको तुच्छ देखता और समझता है, तब उस मे दीनता विषयक सुन्दर भाव की जाग्रति हो जाती है | इसलिए श्रद्धावन हृदयों के भीतर सच्ची दीनता का प्रकाश होता है |

प्रश्न:- क्या कोई झूठी दीनता भी होती है ?

उत्तर:- जी हां | जब मनुष्य बिना किसी कारण अपने आपको ऐसे जनों से भी तुच्छ मानता है कि जो जन बहुत घटिया दर्जे के हैं, और एक एक जन बड़े से बड़े पापी को कह देता है कि मैं तो आपसे अधिक पापी हूँ, जबकि वस्तव में वह उस पापी जन से कई गुणा बेहतर होता है, तब जिस दीनता के भाव का वह प्रकाश करता है, वह झूठी दीनता होती है | इस प्रकार की झूठी दीनता रखने और प्रदर्शित करने वाले जन दुनिया में थोड़े नहीं हैं | ऐसे जन तो मिथ्या और कपटता का ही साधन करते हैं | आख़िर एक महा पुरुष ने अपने सम्बन्ध में यह कहा ही था, कि **I am prince of sinners**. अर्थात 'मैं पापियों में शिरोमणि पापी हूँ |" उनका ऐसा कहना मिथ्या दीनता का प्रकाश था |

प्रश्न:- इस लक्ष्ण का दूसरा अंग क्या है ?

उत्तर:- एक अंग है सच्ची दीनता | दूसरा अंग यह है कि वह जन किसी सच्चे हितकर्ता की ताड़-झाड़ सुनकर उससे फट न जावे, और ताड़ने वाले जन के प्रति घृणा तथा द्वेष का अपने हृदय में पोषण न करता हो |

प्रश्न:- क्या यह बहुत बड़ी कड़ी शर्त नहीं है ?

उत्तर:- कोई कड़ी शर्त नहीं, धर्म-जगत के मुसाफिर के लिए यह अति आवश्यक शर्त है | मनुष्य कई प्रकार की त्रुटियाँ रखता है, यदि उसका बहुत बड़ा हितकर्ता दया-भाव से परिचालित होकर अपने किसी उपकृत जन को उसकी किसी त्रुटी के लिए ताड़-झाड़ डाले, और उस ताड़-झाड़ से वह अपने उपकारी से फट जावे, तो फिर ऐसे जन का क्या भला हो सकता है ? धर्म का मार्ग तो उच्च बनने का मार्ग है | उस मार्ग पर चलने वाले जनों को अपनी त्रुटियाँ तो देखनी ही होंगी, और अवश्य देखनी होंगी, उनसे बाहर निकलना होगा, और अवश्य निकलना होगा | त्रुटियों, नीचताओं और गलतियों का प्रेमी और पक्षपाती होकर कोई जन इस धर्म-मार्ग पर आगे चल ही नहीं सकता | यदि उसका कोई हितकर्ता उसके जीवन में दिलचस्पी लेकर उसकी त्रुटियों से उसको सचेत करे, उसकी हीनताओं और नीचताओं का उसे

ज्ञान दे, और अपनी उच्च-घृणा उसके हृदय में संचार करे, तो उसको तो कृतज्ञ होना चाहिए | ऐसे हितकर्ता का मिल जाना धर्म-जगत के मुसाफिर के लिए एक अति महत्त्व-पूर्ण उपहार है |

प्रश्न:- एक एक मनुष्य अपने सच्चे हितकर्ता से फट क्यों जाता है ?

उत्तर:- फट इसलिए जाता है क्योंकि वह अनुचित **अहं-भाव** का दास होता है |

प्रश्न:- क्या ऐसे जन का कोई परित्राण (शुभ और कल्याण) हो सकता है ?

उत्तर:- यदि अपने सच्चे हितकर्ताओं से फट जाने का भाव इतना प्रबल हो कि वह छुई-मुई की न्याईं अपने किसी प्यारे परन्तु अदना-भाव पर चोट खाकर घृणा-भाव से भर जाता हो, और द्वेष के स्तर तक पहुंच जाता हो, तो ऐसे जन का परित्राण तो असम्भव है | **नीच-घृणा-भाव** तो उच्च-भावों को भस्म कर देता है | जिस प्रकार आग पौधों को जला देती है, उसी प्रकार नीच-घृणा-भाव 'सात्विक-भावों' को जला देता है, और उसमे कोई उच्च-भाव उत्पन्न होने की संभावना ही नहीं रहती |

प्रश्न:- ऐसा भी देखा गया है कि कई जन अपने हितकर्ता से फट कर फिर लौट आते हैं | ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर:- ऐसे जन वही हो सकते हैं जिनका घमंड-भाव इतना अधिक बढ़ा हुआ नहीं होता कि वह वापिस लौटने में शर्म महसूस करें | अत: ऐसे जन ही उचित अवसर मिलने पर पुन: भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति पा सकते हैं और उस ज्योति में अपने घमंड-भाव को बुरे रूप में देख भी सकते हैं |

प्रश्न:- क्या घमंडी जनों में श्रद्धा भी होती है ?

उत्तर:- हां, हो सकती है | श्रद्धा-भाव यूं तो घमंड का विरोधी भाव है, किन्तु यदि मनुष्य के हृदय में एक ओर अहं-प्रियता हो और दूसरी ओर श्रद्धा का भाव भी हो, तो इन दोनों भावों में द्वन्द होता रहता है | यदि श्रद्धा का भाव अधिक शक्तिशाली हो, तो वह धीरे धीरे घमंड के भाव को दबा लेता है, यदि घमंड-भाव अधिक बलवान होता है, तो वह श्रद्धा-भाव की हानि करता है | यदि किसी जन के भीतर अटल श्रद्धा हो, तो वह घमंड-भाव की कुछ पेश नहीं जाने देती | यदि ऐसा जन लगातार **देव-प्रभाव** पाता रहे, तो घमंड का सारा ज़हरीला वृक्ष एक दिन जड़ से ही उखड़ कर नष्ट हो जाता है |

प्रश्न:- क्या किसी जन ने देवसमाज में रहकर ऐसे साधन किये हैं, कि जिन के कारण उस ने घमंड-भाव से सच्ची मोक्ष प्राप्त कर ली हो ?

उत्तर:- जी हां ! मेरे सामने इस समय श्रीमान देवत्व सिंह जी की छवि आ रही है, उनके भीतर अटल श्रद्धा वर्तमान थी, उन पर देव-प्रभावों की वास्तविकता खुल चुकी थी, वह देव-प्रभावों को पाने के बहुत बड़े आकांक्षी बन चुके थे | इसलिए इस घमंड भाव को घटाने के सम्बन्ध में उन्होंने सैंकड़ों पत्र देवात्मा की सेवा में लिखे थे | उनके लिए तो हम कह सकते हैं कि वह घमंड-भाव से मोक्ष पाने में बड़ी सीमा तक सफल हो चुके थे |

प्रश्न:- क्या आपको कुछ ऐसे आत्माओं का भी पता है जो भगवान् देवात्मा से कभी और किसी हालत में भी दूर नहीं हो सकते थे ?

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा ने स्वयं अपने मुखारविंद से दो तीन कर्मचारियों के सन्मुख फरमाया था कि श्रीमान अमर सिंह जी और श्रीमान मोहनदेव जी को प्रकृति में हम से कोई नहीं छीन सकता | अर्थात यह दोनों हस्तियाँ भगवान् देवात्मा से कट कर उनके श्रीचरणों से दूर नहीं जा सकती थीं | मुझे तो दोनों के जीवनों का तज़रुबा है, मैंने तो दोनों से बहुत अधिक उपकार पाए हैं | इन दोनों ने मेरे भले के लिए मेरे जीवन में बहुत बड़ी दिलचस्पी ली है | पिछले 15 वर्ष तक तो लगातार मैं श्रीमान भाई अमर सिंह जी के साथ दान मांगने के लिए बम्बई जाता रहा हूँ, मुझे उन्होंने जिस स्नेह के साथ रखा है, वह मेरे जीवन के लिए सदा स्मरणीय कथा रहेगी | मैंने श्रीमान भाई जी के साथ 10 साल तक इकट्ठे रहकर (सिंध में जो देवसमाज पर मुकद्दमें किये गए थे, देवसमाज के हक़ में) जंग की है, मुझे उस समय उनके जीवन के कई उच्च अंगों को देखने और जानने का अवसर मिला है | बड़ी बड़ी मुसीबतों के समय वह मेरे लिए मज़बूत स्तम्भ प्रमाणित हुए हैं | सेवकों में तो वह असाधारण अर्थात बहादुर सेवक थे | झूठ बोलने के पक्के शत्रु थे, दीनता की मूर्ती थे | मेरी तुच्छ दृष्टि में - उनमे घमंड शायद ही होगा |

श्रीमान भाई मोहनदेव जी के सम्बन्ध में मैं पहले बहुत कुछ लिख चुका हूँ, यह दोनों हस्तियाँ प्रत्येक मुसीबत में पर्वत की तरह अटल खड़ी रही हैं | और देवसमाज के इतिहास में **उनका**

जीवन-चरित्र सुनहरे अक्षरों में लिखने के योग्य है | इनके भिन्न कई और जन भी हैं, जो देवात्मा से कटे नहीं, और जिनके सम्बन्ध में आशा है कि आगामी काल में भी वह भगवान् से दूर नहीं जायेंगे |

प्रश्न:- आपने कर्मचारियों का वर्णन किया है, क्या ऐसा कोई सेवक भी आपके सन्मुख है, जो भगवान् देवात्मा के दरबार से रूठ कर दूर नहीं जा सकता था ?

उत्तर:- सेवक-दल में से इस समय दो हस्तियाँ ऐसी मेरे सामने आ रही हैं जो अपनी साक्षी आप थीं | एक थे सरदार श्रीमान सावन सिंह जी, जो कुछ काल हुए गुज़रे हैं | वह ऐसे सेवाकारी सेवक थे जो भगवान् देवात्मा से कभी और किसी प्रकार फट कर दूर नहीं जा सकते थे | उनकी श्रद्धा की सुगंधी से मैं कई बार सरस और धन्य धन्य हो जाता रहा हूँ | उनके देहांत से कुछ मास पहले जब मुझे उनसे मिलने का अवसर मिला, तब मेरा हृदय अपने आप ही उनके श्रद्धावन और वफादार रूप के सन्मुख इतना झुक गया, कि मैंने तत्काल ही उनको झुक कर प्रणाम किया | उनके जीवन का मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव था | वह बड़े सौभाग्यवान थे और प्राय 83 वर्ष की आयु में गुज़रे, और अपने जीवन का यह दृष्टांत स्थापन कर गए, कि भगवान् देवात्मा के श्रद्धावन जन उसे सामने लाकर सदा ही धन्य धन्य और उत्साहित होते रहेंगे |

दूसरे सेवक श्रीमान सरदार हरनाम सिंह जी थे | वह भी कुछ समय हुआ परलोक गमन कर गए हैं | उनके श्रद्धा और विश्वास के भाव भी असाधारण थे | वह 82 वर्ष से अधिक आयु के थे | इतनी लम्बी आयु पाकर उन्हों ने असाधारण उच्च भावों को लाभ किया था | उन उच्च भावों से उनका रूप विशेष बन गया था | वह भगवान् देवात्मा के सच्चे शिष्य थे | अपनी प्रतिज्ञाओं पर वह असाधारण रूप से दृढ़ रहते थे | वह किसी हालत में भी अपने **जीवन-सिद्धांतों** का त्याग नहीं कर सकते थे | अपनी प्रतिज्ञाओं को भंग नहीं कर सकते थे, अपने सद्गुणों तथा आत्म-बल के विचार से वह शेर माने जाते थे | भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में वह जितने दीन, श्रद्धावन और विश्वासी थे – उनके इस रूप का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता | वह भी अपने सुन्दर जीवन की बड़ी भारी सुगंधी छोड़ गए हैं | अत: पाठक-गण उनके जीवन-चरित्र का पाठ करने से उस सुगंधी का स्थान स्थान पर परिचय पाते हैं |

प्रश्न:- ऐसी हस्तियाँ तो निश्चय बहुत सौभाग्यवान तथा साधुवाद की अधिकारी होती हैं |

उत्तर:- जी हां | वह न केवल अपने लिए मुबारिक होती हैं, किन्तु उस नगर, परिवार तथा समाज के लिए भी मुबारिक होती हैं, जिनके साथ उनका सम्बन्ध रहा हो | ऐसी हस्तियाँ तो बहुत प्रेरणादायक होती हैं | ऐसी हस्तित्यों की जन्म-भूमि, माता-पिता, वंशीय तथा पारिवारिक-जन साधुवाद के अधिकारी होते हैं |

प्रश्न:- क्या आपके समाज में ऐसी स्त्रीयां भी हुई हैं, कि जिनके जीवन से ऐसे उच्च-प्रभाव प्रकट होते हों ?

उत्तर:- जी हां | देवसमाज में कौन जन ऐसा होगा, जिसने श्रद्धया डाक्टर कुमारी प्रेमदेवी जी का नाम न सुना हो, वह देवी जबकि केवल 12 या 13 वर्ष की थी, तब उस के हृदय में भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति और देव-तेज ने अपना विचित्र कार्य आरम्भ किया | उस के नन्हें परन्तु सुयोग्य हृदय ने देवात्मा के देवरूप के आंतरिक-दर्शन कर लिए, और उस देवरूप में अपने आध्यात्मिक-जीवन की पूर्ण सामग्री उपलब्ध की | उसने अपनी पढ़ाई जारी रक्खी, परन्तु भगवान् देवात्मा के देवरूप का आकर्षण उसके हृदय से घटने की बजाये बढ़ता रहा | वह अपनी मेडिकल की परीक्षा में प्रथम रही | शादी के लिए उसे बहुत अच्छे परिवार और वर के प्रस्ताव आते रहे, किन्तु यह सब वस्तुएं उसको तुच्छ और हेच नज़र आने लगीं | देवरूप के साथ उसका सम्बन्ध इतना गहरा होता गया, कि कोई अन्य प्रलोभन उसे अपनी ओर आकर्षित ही नहीं कर सका | वह बहुत छोटी अर्थात प्राय: 25 वर्ष की आयु में परलोक गमन कर गई, परन्तु अपने जीवन का ऐसा अति श्रेष्ट तथा उच्च-दृष्टांत इस संसार में छोड़ गई, कि जब तक दुनिया में देवसमाज स्थिर रहेगी, इस देवी का शुभ नाम बड़ी श्रद्धा तथा सन्मान के साथ याद किया जाता रहेगा | उसके हृदय में भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में प्रबल आकर्षण उत्पन्न हो चुका था, ऐसी देवी का जीवन मानवता के लिए निश्चय बहुत मुबारिक है |

प्रश्न:- क्या कोई और अन्य स्त्री भी थी, जो भगवान् देवात्मा से नहीं फटी, और जिसने उनके सम्बन्ध में वफादार रहकर इस संसार से कूच किया ?

उत्तर:- जिस दूसरी महिला के सम्बन्ध में मैं बताने लगा हूँ, वह भी भगवान् देवात्मा के मिशन में एक समर्पित प्रचारिका थीं | उसका नाम श्रीमती धर्म प्यारी जी था, जो एक विधवा थीं | वह अपने भाई श्रीमान पण्डित संत राम जी के माध्यम से भगवान् देवात्मा के श्रीचरणों में आई थीं | वह भी विशेष प्रकार का हृदय रखती थीं, जिस में भगवान् देवात्मा के देवरूप के साथ जोड़ने वाले भाव बहुत प्रबल रूप में वर्तमान थे, तथा देवात्मा से दूर ले जाने वाला कोई नीच भाव नहीं था | देवात्मा के साथ **श्रद्धा-सूत्र** से जुड़कर वह एक अच्छे स्तर की तथा अच्छा काम करने वाली बहादुर महिला बन गई | उन को कई स्थानों पर भेजा गया, कि वहां जाकर समाज के स्कूल खोलें तथा उनको सुन्दर ढंग से चलायें | वह जहां भी भेजी गईं, वहां उन्हों ने संस्थाओं को बेहतर से बेहतर रूप में उन्नत किया | वह जिस उत्साह और वफादारी के साथ अपनी सब शक्तियां भगवान् के कार्य में झोंक देती थीं, उनके कारण इस महिला का विजयी होना आवश्यक हो जाता था | वह देवसमाज फिरोजपुर के लड़कियों के एक बहुत विख्यात हाई स्कूल की प्रबंध-कारिणी बनाई गईं | उन के उच्च जीवन से कई लड़कियों में उच्च-परिवर्तन उत्पन्न होना आरम्भ हुआ | वह तो अपने जीवन के उच्च-प्रभावों से लड़कियों को धर्म-साधनों में लगा देती थीं |

एक बार जब वह अवकाश पर थीं, तो उन्हें पता चला कि उनके प्रिय विद्यालय में इन्फलुएंजा की बीमारी फूट पड़ी है | उन्हो ने तुरंत अपना अवकाश स्थगित कर दिया तथा लड़कियों की सहायता के लिए विद्यालय में लौट आईं | बीमार लड़कियों की सेवा करते करते यह बहादुर स्त्री स्वयं भी उस बीमारी में फंस गईं, तथा इस बहादुर महिला को बचने के लिए भरसक प्रयास किये गए | भगवान् देवात्मा ने स्वयं कुछ सहायकारियों को इनकी सहायता करने के लिए भेजा, और यह भी कहला भेजा कि खर्च की कुछ परवाह न की जाए तथा इनकी जान बचाने का हर सम्भव प्रयास किया जाये | परन्तु शोक ! कि यह देवी उस नामुराद तथा जान लेवा बीमारी से बच न सकीं | अत: इस प्रकार इस देवी ने अपना अमूल्य जीवन विद्यालय की लड़कियों की सेवा करते करते निछावर कर दिया तथा इस देवी का नाम भी देवसमाज के इतिहास में सदा सदा के लिए अमर हो गया |

सारांश यह है कि धर्म-जगत के प्रत्येक मुसाफिर के लिए यह अति आवश्यक है कि वह उच्च-भावों की ऐसी पूंजी रखता हो, कि जिनके कारण वह अपने सतगुरु से कभी और किसी अवस्था में भी फट न सके, और उनके ताड़ने झाड़ने को अपने आत्मिक कल्याण के लिए देवात्मा की विशेष कृपा समझे | भगवान् देवात्मा कभी किसी अस्तित्व को घृणा कर नहीं सकते थे, गुस्सा नहीं कर सकते थे, क्यों कि **वह दूसरों के प्रत्येक शुभ के अनुरागी थे** | वह तो उच्च-घृणा के स्वामी थे, बुराइयों के पक्के शत्रु थे, न कि बुरे अस्तित्वों के | तथा उनको (अर्थात बुराइयों को) नष्ट करने के लिए अपनी उच्च-घृणा का प्रकाश करते थे | अब भगवान् देवात्मा साक्षात रूप में इस दुनिया में वर्तमान नहीं हैं, अत: धर्म-जगत के मुसाफिरों के लिए अति आवश्यक है कि वर्तमान दौर में उपलब्ध उच्च-जीवनधारी धर्म सम्बन्धियों के द्वारा किसी बात पर ताड़े झाड़े जाने पर वह अपने उपकारियों से सम्बन्ध न तोड़ लें, और दूरी न बना लें, अन्यथा धर्म प्राप्ति से वंचित रह जायेंगे | जो अपने हितकारियों से फटने तथा दूर जाने का स्वभाव रखते हैं, निस्संदेह वह बहुत बड़े ख़तरे में हैं | ऐसे जनों को अपने आत्मा की इस झूठी चाल पर संतुष्ट नहीं रहना चाहिये, कि मैं अपने अमुक उपकारी उच्च-धर्म सम्बन्धी से फटता हूँ तो क्या ? वह आखिरकार 'मनुष्य-आत्मा' ही तो है – देवात्मा तो नहीं | क्या ऐसे उच्च-धर्म सम्बन्धियों के अपने भीतर कोई दोष नहीं है ? देखो, क्या मैं अन्य धर्म सम्बन्धियों से जुड़ा हुआ नहीं हूँ ? यदि मैं अमुक धर्म सम्बन्धी से फटा हुआ हूँ, तो उसी का तो दोष है, मेरा नहीं | ऐसा सोचना तथा यह विश्वास करना कि मैं तो पूरी तरह ठीक-ठाक हूँ, दूसरे ही गल्त हैं – गहन आत्म-अन्धकार तथा एक बहुत बड़ा धोखा है | **अपनी भ्रमपूर्ण तथा अधर्म-प्रकृति** को ठीक-ठाक प्रमाणित करने का कु-प्रयास करना एक पथ-भ्रष्ट ढकोसला है | धर्म-जगत के हर मुसाफिर को इस पाप-पूर्ण ढकोसले से बचना चाहिए, तथा अपने आपको बच्चों जैसा सरल बना कर रखना चाहिए, क्योंकि धर्म-जगत में सरलता बहुत काम की वस्तु है |

———

16

देव-प्रभावों के प्रति विचार तथा अनुभव |

०००००

प्रश्न:- अनुरागी-शिष्य बनने की योग्यता के कुछ लक्ष्ण तो आपने बता दिए | कुछ और लक्षणों का भी कृपा करके उल्लेख करें |

उत्तर:- भगवान् देवात्मा ने इस विषय में अपनी अद्वितीय देव-वाणी का इस प्रकार प्रकाश किया है:-

६ "जो जन अपने किसी मिथ्या विश्वास व कु-संस्कार व पाप-मूलक बंधन, अभ्यास व स्वाभाव व रूचि आदि को घृणित रूप में देखने, और अज्ञान-रुपी महा भयानक अन्धता से उद्धार पाने के निमित्त भगवान् देवात्मा के उच्च-घृणा बोध उत्पादक देव-ज्योति और देव-तेज संपन्न देव-प्रभाव लाभ करने के लिए कोई नियमित साधन ग्रहण करते हों," वह जन अनुरागी शिष्य बनने के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं |

प्रश्न:- भगवान् देवात्मा का अपनी देव-ज्योति और देव-तेज का कार्य इस लक्ष्ण में किस विधि से स्पष्ट रूप में प्रगट होता है |

उत्तर:- भगवान देवात्मा ने यह बताने की महा कृपा की है कि जब किसी हृदय तक देव-ज्योति पहुंचेगी, तब उसको अपना मिथ्या विश्वास व कु-संस्कार, व पाप-मूलक बंधन, अभ्यास व स्वभाव व रूचि **घृणित रूप** में दिखने लगेगा | तथा उसके भीतर यह आकांक्षा उत्पन्न होने लगेगी, कि मैं ऐसे पतन-कारी नीच-भावों से अति शिघ्र छुटकारा पा लूं | और देव-तेज का यह लक्ष्ण है कि वह अधिकारी आत्मा के हृदय तक पहुँच कर उसके भीतर **उच्च-घृणा** उत्पन्न कर देगा, जिस उच्च-घृणा को पाकर वह अधिकारी जन अपनी महा भयानक अन्धता और पतनकारी नीच-गतियों से उद्धार पाने के योग्य होता जाएगा |

प्रश्न:- क्या देव-ज्योति और देव-तेज का यह कार्य अधिकारी मनुष्यों को **आत्म-शुद्धि** के साधन में भी लगा देता है ?

उत्तर:- जी हां | भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति का कार्य ही यह है कि हमें हमारी प्रकृत (असल) अवस्था दिखाए, तथा हमें उसका **बोध** प्रदान करे | हमें हमारी **पाप-प्रकृति** घृणित रूप में दिखाए | इस विलक्ष्ण ज्योति के स्वभाव को हमें भूल न जाना चाहिए | जब दो जन इस प्रकार की बातें करते हैं कि मैं तो अपने आपको उनकी देव-ज्योति में ठीक समझता हूँ, और अपने विरुद्ध विचार रखने वाले जन को ग़लत समझता हूँ, तो यह मानना चाहिए कि वह दोनों ही देव-ज्योति के स्वभाव को सही अर्थों में नहीं समझ पाए | हो सकता है कि हमारी अपनी राय ठीक हो, हमारी अपनी रूचि ठीक हो, हमारा स्वभाव भी ठीक हो, हमारे विरुद्ध राय रखने वाले की राय भी ग़लत हो, परन्तु इस मामले में भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति का अनुचित व्यवहार करना ठीक बात नहीं | भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति तो हमें हमारी असल अवस्था दिखाती है | हमारे आत्मा में जो दोष तथा कमियाँ हैं, वह ही दिखाती है | हमारी नीचताओं को दिखाती है, और औरों के सद्गुणों पर विचार करने में लगा देती है | **देव-ज्योति हमें अपनी प्रशंसा तथा औरों की निन्दा करने में नहीं लगाती** | देव-ज्योति तो किसी अधिकारी जन को उसका सच्चा **आत्मिक-रूप** दिखाती है, और अपने निज के पाप-जीवन के सम्बन्ध में उसे सत्य-ज्ञान प्रदान करती है | अधम-रूप को घृणित रूप में दिखाती है, तथा ऐसे रूप से मोक्ष लाभ करने की आकांक्षा उत्पन्न करती है | यह देव-ज्योति का एक पहलू (पक्ष) है, इसलिए जो जन यह दावा करते हैं कि हमें देव-ज्योति मिली है, वह देव-ज्योति के वास्तविक स्वभाव को भगवान् देवात्मा की देव-वाणी में देखने और समझने का प्रयास करें, अपनी बुद्धि से देव-ज्योति के स्वाभव् के बारे अनुमान न लगाएं | जब यह देव-ज्योति किसी के हृदय में प्रवेश और वास करेगी; तब वह अपना यह लक्ष्ण प्रदर्शित करेगी | देव-ज्योति में मनुष्य अपने आपको सब प्रकार से ठीक ठीक नहीं, बल्कि वास्तविक रूप में देखने लगेंगे | **घमंडी** का यह स्वभाव होता है कि वह अपने आपको सदा ठीक ठाक ही देखता है | इस प्रकार की बुरी अवस्था तो **अहं-प्रियता** से उत्पन्न होती है न कि देव-ज्योति से |

प्रश्न:- क्या देव-ज्योति कुछ और भी दिखाती है ?

उत्तर:- जी हां | उसका वर्णन भगवान् देवात्मा ने अपनी देव-वाणी में इस प्रकार किया है:-

७. "जो जन भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति और देव-तेज संपन्न देव-प्रभावों को प्राप्त होकर उनके द्वारा अपने **आत्मिक-विकारों** के सम्बन्ध में घृणा उत्पादक और परिशोध विषयक आवश्यक बोधों के लाभ करने के निमित्त साधन ग्रहण कर सकते हों," वह जन इस मार्ग पर उन्नति के लिए अग्रसर हो सकते हैं |

प्रश्न:- इस देव-वाणी से आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर:- इस देव-वाणी से यह प्रतीत होता है कि देव-ज्योति न केवल वर्तमान **पाप-जीवन** व आत्म-अन्धकार को घृणित रूप में दिखाती है, किन्तु अपने जीवन के उस पक्ष का रूप भी दिखाती है कि जो विकारों से भरा हुआ है | एक जन ने भगवान् देवात्मा के श्री चरणों में आकर बदचलनी छोड़ दी, एक ने बददयानती छोड़ दी, आगे के लिए भी उन पापों से बच गए | परन्तु उन पापों की मैल जो उन्होंने पहले किये हुए थे, और जिनके कारण अपने हृदयों में विकार भर लिए थे, से शुद्धि पाने की भी उनको नितांत आवश्यकता है |

प्रश्न:- यह **आत्म-शुद्धि** कोई जन किस प्रकार लाभ कर सकता है ?

उत्तर:- कोई जन देव-प्रभावों की प्राप्ति से ही आत्म-शुद्धि पा सकता है | भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति का कार्य जब एक एक मनुष्य के हृदय में गहरे रूप से होना आरम्भ होता है, तब पहले के किये हुए पापों की छबि उसके सामने आने लगती है, और उसके हृदय में देव-तेज के मिलने से **उच्च-घृणा** और **उच्च-दुःख** उत्पन्न हो जाता है, और उनके विकारों से सच्ची मोक्ष पाकर ही अधिकारी जन शान्ति पाता है | अब आप देखें कि देव-ज्योति का दूसरा पक्ष यह है कि यह एक एक अधिकारी मनुष्य के हृदय में प्रवेश करके उसको उसकी **आत्मिक-अवस्था का बोध** देती है | इसलिए देव-ज्योति के सम्बन्ध में जब कोई भी बातचीत हो, तब यह कह कर कि भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति में मुझे किसी दूसरे जन के विकार नज़र आते हैं – देवज्योति का अपमान करना है | एक बार एक सभा में एक सेवक ने अपनी हीनताओं का वर्णन किया, कई सम्बन्धों में अपनी कई नीचताओं का उल्लेख भी किया, ऐसा सुन कर एक अन्य सेवक दुःख से भर गया; सभा से उठने के बाद पहले सेवक से कहने लगा, कि आपको औरों के सम्बन्ध में तो पाप नज़र आये, परन्तु मेरे सम्बन्ध में ग़लत जाना तो आपको नज़र ही नहीं आया | उस सेवक ने उत्तर दिया, कि यदि मैं गलत गया हूँ, तो भगवान् की देव-ज्योति में मुझे अपनी गलती नज़र आ जाएगी, परन्तु आपको तो आज के साधन से कोई लाभ हुआ मालूम नहीं होता | आप ने सभा की समाप्ति के साथ अपने आपको ठीक समझा और मुझे गुनाहगार ठहराया | आपको कोई अपनी कमी भी नज़र आई ? भगवान् की देव-ज्योति यह तो नहीं बताती कि अमुक जन ने मुझे दुखी और परेशान किया, और दुःख देने वाला जन हर पक्ष में ग़लत है | भगवान् की देव-ज्योति तो जिस हृदय में प्रवेश करती है, उसको अपनी ही नीच-प्रकृति का बोध देती है | अपने ही विकारों और मलिनताओं का बोध देती है | शेष हमारी जो सुख-दुःख की प्रकृति है, उसकी यह विशेषता है कि हमें उचित दुःख देने वाले जन भी शत्रु नज़र आने लगते हैं, और अनुचित सुख देने वाले जन (चाहे कितने ही बुरे हों) अच्छे तथा मित्र नज़र आने लगते हैं | सुख-दुःख के भावों के कारण ही तो चारों ओर आत्मिक-अन्धकार फैला हुआ है, लेकिन देव-ज्योति तो सुख-दुःख के आधार पर काम नहीं करती | वह तो हमारे हृदय में हित और अहित के बोधों तथा सत्य और असत्य के विवेकों को उत्पन्न करके हमें अपने जीवन में मोक्ष और विकास के साधनों में लगा देती है |

प्रश्न:- क्या देव-ज्योति 'पर' (अर्थात किसी दूसरे) को नहीं दिखाती ?

उत्तर:- देव-ज्योति 'पर' को दिखाती है उसके सम्बन्ध में की गई हानि परिशोध के लिए | 'पर' के सम्बन्ध में हमारा व्यवहार ठीक करने के लिए | देव-ज्योति 'पर' को दिखाती है ताकि हमें 'पर की पीड़ा' नज़र आ सके, तथा 'पर' के सम्बन्ध में सेवाकारी होने का अधिकार दिखाती है | 'पर' के सम्बन्ध में न्याय के उच्च भावों की आवश्यकता दिखाती है, उनके सम्बन्ध में उनकी शारीरिक, मानसिक तथा हार्दिक (अर्थात सात्विक/आध्यात्मिक) सेवाओं की आवश्यकताओं को दिखाती है |

प्रश्न:- भगवान् की देव-वाणी में तो आप ने इन बातों का कोई वर्णन नहीं किया |

उत्तर:- मैं भगवान् देवात्मा की देव-वाणी का वर्णन करता हूँ | भगवान फरमाते हैं:-

८. "जो जन सत्य-धर्म विषयक उच्च सात्विक-भावों की महिमा और उनके सौन्दर्य को देखने और उन्हें अपने जीवन में विकसित करके अपने नाना सम्बन्धों में नाना प्रकार से सेवाकारी बनने के लिए आवश्यक साधन ग्रहण कर सकते हों," वह इस मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं |

प्रश्न:- आपने बहुत बड़ी कृपा की जो मेरे सन्मुख इस कदर उच्च लक्षणों का वर्णन किया| इन लक्षणों में बार बार 'साधन' शब्द का उल्लेख आता है, उससे आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर:- साधन तो 'सिद्धि' लाभ करने का नाम है | साधन करने की विधि प्रत्येक जन के लिए विविध प्रकार की हो सकती हैं | परन्तु उद्देश्य व लक्ष्य एक ही हो सकता है, कि भगवान् देवात्मा के साथ हृदय योग की अवस्था में जाकर उनसे देव-ज्योति और देव-तेज का दान पा सके | यदि गीत गाने से, किसी उपदेश का पाठ करने से, किसी विचार के द्वारा, किसी की उच्च संगत करने से भगवान् का अमूल्य दान मिल सकता हो तो अच्छा है, क्योंकि मनुष्य भिन्न भिन्न तरह का स्वभाव रखते हैं | इसलिए वह भिन्न भिन्न विधियों से ही साधन करना चाहेंगे | जिनको गाना नहीं आता, और न गाने में उनकी रूचि है, वह पाठ में मग्न हो सकते हैं | जिनका पाठ में चित एकाग्र नहीं होता, वह गाने या किसी अन्य विधि के द्वारा साधन कर सकते हैं | जो विचारशील मनुष्य हो, वह विचार के द्वारा साधन कर सकते हैं | जो ऐसे जन हों कि देव-ज्योति को पाकर भी जब तक उस दान को लिख नहीं लेते, वह ऐसा किये बिना तृप्त नहीं होते- ऐसे जन भगवान् देवात्मा के देवरूप तथा उनकी शिक्षा के सम्बन्ध में लेख लिख कर अपना हित-साधन कर सकते हैं |

मैं अपने जीवन में लम्बे काल तक शिक्षक रहा हूँ, तथा मुझे विद्यार्थियों का बहुत अनुभव हो चुका है | कई विद्यार्थी तो ऊंचा ऊंचा पढ़ कर, कई मूक रहकर, कई बन्द कमरों में, कुछ बागों और खेतों में जाकर, कुछ एकांत में रहकर, कुछ औरों के साथ मिलकर, कुछ बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़कर, कुछ ऐसे हैं जो फुट-नोट पढ़कर, और कई ऐसे हैं जो अपनी स्मरण-शक्ति के द्वारा तथा कुछ कक्षा में बहुत ध्यान-पूर्वक सुन कर, और कई ऐसे जन हैं कि जो जब तक स्वयं न पढ़ लें तब तक उनको अपना पाठ याद ही नहीं होता | यह विविध स्वभाव रखने वाले विद्यार्थी एक ही सांचे में ढाले नहीं जा सकते, और न ही एक लाठी से हांके जा सकते हैं | तात्पर्य यह है कि उनका लक्ष्य परीक्षा में सफलता पाना है | कुछ विद्यार्थियों का यह भ्रम होता है कि अमुक विद्यार्थी अधिक नहीं पढ़ता, और अमुक लड़का पढ़ने के लिए सुबह जल्दी क्यों नहीं जागता ? मुझे कितने ही लड़कों के स्वभाव का अनुभव है कि जो भिन्न भिन्न प्रकृतियाँ रखने के कारण भिन्न भिन्न अवस्थाओं का प्रकाश करते हैं | हमारे स्कूल में एक लड़की थी, जो बहुत देर से नींद त्यागती थी, तथा मुश्किल से एक या दो घंटे पढ़ती थी, जबकि बाकी लड़कियां तो पढ़ने में रात-दिन लगी रहती थीं | परिणाम आने पर क्या देखा कि उक्त लड़की सब लड़कियों में प्रथम रही |

मेरे कालेज में एक लड़का ऐसा भी था जो रात्री में शिघ्र सो जाता था, और प्रात: देर से जागता था | हम में से कई जन रात को देर से सोते तथा प्रात: जल्दी जाग जाते थे | लेकिन जब यूनिवर्सिटी का परिणाम निकलता था, तो वही लड़का प्रथम रहता था | वह लड़का बाद में मैजिस्ट्रेट हो गया था, तथा मैं उसकी कचहरी में वकील का कार्य करता था | जब हम दोनों अपने उस विद्यार्थी-काल को याद करते, तो वह हंस कर बताता था कि उसके माता-पिता उसके आलस्य के कारण उस पर संदेह करते थे | परन्तु परीक्षा का परिणाम देख कर वह आश्चर्यचकित हो जाते थे | वह एक दिन फिर बताने लगा, दोस्त ! इसमें मेरा कोई दोष तो नहीं था कि मुझे अच्छी योग्यता मिली थी, और मुझे एक एक पाठ और लड़कों की तुलना में शिघ्र याद हो जाता था |

प्रश्न:- क्या कोई ऐसे मूर्ख जन भी हैं, जो एक एक मनुष्य की योग्यता और उसके स्वभाव का कोई ध्यान नहीं रखते, और सब को एक ही लाठी से हांकते हैं, और सबको एक ही कसौटी से जांचना चाहते हैं ?

उत्तर:- जी हां | एक बार एक लड़के ने मुझ से शिकायत की कि मेरे पिता जी मुझे बहुत तंग करते हैं, मुझे नींद बहुत प्यारी है, और वह मुझे ज़बरदस्ती जगाते हैं और कहते हैं, कि उठ कर पढ़ाई करो | मैं उनको रो रो कर प्रार्थना करता हूँ कि मेरी पढ़ाई के बारे में मेरे अध्यापक से जाकर पूछो कि मेरी पढ़ाई

कैसी चल रही है ? मैं पढ़ाई का जो काम एक घंटे में पूरा कर लेता हूँ, वही काम दूसरे लड़के छै छै घंटों में नहीं कर पाते | इसलिए आप मेरे पिता जी को यह बात समझाओ |

प्रश्न:- ऐसा क्यों होता है ?

उत्तर:- यह इसलिए कि मनुष्य **अहं-प्रियता** का दास होता है, वह अपने स्वाभाव तथा तजरुबे के आधार पर अपने आपको कसौटी बना लेता है | इसलिए उसी कसौटी के आधार पर वह दूसरों को जांचना और हांकना चाहता है | जो जन उसकी इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता, उस से वह घृणा करना आरम्भ कर देता है | आपने देखा होगा कि एक एक जन दूसरे जन को इसलिए घृणा करता है क्यों कि वह उसकी तरह पगड़ी नहीं बांधता, उसकी तरह फैशन के कपड़े नहीं पहनता, उसके रस्मो-रिवाज़ के अनुसार नहीं चलता, उसके जैसे विश्वास तथा रुचियाँ नहीं रखता | उसके जैसी इच्छा नहीं रखता | **अहं-प्रियता** ने मनुष्य की बहुत हानि की है, उसको महा अन्यायकारी बना दिया है, अपने जीवन की चिन्ता करने की बजाये यह अहं-प्रियता का दास औरों को कोसने में लगा रहता है, और अपनी महिमा गाने तथा औरों की निन्दा करने में ही स्वाभाविक-सुख अनुभव करता है |

प्रश्न:- यह तो मनुष्य की बहुत खौफनाक तथा अधम अवस्था है |

उत्तर:- जी हां | धर्म-जगत में भी ऐसा मनुष्य प्राय: अधर्म की ही गतियाँ करता है |

प्रश्न:- क्या धर्म-जगत में भी भिन्न भिन्न प्रकृतियों का भिन्न भिन्न प्रकार का प्रकाश है ?

उत्तर:- जी हां | श्रीमान भाई मोहनदेव जी दो महीने की संगत से अपना सारा जीवन भगवान देवात्मा के मिशन में भेंट करने के लिए तैयार हो गए, और दूसरा जन वर्षों की संगत और साधनों के बाद भी ऐसा करने के लिए तैयार नहीं होता | यह सब तो योग्यता का जादू है | सब मनुष्यों में एक प्रकार की योग्यता नहीं होती | दो जुड़वां बच्चों में भी एक प्रकार की योग्यता नहीं होती, एक एक सेवक भगवान् देवात्मा की शिक्षा की कुछ पंक्तियाँ पढ़ कर जिस ज्योति से ज्योतिर्मान हो जाता है, उस ज्योति को कई और जन वर्षों साधन करने से भी पा नहीं सकते | हर एक जन पण्डित हरनारायण अग्निहोत्री जी नहीं बन सकता, भगवान् देवात्मा का दर्शन (Philosophy) तो सबके लिए है, परन्तु उनके सन्मुख जो तत्व प्रकाशित हुए थे, वह कई सेवकों के सन्मुख वर्षों तक भी नहीं खुल सके | वह तो भगवान् देवात्मा रचित एक एक पुस्तक को पढ़ कर जिस आलोकमय जगत में पहुँच जाते थे, और जिस उच्च कोटि के लेख लिखते थे, और जिस उच्च स्तर के साधन कराते थे, वह हरेक आत्मा नहीं करा सकता था | तात्पर्य यह है कि हम सबको देखना चाहिए कि क्या हमें सचमुच **देव-प्रभाव** मिलते हैं ? विधियों के मतभेद के कारण किसी भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए | एक एक विषय में भगवान् देवात्मा के साथ जुड़ने के लिए विशेष हृदय के लिए **देव-स्तोत्र** का गान ही काफी है, और वह देव-स्तोत्र का गान कर के ही मग्न हो जाता है; और भगवान् देवात्मा के श्री चरणों तक पहुँच जाता है | एक एक विशेष हृदय को भगवान् देवात्मा की **देव-वाणी** का पाठ असाधारण अवस्था में पहुंचा देता है | सब सेवकों को एक प्रकार का पाठ भी लाभदायक न होगा, एक एक जन को भगवान् देवात्मा की जो विशेष पुस्तक उत्साहित कर देती है, उसको वही पुस्तक पढ़नी चाहिए | देखना यह है कि मेरे हृदय को क्या कुछ उत्साहित करता है, और भगवान् देवात्मा के साथ जोड़ने में क्या कुछ सहायक बनता है ? प्रत्येक देवसमाजी को अपने साधनों में **देव-प्रभाव** पाने की आवश्यकता है, वह जिस विधि से भी उसे मिल जाएँ, उस विधि से अपने आपको वंचित नहीं करना चाहिए |

प्रश्न:- तब क्या आपका यह तात्पर्य है कि जीवन में उच्च लाभ प्राप्त करने के लिए देव-प्रभाव बहुत अद्वितीय वस्तु हैं ?

उत्तर:- जी हां | जब किसी जन में देव-प्रभाव वास करते हैं, तब वह उसके हृदय से **आत्म-अन्धकार** को दूर करना आरम्भ करते हैं | और तब वह उसकी अपनी **नीच-गतियों** का घृणित-रूप उसके सन्मुख प्रगट करना शुरू करते हैं | कई बार उसके पहले विकारों को भी घृणित-रूप में दिखा देते हैं | उसको उच्च और सात्विक-भावों की महिमा भी दिखाते हैं | और यह सब कुछ दिखाने के अनन्तर उसको पाप-जीवन से मोक्ष देने तथा विकारों से शुद्धि लाभ करने के कार्य में लगा देते हैं | और सात्विक-भावों के उत्पन्न तथा विकसित करने के कार्य में भी लगा देते हैं | हमें जिस बात का अधिक अध्ययन करना चाहिए, वह यह है कि क्या हम लोग **पाप-जीवन** से बाहर निकल रहे हैं, और उस से भी ऊपर किसी उच्च-कार्य में

गहरे रूप से लग कर प्रसन्नता और तृप्ति अनुभव करने की अवस्था में पहुँच गए हैं, या नहीं ? सदा स्मरण रखना चाहिए कि किसी के भीतर जो भाव होगा, वह अपना वही कार्य करके दिखाएगा | .....
यदि 'उच्च-भाव' **शक्ति** के रूप में वर्तमान है, तो वह एक दो धक्के लगा कर (अर्थात एक या दो बार प्रेरणा देकर) ही बन्द नहीं हो जाता, बल्कि लगातार प्रेरित करता रहता है | वह तन, मन तथा धन का त्याग करवाता है तथा औरों के भले के काम में लगा देता है | ऐसे जनों को औरों के भले के लिए कुछ न कुछ नया तथा हितकर काम करने वाला बना देता है | ऐसे मनुष्यों को अंग्रेज़ी में Creative (अर्थात सृजनशील) कहते हैं | विश्व में करोड़ों लोगों में ऐसे जन बहुत कम होते हैं, जिन्हें हम उँगलियों पर गिन सकते हैं |

इस धोखे से हमें बाहर निकल आना चाहिए कि देखो जी ! मैं अमुक उपकार का कार्य करता हूँ | देखना यह है कि उपकार-सम्बन्धी वह कार्य क्या हमारे जीवनों का स्वभाव तथा अंग बन गया है ? क्या वह हमारा परिचालिक-भाव बन गया है, और क्या वह हमारे जीवनों से प्रतिदिन कुछ न कुछ भलाई का काम करवा देता है ? यदि हमारा जीवन केवल लकीर का फकीर है, और कुछ नया काम हमारे जीवन से नहीं हो रहा, तो हमें संतुष्ट नहीं रहना चाहिए | जिस तरह धन का अनुराग अपने प्रेमी को चौबीस घंटे इसी चिन्ता में रखता है कि और धन लाओ, चाहे कोई ढंग अपनाना पड़े | उसी तरह एक एक **उच्च-भाव** एक एक अधिकारी जन को अपनी तृप्ति में ही चौबीस घंटे लगाए रखता है |

यदि हमारी नीच-अनुरागों से सत्य-मोक्ष न हुई हो, और न हमारे जीवन में परोपकार का कोई उच्च-भाव उत्पन्न हुआ हो, तो हमें इस बात से संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए कि हम तो विधि-पूर्वक धर्म का साधन करते हैं |

प्रश्न:- क्या भगवान् देवात्मा की देव-ज्योति '**उनका परम हितकर देवरूप और उनकी सत्य शिक्षा की विशेषता**' भी दिखाती है ?

उत्तर:- अवश्य | यह पहलू भी प्रत्येक मनुष्य की निज की योग्यता पर निर्भर करता है | कई योग्य जन तो भगवान् देवात्मा के देवरूप के एक व दूसरे अंग का थोड़े दिनों में ही दर्शन करने के योग्य हो जाते हैं, किन्तु कई सारी आयु टक्करें मार कर भी उस स्तर तक नहीं पहुँच पाते | कई तो देवात्मा की सत्य-शिक्षा पर, कई उनके अद्वितीय-कार्य पर, और कई भगवान देवात्मा के किसी न किसी देव-भाव की सुन्दरता पर मोहित हो जाते हैं | वह जन बहुत सौभाग्वान हैं कि जो एक तरफ तो भगवान् देवात्मा के देवरूप के किसी देव-भाव का दर्शन लाभ कर सकें, उनकी विज्ञान-मूलक सत्य-धर्म-शिक्षा पर मोहित हो सकें, और दूसरी तरफ अपने निज के सम्बन्ध में सत्य मोक्ष और विकास के **जीवन्त साधनों** में लग सकें | इस प्रकार के धर्म-मूलक उच्च परिवर्तन के लिए हम सबको गहराई से आत्म-हित का आकांक्षी बनना चाहिए | तब ही भगवान देवात्मा के श्रीचरणों में आना किसी सीमा तक हमारे लिए सफल और सार्थक हो सकेगा |

(नोट: पाठक-गण भगवान् देवात्मा के देवरूप के सम्बन्ध में उनका जीवन-चरित्र "**मुझ में देव-जीवन का विकास**" तथा "**देवात्मा का परिचय**" पढ़ कर इस विषय में और बहुत ज्ञान तथा बोध लाभ कर सकते हैं |)

(पुस्तक पूर्ण हुई)